स स्पंन्द निरसौः (१)

Peco

NOTE BOOK

KGT

Name ४ मावउपमार.

Class ______ Section ______

School/College ______

Subject ______

Bhavuphar from
Page 197.

सर्व = کل स्वात्मस्वरूपम = اپنا آتما سروپ مکر मकुरमनगर = نگر آئینہ ... वत्

اپنے स्वस्वरूपात् = اپنے روپ سے स्वतन्त्रा = سوتنتر स्वच्छात्म = نرمل ... स्वभित्तौ

कलयति = دیکھاتا ... धरस्री तः । शिवान्ते = ...

सदा = ہمیشہ यः = جو हृग्देवी = ... मन्त्रवीर्यं = ...

सतत समुदिता = ...

शब्दराश्यात्मपूर्णा = ... स्फुरन्ता = ...

... अनन्त स्फूर्ति = ... जयति = ...

जगति = جگت میں सा = ... शङ्करी = شنکری

स्पन्दशक्तिः = سپند شکتی

स्पन्दामृते = ... चर्वितेऽपि = ...

... स्पंदसंदर्भतो = ... मनाक = ...

पूर्णा = ... तत चर्वणा ... भोग = ...

उद्योग = ... एष = یہی मय = ...

प्रकाशत : ... [illegible]

1 सम्यक् = [illegible]। सूत्रसम्बन्धं = [illegible] परिगतिं = [illegible]

तत्त्वे = [illegible] परां = [illegible] परस्मिन् = [illegible]

तीक्ष्णां = [illegible] युक्तिकथाम् = [illegible] उपाय घटनां = [illegible]

स्पष्टार्थसद्व्याकृतिम = [illegible] } [illegible]

[illegible] ज्ञातुं = [illegible] वाञ्छय = [illegible] चिद् = [illegible]

शिव उपनिषदं = [illegible] श्री स्पन्द शास्त्रस्य = [illegible]

तत् वृत्तिं = [illegible] धियः [illegible]

निधत्त साधियः = [illegible] स्पन्दाभिधं प्राभृतं = [illegible]

इह = [illegible] हि = [illegible] विश्व जिघृक्षा = [illegible]

पर = [illegible] परमशिव = [illegible] आवेश = [illegible]

[illegible] उन्मीलित = [illegible] महिमा = [illegible]

2 स्वप्नोपलब्धोपदेशः = سپن میں ملا اپدیش   श्री

श्रीमान् वसुगुप्ताचार्यो = شریمان وسوگپتا چاریہ نے

महादेवपर्वतात् = مہادیو پربت سے   भगवतादिष्टैश्चैव = بھگوان کی آگیا سے

महाशिलातल = مہا شلا یعنی اس کے   अतिरहस्यानि

उल्लिखितान्य = [illegible]   = بہت رہسیہ پورن

शिवसूत्राणि = شو سوتر   [illegible] दृष्ट्वा = [illegible]

प्रसन्न = پرسن   गम्भीर = گمبھیر   एकपञ्चाशता = 51

श्लोकैः = شلوکوں سے   आगम अनुभव उपपत्ता = شاستر - انوبھو - پرمان

ऐकीकारं = اکٹھا کر کے   प्रदर्शयन् = دکھلانا

संगृहीतवान् = سنگرہ کیا

तत्र = وہاں   पञ्चविंशत्या = 25 شلوکوں سے   स्वरूपस्पन्दः = سروپ سپند

सप्तभि = 7 شلوکوں سے   सहजविद्योदय स्पन्दः = [illegible]

एकोनविंशत्या = 19 شلوکوں سے   विभूतिस्पन्दः उक्तः = [illegible] دکھلایا ہے

इति = اس طرح   त्रिनिष्यन्दमिदं = [illegible]   स्पन्दशास्त्रं = سپند شاستر

इति तत्र = وہاں   प्रथमनिष्यन्दे = پہلے [illegible]   स्तुतिपूर्वं = ستتی [illegible]

प्रकरणार्थः = پرکرن کا ارتھ   श्लोकेनोपक्षिप्तः = اس ایک شلوک میں رکھا

2/ ततः = اسکے بعد चतुर्भिः श्लोकैः = چار شلوکوں سے सोपपत्तिकं = برہان سمیت

स्पन्दतत्त्वं = سپند تتو व्यवस्थापितम् = قائم کیا

ततः = اسکے بعد श्लोकाभ्यां = دو شلوکوں سے साभिज्ञानं = پہچان کے ساتھ

तत्प्राप्तौ = اسکی پراپتی میں उपाय उक्तः = اپائے بتایا گیا

श्लोकेन = شلوک سے उपायविप्रतिपत्तिः = اپائے کے بارے میں [illegible]

निरस्ता = دور کیا گیا श्लोकेनोपाय = ایک شلوک سے

एवोपेय = اپائے ہی اپیے प्राप्य = حاصل کرنے کے قابل

= [illegible] पुनरस्य = اسکا پھر

कथनेन = کہنے سے उपोद्बलितः = مضبوط کیا گیا

ततः = اسکے بعد एकेन = ایک شلوک سے तत उपाय लभ्यं = اس اپائے سے حاصل ہونے والا

यादृगुपेयस्य = جیسا اپیے کا स्वरूपं = سروپ ततः = ...

उपदर्शितम् = دکھایا گیا ततः = اسکے بعद ततत्त्ववष्टम्भात् = اس تتو کی پکڑ سے

संसाराभावः = سنسار کا نہ ہونا श्लोकेनोक्तः = شلوک سے

उक्तः = کہا पूर्वेण = پہلے شلوک سے प्रभाव व्यादिमत

= [illegible] =

व्युदस्ता = [illegible] तत = [illegible]
वैलक्षण्यं स्पन्दतत्त्व [illegible]

उक्तं = [illegible]

श्लोकेन = شلوکہ तत् उल्लासि = [illegible] तस्य

कायिस्य – [illegible]
क्षयित्वेऽपि [illegible] مگر तत् = [illegible]

क्षयमित्याख्यातम् = [illegible] एतदेव श्लोकाभ्याम = [illegible]

उपपाद्यते = [illegible] प्रभाववाद = [illegible]

एव उन्मूलित: = [illegible] तत: = [illegible]
सकेन

सुप्रबुद्धस्य = [illegible] सदैव = [illegible]

तत प्राप्ति: = [illegible] प्रबुद्धस्य तु = [illegible]

पूर्वापर कोट्या = [illegible] इति = [illegible]

प्रावेदितम् = [illegible] एकेन = [illegible]

सुप्रबुद्धस्य = [illegible] प्रतीत = [illegible]

विषयविभाग = [illegible] उक्त: = [illegible]

२) ततोऽन्येन = اس کے بعد دوسرے سے   सुप्रबुद्धस्य = سوپربدھ کو
आवरणाभावे = آورن کے ابھاو میں   युक्तिरुपक्षिप्ता
= دلیل پیش کی گئی ہے

श्लोकेन = شلوک سے   सुप्रबुद्धस्य = سوپربدھ کی
स्थगितस्वरूप = ڈھکی ہوئی سروپ والا   उक्तः = کہا ہے

तत एकेन = اس کے بعد ایک سے   सुप्रबुद्धतालाभाय =
سوپربدھتا کے لابھ کے لیے

सततम् = ہمیشہ   उद्भ्रान्त = [illegible]
इति उक्तं = ایسا کہا ہے
श्लोकेन = ایک شلوک سے   व्यवहारास्था एव
= [illegible]
काचित् = کوئی   इतर = دوسری

सकल वृत्ति क्षय-रूपा = [illegible]   उद्योगस्य विषय
= [illegible]

इत्यावेदितम् = یہ بتایا گیا ہے   ततः आदि = [illegible]
प्राप्त प्रबोधेन = [illegible]   सुप्रबुद्धतायै
= سوپربدھتا کے لیے
योग्युचितं = یوگی کے لائق   सौषुप्तम
= [illegible]
आवरणा = [illegible]

विस्तरेण = [illegible] प्रजागरितव्यमित्युक्तं
[illegible]

श्लोकत्रयेण = [illegible]

इति "यस्योन्मेष" [illegible] → [illegible]

"प्रबुद्धः स्यादनावृत्त" [illegible] इत्यन्तस्य तात्पर्यम् = [illegible]

अथ ग्रन्थार्थो व्याख्यायते :- [illegible]

यस्योन्मेषनिमेषाभ्यां
जगतः प्रलयोदयौ ।
तं शक्तिचक्रविभव-
प्रभवं शंकरं स्तुमः ॥१॥

3/ "शम्" → उपशान्त = تھم گیا   अपशाप उपताप = سب ستاپ ([illegible])

[illegible] परमानन्दअद्वयमय = یو اَتھ آنند

स्वचैतन्य स्फार = رنہ چیتن چھ سا سفار

प्रत्यभिज्ञापन = اُس سفار کی پہچان کرنی

स्वरूपम = رنہ سروپ [illegible]   अनुग्रह = انوگرہ

करोति = انوگرہ چھ کران   या = उ   तम् = اُس شوک

इमम् = [illegible]   स्वस्वभावे = رنہ سوبھاو   प्रकरे = اُسی سنکر کی

स्तुमस्ते = [illegible]

→ विश्व उत्कर्षित्वेन = [illegible]   परामृशन्तः = پرامرش کرتے ہیں

तत = [illegible]   कल्पत = [illegible]

कल्पित = [illegible]   प्रमातृपद = پرماتر پد

निमज्जनेन [illegible] ~~समाविश्य सर्वा~~ समाविशामः = سماویش کرتے ہیں - اندر جاتے ہیں - (یعنی شیو میں جاتے ہیں) - جہاں [illegible]

*- The use of plural is meant, here to convey the idea of identity with regard to all those who are worthy of divine (9) grace & who deserve an affectionate glance of kindness.

3// तत समावेश एव = [illegible] हि = کیونکہ

जीवन्मुक्तिफल [illegible] इह प्रकरण उपदेश्य: = اس پرکرن میں ہی اپدیش ہے -

*. तुभः = تم کو → बहुवचनम = plural ہے [illegible] अनुग्रह दृष्टिक

कटाक्षित = [illegible] → अशेष = [illegible] = अनुग्राह्य [illegible]

अभेद = [illegible] प्रथनाय = [illegible] ([illegible]) [illegible]

तम् इति → अपनेन = [illegible] यत = جو

अस्य = [illegible] ([illegible]) निसामान्य विमर्श = [illegible] — [illegible]

स्वनतिम् = [illegible]

तत = اُس प्रथयति = [illegible]

यस्य इति = [illegible] अधीन = [illegible]

इह = [illegible] परमेश्वरः = [illegible] प्रकाशात्मा = [illegible]

महादेवः = [illegible] शब्दराशि परमार्थ पूर्णाहन्ता

[illegible] = परामर्शात्मक

[illegible]

सारत्वात् = [illegible] ([illegible])

3/ सदैव = ہمیشہ   अानन्दघन स्फुरत्तात्मकः = آنندگھن یعنی [illegible]

उभय = دونوں (پرکاش اور ومرش)   विसर्ग : (:)
(اوپر نیچے - (یعنی پہلے اور پیچھے))   अराशि =
یعنی سب سے اوپر

पराशक्त्यात्मकः یعنی جو پراشکتی روپ   पूर्णस्वातन्त्र्य स्वरूप =

یعنی جو کہ پرکاش روپ پرانند سروپ ہے ۔

तत एव = اسی سے ہی   चित्स्वाभाव्याद =

چت سوبھاؤ سے

अप्रचलस्यापि = نہ ہلنے والا اگرچہ

श्रीभगवतः = شری بھگوان کی   स्वातन्त्र्यशक्ति =

جو پرم سوتنتر شکتی ہے

अविभागमप्याप्य = نہ الگ ہو کر

آدی - یعنی [illegible]   पञ्चविध सर्ग संहारादि = پانچ قسم کی سرشٹی - سنہار - آدی

परम्परां = ایک پر ایک   दर्पण नगर वत्

آئینہ میں نگر کی طرح

स्वभित्तावेव = اپنی ہی [illegible]

भावयुत्या [illegible]   अनधिकाम् अपि

अधिकाम इव / [illegible] زیادہ [illegible]

दर्शयन्ती = دکھلاتی ہے [illegible]

[illegible]   یعنی وہ [illegible] زیادہ [illegible]

3/

یہی سپند اور یہی کچھ تھوڑی چلنا

किंचित् = کچھ चलतात्मक = تھوڑی سی धात्वर्थ

- دٹ کا جو ارتھ ہے = अनुगमात

स्पन्द = اِس سے اوسکو سپند کہتے ہیں इत्य अभिहिता

کہا ہے - (اس واسطے شکتی کا نام سپند پڑا ہے)

तेन = اُسی سے भगवान् = بھگوان सदा = ہمیشہ

स्पन्दतत्त्व = ہی سپند [illegible] सततवो = ہی [illegible]

अतत्तु अस्पन्दः =

न तु = نہیں تو یہ سپند رہت ہے [illegible]

ہے

(اید وادی)

यत आहुः = جو کہتے ہیں "अस्पन्द परम तत्त्वम्"

केचित = کچھ پرم تت اچل ہے - نسپند - یا نرودھ

एवं हि = ایسا ہی → اگر مانا جائے تو

शान्तस्वरूपत्वात = سروپ شانت ہے (ہر) ईश्वरमे वैतत भवेत् - ایشور میں ہو

اسکو - ایسا स्फुरत्तासार स्पन्द = سپند سپھرتا ساری ہے शक्तिमय = یہی شکتی

शंकरात्मक = شنکر روپ ہے स्वस्वभाव = اس کا سوبھاو

प्रतिपादनाय = [illegible] اس کا [illegible] चः = اور इदं शास्त्रं = یہ شاستر

3/ समुचित = پورا ہونا स्पन्दाभिधाने = سپند نام [illegible] کا [illegible] महासागराभि = [illegible] (دسوگنا [illegible])

निबद्धम् = باندھا ہوا

ایسا एतच्च = یہ بھی व्यक्तीभविष्यति = آگے اچھی طرح ظاہر ہو جائے گی

ایسا साचेश्वरा = وہی स्पन्दशक्ति = سپند شکتی

اپنے اندر لیا ہوا गर्भीकृत = اپنے اندر لیا ہوا अनन्त = بے حد

सर्गसंहार = سرشٹی اور سنگھار ہی एकघन = ایک ہی

अहन्ता = اپنا चमत्कार = ہی چمتکار روپ

आनन्दरूपा = آنند روپ ہی ہے

निषिद्धा = سب کچھ शुद्धाशुद्ध = شدھ اور اشدھ روپ

रूपा

प्रमातृमेय = پرماتا اور پرمیہ روپ संकोच = [illegible]

विकास = بڑھاؤ आभासन = [illegible]

सततत्त्वा = ہی حقیقت

सर्वोपनिषद् = سب اپنشد उपास्या = [illegible]

She is the ultimate goal of the teachings of all upnishads.

Simultaneously

4/ युगपत इव = [illegible] उन्मेष = [illegible]
निमेषमयी = [illegible]

तथा हि = [illegible] शिवादे क्षित्यन्तस्य [illegible]

अशेषस्य [illegible]
तत्त्वग्रामस्य = [illegible] प्राक्सृष्टस्य = [illegible]

[illegible] संहृतिरूपा = [illegible] - या [illegible] निमेष भूः
[illegible] = [illegible]

पसौ इव = [illegible] उद्विषयद् [illegible]

दशाप्रपेक्षया = [illegible] सृष्टिरूपा = [illegible]

उन्मेषभूमि = [illegible]

तथा = [illegible] विश्व निमेष भूः = [illegible]

चितघन = [illegible] उन्मेषसारा = [illegible]

[illegible] चितघनता निमज्जन [illegible]

भूमि = [illegible] अपि च विश्व उन्मेष रूपा = [illegible]

यत् आगम: = [illegible]

4/

श्रीमान्महेश्वरो = پرمشو   हि = نشچے

स्वतन्त्र्य शक्त्या = اپنی سوتنتر شکتی سے   शिव-मन्त्र महेश्वर-मन्त्रेश्वर

विज्ञानकल - प्रलयाकला - सकलान्तं =

شو - منتر مہیشور - منتریشور - وگیان کل - پرلیاکل - سکل تک

प्रमातृ भूमिकां = [illegible]

तत् तत् भूमिकां च = اُس اُس پرماتر بھومکا کو بھی [illegible]

गृह्णानः = اُس کو گرہن کرتا ہے

पूर्व पूर्व रूपां = آگے آگے کے پرماتر

मिलीभूततया = [illegible] ملنے سے

स्थितामपि = ٹھہری بھی   अन्तः = اندر

स्वरूप अवच्छादन = [illegible] سروپ کا   क्रीडया   [illegible]

[illegible]   निमेषयन = نمیش میں لا کر

एव उन्मेषयति = اُس کو ہی اُنمیش میں لاتا ہے

उत्तरोत्तर = [illegible]

रूपताम् = اس روپتا کو

4/

प्रवरोह क्रमेण = نیچے کی ترتیب سے

= نمیش میں لائے ہوئے

प्रारोह क्रमेण = اوپر جانے کی ترتیب سے ; उत्तरोत्तर रूपता = آگے آگے جانے کی حالت کو

निमेषयन्नेव = نمیش میں لاتے ہوئے ہی

ज्ञानयोगिनाम = گیان یوگیوں کو ; उन्मेषयति = دکھاوے میں لاتا ہے

पूर्व पूर्व रूपतामत = آگے آگے ; एव = ہی حالت سے

उत्तरम उत्तरम = آگے آگے ; पूर्वत्र पूर्वत्र = پہلے پہلے والے

सकोचात्मता = جو سنکوچ کی حالت ہے ; जाग्रत = جاگرت ہی

विकसितत्वेन = اس وکاس سے (پرکاش اُنمیش) اس طرح ہو جاتا ہے ; प्राभासयति = چمکتا ہے

पूर्वं पूर्वं तु = پہلے پہلے کا रूपं = جو نکلتا ہے

यथा उत्तरम् = جیسے آگے آگے ; विकासितो = جو پرکاش کی حالت

निमज्जयन् = اس نیچے ڈبا دیتے ; संकुचितत्वेन = سنکوچ کی حالت سے

दर्शयति = دکھاتا ہے

4/ एवं च = اور پھر   सर्वं = سب کچھ

सर्वमयमेव = سب کچھ یہی ہے   प्रथयति = پھیلاتا ہے

۱۷/ केवलं = صرف   तत् = وہ   प्रवभासित = ظاہر ہونے والا ہے

संकोचमात्र = سکڑنا ہے   = زمین کا نشہ ہے

इयं = یہ   भेदप्रति = بھید کی پرتیتی ہے   पत्तारिव

यत् उद्दलन = توڑنے کا عمل ہے   इ हत्यं = یوں

उपदेष्टा = اپدیشک   इति = ایسا کہنے والا   प्रस्तो   तावत् इतत्

नीलसुखाद्य = نیل سکھ آدی   सुख = آنند   آنند بھاو

प्राभास = ان کا جو آبھاس ہے

उन्मेषमय प्रापि च = جو اُنمیش میں ہوتی ہے   संवित = سموت

گر प्रमात्र = جو پرماتا ہے   सकात्मकता स्वरूप = اپنے ساتھ ایک ہی ہونا

निमिरूप = ... وہ جو ہے   प्रवभात = ظاہر ہوتا ہے

४/ चर = [illegible] पीताद्यः = [illegible] आभास = [illegible]

उपसंहाररूप = [illegible] च इति = [illegible]

स्वसंवेदन = [illegible] - [illegible]

सिद्धाम = [illegible] एमां = [illegible]

युगपत एव = [illegible] उन्मेष निमेष = उभयरूपां
[illegible]

भगवतीं = [illegible] प्रतिभां

विचिन्तु = [illegible] महादेवैः = [illegible]

[illegible] संसार विच्छेदाय = [illegible]

युगपत एव = [illegible] उन्मेषनिमेषाभ्याम = [illegible]

इति = [illegible] पंद = [illegible]

निजवृत्तौ = [illegible] भट्टश्री कल्लटेन [illegible] = [illegible]

"संकल्पमात्रेण" = [illegible]

5/

इत्य = یعنی ، प्रविभक्तमेव = الگ الگ ہی

इच्छाप्राप्तिरूपतया = ارادہ کی صورت میں

व्याख्यायि = بیان کیا

संग्रहकृतापि = ... author نے بھی

एकचिन्ताप्रसक्तस्य यत: स्यादपरोदय:
उन्मेष: स तु विज्ञेय: स्वयं तमुपलक्षयेत् ॥"

इत्यत्र = یعنی اس ، प्रारब्धाचिन्ता = شروع کی ہوئی سوچ

... संहारं विना - ... ختم کئے بغیر

ایک پरस्वरूप उदय: = دوسری صورت کا ظہور

= ... इत्यभिधास्यते = ... کہا جائے گا

प्रवृत्ताचिन्ता ... = ... संहारं विना = اس کو ختم کئے بغیر

परस्वरूपोदया अभावात् = دوسری صورت کا ظہور ... نہ ہونے کی وجہ سے

5/ एतत् च तत्रैव वितनिष्यामः = یہ بات بھی وہیں پر پھیلائیں گے

इत्य अत्र अपि = اس میں بھی उदय: = ابھرنا प्रलय परमार्थ इति = پرلے حقیقت ہے اس کو سمجھتے ہیں

स्पष्टमेव = صاف طور سے वक्ष्यते = آگے بتلایا جائیگا

- "

इत्यत्रापि = اس میں بھی क्षोभप्रलयात्मा = کھلبلی کے پرلے روپ والا

निमेष: = بند ہونا परपद उन्मेषरूप = یعنی پرم پد کا کھلنا ہے

इति अपि निरूपयिष्यते = یہ بھی آگے ثابت کیا جائیگا तद् एवम् = اس طرح

= یوں ہی एक एव = یہ ایک ہی उभयरूपा = دونوں روپ والی

प्रतीति = پہچان

कदाचिद् = کبھی کسی وقت उन्मेषप्रधानतया = کھلنے کی پردھانتا سے

व्यवह्रियते = برتی جاتی ہے کدا چِدْ कदाचिद् निमेषप्रधानतया = کبھی بند ہونے کی پردھانتا سے برتی جاتی ہے

ततश्च = اس واسطے यस्य संवित्त्यां = جس کے سمجھنے میں

स्वरूपनिमेषात्मा = اپنے روپ کا بند ہونا (یعنی اپنے روپ کا کھلنا)

कार्योन्मेषप्रधाना = کارج کا کھلنا پردھان ہے — یعنی اس کا ...

5/

यः प्राक् = جو پہلے تھا ... प्रतीजगतो = یہی جگت ہے کا پیدائش گاہ

→ विश्वस्य = وشو → → شو → शिवादे धरणयन्तस्य = شو سے زمین تک

उदयः = اودے → ہو جاتا ہے अभेदसारता = جو ابھید سار تھی

going into background ← निमज्जन = ڈوبانا اس کا सतत्त्वो اس طرح ڈوب گئی

नानावैचित्र्यशाली یہ نانا پرکار کی وچترتا سے معمور ہوئی

भेदरूपः सर्गः = یہ بھید روپ سرشٹی بن گئی

اندر کا انمیش

स्वरूपोन्मेषात्मकश्च = سروپ انمیش ہے

बाह्यता निमेष = اس وقت باہر کا نمیش ہوا

प्रधानतया प्रतीति وہ پردھانتا سے سمجھی اس وقت ہے

जगतः प्रलयः रूपभेदमयता = اس وقت جگت جو بھید پردھان ہے یہی اس کا پرلیہ ہے

विचित्रभेदरूपता = اس وقت ابھید سے ... یہی اودے ہے

↓

संहार इति प्रलयोऽप्य उदयरूप = وہ پرلیہ بھید سے جو تھی اس کا سمجھنا ہوا

इति = پیدا ہوتی ہے اور | प्रलयऽप्युदयरूप = پرلیہ اُدے روپ ہے

उदयोऽपि च प्रलयरूप = اُدے پرلیہ روپ ہے

इति व्याख्येयम् = یہ واکھیا کرنا چاہیے

वस्तुतस्तु न किंचित्
उदेति व्ययते वा = دراصل نہ کچھ اُدے ہوتا ہے نہ کچھ پرلیہ کو حاصل ہوتا ہے

केवलं स्पन्द शक्तिरेव

भगवत्य क्रमापि = صرف یہی سپند شکتی پھُرتی ہے

= کرم رہت ہی ہے

तथा तथा आभासरूपतया = اسی طرح ہی آبھاس روپ سے

स्फुरन्त्युदेतीव = پھُرتی ہوئی اُدے میں ہی آتی ہے اور

व्ययत इव च = [illegible] ہو جاتی ہے

इति दर्शयिष्यामः = یہ ہم آگے دکھائیں گے

- स्थिति-विलय-अनुग्रहाणां = [illegible]

_विपिाषु = [illegible] | प्रलय उदय रूपत्वात् = پرلیہ اُدے روپ ہونے سے [illegible]

अन आधिक्यमिति = [illegible]

प्रलयोदया स्यामेव = پرلیہ اور اُدے [illegible]

पञ्चविधं = 5 پرکار

पारमेश्वरं कृत्यं = [illegible] | संगृहीतम् = [illegible]

* مہارتھ میں سرشٹی کرم والا ہی، پہلی میں سرشٹی شکتی سے سمہار تک انت تک

دیوی دیوتا 12 2 6 { ہر والی میں (22) سرشٹی شکتی سے سمہار تک انت تک
پہلا " " " " " " " "

निर्णीतं यैव = [illegible] کیا ہے

प्राय = [illegible]

मयैव = میں نے ہی

प्रथमसूत्रमात्रविवरणे = [illegible]

स्पन्दसंदोहे = [illegible]

ननु = [illegible]

श्रीमन्महार्थदृष्ट्या = [illegible]

सृष्ट्यादि देवताभिरेव = سرشٹی - آدی دیوتاؤں سے ہی

विचित्रा जगतः = [illegible]

प्रलयोदया: = [illegible]

संपाद्यन्ते = [illegible]

तत् कथं इतत् उक्तं "यस्य......" = [illegible]

इत्य आशङ्क्याह तां = [illegible]

"ते शक्तिचक्रविभव प्रभवम् इति. "

शक्तिनां = شکتی → सृष्टि

रक्तादि = رکت وغیرہ (شکتی) मरीचि

देवीनां चक्रं = دیویوں کا چکر

دلالی / اناکھیو — طرف / سکہار — ہونا / سمجھی — واقعوں / سمجھی

द्वादशात्मना = بارہ طرح (بارہ گنی)

समूहः तस्य = سمود

यः = उ. विभव: =

उद्योग = واقعوں اवभासन = ہونا

چرنا — चर्वणा = سمجھنا / विलापन = دلالی

क्रीडाडम्बरः =

तस्य = جو اس کا प्रभवं हेतुम् = کارن

एता हि देव्यः = یہ دیویاں श्रीमत् मन्थानभैरवं =

चक्रीश्वरमालिङ्ग्य = گلے لگا کر

सर्वदैव = ہمیشہ

जगत् सर्ग संहारादि =

क्रीडां = کھیل کو संपादयन्ती = کرتی ہیں

इत्य् आम्नायः = یہ شاستر ہے

अथ च = اور بھی कस्मात् = کس لیے परमेश्वरस्य = پرمیشور کا

=

=

=

ہی جواب ہے = کہ یہ ہر ایک شمار ہوتی ہے / کا جیسی شکتی
اسیا زیں بات کا یعنی ہر ایک کا جواب ہے۔
مقرر کا ہماں ہوتی ہے

شکتی مقرر =
(یعنی شکتی مقرر ہے جس وقت کا سمیا شکتی ہوتی ہے) ؛- کہ شکتی مقرر ہے

यावत = جب تک   हि = یقینی کر   किंचित = کچھ

विश्वं = دنیا   समवाति = بن جاتا ہے

तत्प्रकाशमानत्वेन = ہر چیز کا ہر وقتی باسنا ہے - اُسی کا پرکاش ہے

प्रकाशमयत्वात = باسنی ہے کہ پرکاش ہے - اُسی کے روشن پرکاش ہونے سے - اسی پرکاش سے اس کو کریں -

" .... پرمان

स्वामिनश्च = سوامی - ہر ایک   आत्मसंस्थस्य = آتم میں ٹھہرا ہوا
جس طرح آپ آپ میں ٹھہرا ہو

भावजातस्य = پدارتھ جات

भासनम् = اسنا جو باسنا ہوتا ہے   अस्त्येव = ہے

न विना = نہ بغیر - سبھی کو بغیر   तस्माद = اس واسطے

इच्छामेषः = خواہش یہ ہی ہوتی ہے   प्रवर्तते = / اسی سب کچھ پر دوڑ میں لاتا ہے -

b/

इतिः श्रुत्या विपश्चित् = پنڈت - گیانی   निश्चितनीया = پورا یقین کر لی ہے کو اس سے

پرتیک   परमेश्वरस्यान्तः = پرمیشور کے اندر   प्रकाशैकात्म्येन = اسکے پرکاش کے ساتھ ایک ہوا ہو کر

प्रकाशमाने स्थिते = پرکاش میں اسی کے پر ہے

(بتلایا ہے) सत् शक्तिचक्र इति उच्यते

اس سے = ہے - شکتی چکر (دائرہ)

یہ شکتی چکر یا سرکل ہے۔ کیونکہ یہ اس کا پرکاش کے ساتھ ایک ہے -

उच्यते = کہی گئی   यतः = جس سے   परमेश्वरस्य = پرمیشور کو

प्रागमेण्व = سامنے دیں   अनन्त = بے حد   शक्तित्वम् = شکتی کو والا

प्रोच्यते = دکھلائی دیتا ہے

لہذا   तस्य शक्तिचक्रस्य = اس شکتی چکر کا   आभास परमार्थस्य = یہ آبھاس ہے پرکاش میں ہی پرمارتھ میں ہے

→ विश्वस्य = دنیا کی   यो विभवः = جو وہ شکتی ہے

وہ ہے   परस्पर संयोजनवियोजना = آپس میں جوڑنا اور اکھٹا اکٹھا کرنا

वैचित्र्यम् + = اسی جو دکھلاتا ہے

अनन्त प्रकारे = اس کے بے حد پرکار سے سوشوبھ

b/

तस्य اُسکا = اُسی کا پرکرم प्रभवे ⇒ कारणे یعنی کارن

स एव हि भगवान् = یہ آپ ہی شو ہے

= وہی بھگوان ہے کرم

विज्ञानदेहात्मका = جتھا وگیان دیہہ سوشکتیوں کو

स्वात्मैकात्म्येन = آپنے ساتھ ایکی رنگ میں

स्थितान् = ٹھہرے ہوئے ، विश्वान् आभासन्

مگر یہ جو آبھاس ہو رہی -

अन्योन्यं = ایک دوسرے کے ساتھ - آپس میں

नानावैचित्र्येण संयोजयन् = ناناوچتراسے ملاتا

वियोजयंश्च = اور الگ الگ کرتا

وشو विश्व उदय प्रलय हेतुः = وشو کے اُدے اور پرلے کا کارن

ततः उक्तं श्रीकल्लटभट्टेन

= کلٹ بھٹ نے بھی کہا ہے

विज्ञानदेहात्मकस्य शक्तिचक्रैश्वर्यस्य उत्पत्ति हेतुत्वम्

(شو ہی یہ شکتی چکر کا الوپ جو سکتی چکر کا مالک وگیان دیہہ ہے)

7/ इति एतत् = اس طرح   वृत्त्यक्षराणाम् = [illegible]

उपत्र = [illegible]   व्याख्यात = [illegible]

द्वयेऽपि — in both these explanations

[illegible] (margin)

एवं तद्रूपम् = [illegible] to appropriateness

अपि च = [illegible]

third interpretation ←

एतत्कार्योऽस्य = [illegible]   जगत्कृत्स्नं [illegible]

इत्य आगम दृष्ट्या = [illegible]

" तस्मात् शब्दार्थ चिन्तासु न सा अवस्था न या शिवाः "

= [illegible] =

" "

तत् = [illegible]   खेचर्ये = [illegible]   ऊर्ध्वमार्गस्थे [illegible]

व्योम = [illegible]   वामेश्वर्याः = [illegible]

गोचरम् = [illegible]

इति रहस्य नीत्या = [illegible]   वामेश्वरी - खेचरी - गोचरी

दिक्चरी - भूचरी - रूपस्य [illegible] - [illegible]

मयैव = [illegible]   स्पन्दसन्दोहे - [illegible]   सम्यक् निरूपितस्य - [illegible]

Pt. ji
Course from 10th of gaun

10/6/67

(28)

These are ever ready to hide their real nature to him whose understanding is dull

7/ अप्रबुद्धधियस्त्वेते स्वस्थितिस्थगनोद्यताः

لیکن جو لوگ مدہوش ہیں یہ ان کی اپنی سوکھناؤ کو ڈھکنے کو تیار رہتے ہیں ۔ سیدا

with these explanations explained

इति अत्रापि = یہاں بھی   निरोधयमानस्य इतत =

نرودھ کئے جا رہے

द्वयाख्या = دو دو یا کھیاں
व्याख्याते = دو دو یا کھیاں

دونوں سے دو یا کھیاں =

च शक्तिचक्र = سکتی چکر
प्रपञ्चभूतस्य च

" यतः करणवर्गोऽयं " = جس سے یہ اندر یا ورگ ہیں

مثال — " جہاں سے یہ اندریہ ورگ نکلتا ہے "

" तदाक्रम्य बलं मन्त्रा ..... "

وہ اس کا زور لے کر ہی منتر بنتے ہیں ۔

इति स्थित्योद्ग्रामात्मनः =

इति नित्यमन्त्रात्मनः :   the eternal Mantra

शब्दराशिसमुत्थस्य शक्तिवर्गस्य .....

According to the group of powers emanating from group of respective sounds'

7

→ It stands for the nature of these deities

इति नीत्या = اس نیتی سے ब्राह्मयादि देवता स्वभावस्यैव इवम् प्रादि

= برہمی سری آدی - دیوتا سوبھاؤ آدی رکھ (سنکھیا)

अनन्त प्रकारस्यापि = بے حد پرکار ہونے کی

मयैव = میں نے ہی स्पन्दसन्दोह سپند سندوہ میں

वितत्य = وستار کر निर्णीतस्य = نرنئے کیا ہوا

शक्तिचक्रस्य = اس شکتی چکر کا यो विभवो = جو وبھو ہے

→ माहात्म्यं = مہاتمیہ یعنی [illegible] तत्र = اس پر

स प्रभवतीति = ہے سمرتھ स प्रभवं → سوتنتر ہے

اس کا پربھاؤ ← سوتنتر

स्वतन्त्रं = سوتنتر न तु पशुवत्परतन्त्रम्

= پشو کی طرح پرتنتر نہیں

शक्ति चक्रस्य = شکتی چکر کا रश्मि पुञ्जस्य = رشمی پنج کا

यो विभवः = جو وبھو अन्तर्मुखो = جو اندر مکھ ہے

ततः प्रभव = اسی سے ہے پربھو وکاس: विकासः

उदयो = اُدے

→ अभिव्यक्ति = پرکٹ यस्य = جس کا

इति बहुव्रीहिणा = اس بہو برہی [illegible] سے

[illegible]

[illegible]

7/ प्रसरमुखत् = [illegible] तत् स्वरूप विसालनात्
[illegible]

[illegible] प्रोत्तेन = [illegible] परमेश्वर स्वरूप प्रत्यभिज्ञानं
[illegible]

भवते = [illegible] इत्यर्थः = [illegible]

Another inter-pretation किंच यस्य = [illegible] चिदानन्दघनस्यात्मन
= [illegible]

उन्मेषनिमेषाभ्याम = [illegible] →

स्वस्वरूप उन्मीलन निमीलनाभ्यां [illegible]

" यदन्तस्तद्बहिः " [illegible]

इति युक्त्या = [illegible] जगतः = [illegible] →

शरीररूपस्य = [illegible]

तदनुषङ्गेण = [illegible]

बाह्यस्यापि विश्वस्य = [illegible] प्रलयोदयौ = [illegible]

→ यथासंख्यं = [illegible] मज्जनोन्मज्जने, = [illegible]

भवतस्तं [illegible] 'तं शक्तिचक्रविभवस्य "

[illegible]

[illegible] परसंविद्देवाता = [illegible] स्फारस्य = [illegible]

प्रभवं = [illegible] [illegible] भक्तिभाजाम = [illegible]

इतत् स्वरुप प्रकाशके = [illegible]

प्रांकरं स्तुमः = [illegible]

तथा = [illegible] यस्य स्वात्मनः = [illegible]

संबन्धिनो = [illegible] बाहिर्मुखता = باہرمکھتا
प्रसर [illegible]

रुपात् = [illegible]

उन्मेषात् जगत = [illegible] उदयो = [illegible]

अन्तरमुखतात् रुपात् च = [illegible] اندرمکھتا [illegible] निमेषात्प्रलसं [illegible]

विश्वसर्गादिकार्यु = [illegible]

उन्मेषादि = [illegible]

-स्वरुप संविद्देवी

महात्म्यस्य = [illegible]

हेतु प्रांकरं = [illegible]

स्तुम = [illegible]

8/ इति यथा संभवमपि = جیسا بھی ممکن ہے ۔ योज्यम् = ملانا چاہیے

→ देहाद्या विष्टोऽपि = دیہہ وغیرہ میں آویش ہوا بھی ہے

परमेश्वरः = اگر پرمیشور

करणोन्मीलननिमीलनाभ्यां = اندریوں کے کھلنے - بند ہونے سے

रूप आदि पञ्चकम् = روپ - [illegible]

यस्य जगतः सर्गसंहार करोति = جگت کا سرگ سنہار کرتا

यदुक्तं रहस्य तत्त्व विदाः = - جیسا کہ رہسیہ تتو کو جاننے والوں نے کہا ہے

तत एव = اسی لئے ۔ व्यवहारेऽपि = ویوہار میں بھی ۔ प्रभु = پرماتما ۔ देहादि = دیہہ وغیرہ میں

आविशन् = اندر جا کر ۔ मानतम् इव = جیسے ۔ अन्तः = اندر

اندر اور باہر جو بھی ہے | अर्थौघम = گھٹ پٹ وغیرہ ۔ इच्छया = اپنی اچھا سے

= باہر دکھاتا ہے ۔ भासयेद् = باہر = बहि

- یعنی جو اندر ہے وہ باہر میں اسے بھاسن دیتا ہے

एवंविध ग्रन्थ परिग्रहायापि = ایسے بڑے گرنتھ کو ...

" यस्य स्वातन्त्र्य शक्त्या " جس کی سوتنتر شکتی سے

8/ has not used this phrase — instead this phrase has been used

[illegible] त्यक्त्वा

इति = [illegible] तद = [illegible] , यस्योन्मेषनिमेषाभ्याम्

"[illegible]"

[illegible] न्यरुपि = [illegible] गुरुणा = گرو نے

[illegible] शंकरस्तुति = شنکر کی ستتی [illegible] →

समावेशरूपा = سماویش روپ [illegible] प्राप्यत्वेन = [illegible]

अभिधेया = [illegible] शक्तिचक्र विभवात् = شکتی چکر [illegible]

प्रभावो = [illegible] यस्य = جس کے इति बहुव्रीहि = [illegible]

शक्तिचक्रविकास: = شکتی چکر کا [illegible]

तत्प्राप्तताव = [illegible] उपाय उक्तः = اُپائے بتایا -

शक्तिचक्रविभवस्य = [illegible]

परसंविद्वतास्फार = [illegible]

भक्तिभाजां = [illegible] प्रभवे = [illegible]

→ प्रकाशकामिति = [illegible]

तत्पुरुषेण → [illegible] =

फलम उक्तम् = [illegible] By this the ultimate fruit is hinted at.

8/

यत् वक्ष्यति = جو کہے گا

← ततश्चक्रेश्वरो भवेत = اس سے چکریشور ہو

Subject-matter of the book — इति = یعنی अभिधेय = [illegible] (Subject-matter) उपाय = [illegible] ([illegible])

the means — यानी इति अभिधेय उपेय = [illegible] उपाय उपेयभाव → संबन्धः

इत्यं = یعنی अभिधेय = [illegible] उपाय = [illegible]

संबन्ध = [illegible] प्रयोजन = [illegible]

अन्यनेनैव = [illegible] सूत्रेण = [illegible]

सूत्रितानि →

[illegible] }

Hence the connection of the Subject-matter of this book and the means (upaya) is that of the end & the means. Thus the same Sutra briefly gives the subject-matter, the means, the connection of the two and the fruit of the study of this science.

8/
17.6.67

سمٹو کا پر ماتما ہے

ननु = ہے پرنتو ۔ इवम् भूतम = اس طرح کا ۔ शंकरस्वरूप = شنکر سروپ کاسوچک
- सत्तायां

किं प्रमाणां = ہے اس بارے میں پرمان کیا ۔ कुतश्च = کس کارن کی کونسی ۔ उपादानादि = اپادان وغیرہ سامگری

स्वनादिहेतु विना = اس ہیتو کے بغیر

He could have been concealed by the world.

जगत् प्रसौ = جگت کو ۔ प्रसौ = پیدا ۔ شنکر کی = یہ شنکر

जनयति = پیدا کیا ۔ तस्यइव = اسی کے ۔ उपादानत्वेन = اپادان کی وجہ سے

मृतापिण्डस्येव = مٹی کا پنڈ کی طرح ۔ घटेन = گھٹ سے

जगता = جگت سے ۔ तिरोधाने क्रियेत = تروہن کرنا ہے ۔ یہ دونوں سوچکار

तिरोहित = چھپا ہوا ۔ प्रतिरोहितो = نہ چھپا ہوا ۔ भगवतः = بھگوان کی

यां च = [اس بات سے بھی بھگوان کی بنا دیکھی]

स्वभाव भेदः स्यात = سوبھاؤ بھید ہو جائیگا ۔ بھگوان کو سوبھاؤ ہو جائیگا

पुनर उन्मज्जने = پھر ابھرنے پر ۔ हेतुश्चिन्त्यो = کیا ہیتو سوچنا ہے

जगदुदये च = لہذا اگر جگت کو اُدے ہو گیا ۔ کی انشٹھا کی آپتی

द्वैतप्रसङ्ग = دویت کا پرسنگ ہو جائے

इत्येताः शङ्का = اس سے یہ شنکائیں ۔ एक प्रकारेणापि

push = ایک ہی پر ۔ مात

کیا ہے = کیا ہے

(margin notes) تو بھی چھپا ہوا ۔ اس کی تو وہ اس شنکا کو ۔ جگت کا اُدے ہوا ۔ تو دو اس کی بھی اسی طرح ۔ تو پھر اس دویت پرسنگ

9/

यत्र स्थितमिदं सर्वं
कार्यं यस्माच्च निर्गतम ।
तस्यानावृतरूपत्वा-
न्न निरोधोऽस्ति कुत्राचित् ॥२॥

यत्र = جس میں स्थितम = ٹھہرا ہوا ہے इदं सर्वं = یہ سب

from which it (jagat) flows → यस्मात् च = جس سے کاریہ कार्यं = یہ سب کارج

निर्गतम् = باہر نکلا ہے तस्य = اس کی

अनावृतरूपत्वात् = نہ ڈھکے ہوئے روپ ہونے سے न निरोध अस्ति = कुत्राचित
(کیونکہ وہ ان ڈھکا ہے) - کہیں بھی اس کی کوئی رکاوٹ کسی جگہ نہیں ہے

तस्य अस्य = اِس اُس کی शंकरात्मनः = شنکر روپ

پرکاش و آنند سے گھن प्रकाशानन्दधनस्य = پرکاش و آنند سے گھن स्वस्वभावस्य
اپنی سوبھاؤ والے (شنکر کی)

न कुत्राचित = نہیں کہیں بھی دیش-کال یا آکار میں देश-काल-आकारे वा
= کسی دیش-کال یا آکار میں

निरोधः = رکاوٹ ہے → प्रसरव्याघातो
- پھیلاؤ میں رکاوٹ - یعنی پھیلاؤ میں کوئی رکاوٹ نہیں ہے =

अस्ति = ہے کیونکہ अनावृतरूपत्वात्
→ اُن کا ڈھکا ہوا نہیں ہے → अस्थगित स्वभावत्वात्
= نہ ڈھکے ہوئے سوبھاؤ والا ہونے سے - سورج کی طرح

9

अयं भावः = یہ اس کا بھاو ہے → इदं = یہاں [illegible] यत् किंचित्

= جو کچھ بھی ہے مت پرمات [illegible]

प्राण-पुर्यष्टक-सुख-नीला = پران - پریشٹک - سکھ نیل [illegible]

दिकं = اگر یہ [illegible] پرکاش کی آورن [illegible]

चित्प्रकाशस्य आवरकं

संभाव्येत = اگر [illegible] (that would conceal it)

If it does not manifest by itself it is naught.

तत् इदं = وہ یہ न प्रकाशते = اگر پرکاش نہ ہو

= تو کچھ بھی نہیں ہے न किंचित्

प्रकाशमानं तु (پرکاشت) = اگر پرکاش مان ہے [illegible] प्रकाशात्मक शंकर

स्वरूपम् एव इति = [illegible] پرکاش مان ہے [illegible]

किं कस्य = کیا [illegible] निरोधकं [illegible]

को वा निरोधार्थी = یا کون [illegible]

لہذا جب [illegible] شیو [illegible]

एतदेव = یہی

तस्य = [illegible] इति = [illegible] विशेषणेन = [illegible]

यत्र = [illegible] = [illegible] यत्र | उपादयति [illegible]

([illegible])

[illegible] relent [illegible]

यत्र → جس میں → यस्मिंश्चिद्रूपे = مت پرکاش [illegible]

स्वात्मनि = [illegible] - جو سب [illegible] -

इदं = [illegible] → मातृ-मान-मेयात्मकं [illegible] پرماتا - [illegible]

सर्वं

[illegible]

۱ सर्वं = سارا जगत्कार्यं = جگت کا کارج स्थितं = ٹھہرا ہے (اس میں)

→ यत्प्रकाशेन = جس پرکاش سے جس سے یہ پرکاشت ہے

प्रकाशमाने = پرکاشمان ہونے پر सत = ہوتا ہے exist

सतिस्थितिं = ہستی کو پراپت کرتا ہے लभते = پاتا ہے - لیتا ہے

तस्य कथं तेन निरोधः शक्य = لہذا اس جگت سے اس پرکاش کو کیسے نرودھ ہو سکتا ہے

ہم کسی طرح اس کو جس سے یہ خود پرکاشت ہوا ہے - نرودھ کر سکتا ہے

तत निरोधे = اس کے نرودھ ہو جانے پر हि = ہی

निरोधक = نرودھ کرنے والا प्रतिमतमेव (وہ ہوا) } न किंचित स्यात

न च कास्यात = وہ ہوتی نہیں ...

इति न्यायप्रयोगः = اس طرح یہ ...

यत उक्तं = جیسا کہا ہے

तदात्मैनव तस्य स्यात्कथं प्राणेन यन्नरा।

اس آتما ... سے ... وہ اس کو کس طرح بند کر سکتا ہے

इति जड = اس سے ... सिद्धं = سدھ ہوا

प्रमातृ ... کیونکہ اسکے پرکاش ہونے سے جڑ ...

9

ननु = ہرگز ہے   उपन्नस्य = جو پیدا ہے   स्थित्यात्म = تحقیقی روپ پرش

भवति = ہے   جو تحقیقی میں آیا — مانی یا اسکو اس پر پرانی سے ہی تحقیقی پایا ہے

उत्पत्तिरेव = اس جگت کا پیدا ہونا   तत्प्रस्य कुतः = کہاں سے

इत्याह = یہ کہا ہے   اس کا جواب میں کہا ہے

"यास्मात् च निर्गतम् = جس سے یہ" नि = نکلا ہے

स्मृति = یاد کرنا   स्वप्न = سپنا   संकल्प = سنکلپ کرنا

योगीनिर्माण इष्टया = اپنی اچھا سے ... ہوگی بنانا ہے (اسکو یاد کرتا ہے)

= اس یوگی کی درشتی سے

— اس سے   चित : چیت کی — اس   स्वानुभव = اپنے انو بھو سے

सिद्ध = ثابت ہے

جیسے = जगत्कारणत्वम = جگت کارن ہونے کو   उज्झित्वा = چھوڑ کر

प्रमाणकम = پرمان کے بغیر ہے   अनुपपन्ने च =

प्रधान = پرکرتی   परमाणव प्रादिनां = پرمانو وغیرہ کو   न = نہیں

तत = اس کو (جگت کو)   कल्पयितु = کلپنا کرنا

युज्यते = درست ہے — نہیں ہے   [جس کی کلپنا کی جاتی ہے — اس جگت کا [illegible] نہیں ہو سکتی]

یہ یعنی کار ہونا ہے (objectivity)

10/ कार्यपदेन च = کار پد سے (لفظ) | इदम् इव = یہی

ध्वनितं = اشارہ دیا ہے | कर्तुः = کرتا کی

क्रियया = کریا سے | निष्पाद्यं = بننے والی

ہے Productivity ← کرتا کی کریا جو کچھ بناتا

कार्यम् उच्यते اسی کو کار کہتے ہیں (وہ اسی وستو کو کریا ہی کار ہے۔)

न तु = نہیں ہے जडकारणात् = جڑ کارن سے (جڑ چیز) اس سے भाति = یعنی

And is not the effect of an insentient cause.

जडस्य = جڑ چیز کا कारणत्वात् अनुपपत्ती = اس کا کارن ہونا (کیونکہ نہیں جڑ ہو سکتا۔ یعنی جڑ چیز کارن نہیں بن سکتا)

ईश्वर प्रत्यभिज्ञा उक्त नीत्या = ایشور پرتیبھگیا میں جو بیان کیا گیا ہے

भविष्यति च इतत् = آگے بھی دکھایا جائیگا ہے

اور دیکھا جائیگا۔ کاریہ کیا ہے کرتا خود ہی ہے۔

इत्यत्र = اس شلوک میں

10/

सर्व प्राब्दन = سرو شبدے उपादान आदि, नै अपेक्ष्यं
آپادان کی اسطرح کی بغیر (کام کرنا)

कर्तृ द्वैनितम् = السے کرتر زوپ → = نبلدیا گیں

ननु = نہیں ہے कार्य = کارتہ घटादि = جیسے کہ گھٹ وغیرہ کو

कर्तृ : = کرنے والا कुम्भकार = جیسے کمہار कदाचित्
کسی وقت

It is nowhere seen that the work such as pot conceals the nature of the doer such as potter

स्वरूपं = اپنا حقیقت तिरोदधत = چھپاتا ہوا

दृष्टम = دیکھا ہے [نہیں دیکھا ہے کہ کمہار کو گھڑا نے چھپا دیا ہو]

ननु = بیشک निर्गीतवास्थितस्य = زبان سے جو نکلا ہے

भवति [جب اندر سے نکلی ہوئی وہ نکلی ہے باہر]

तत = اس بات کی किम् = کیا इतत = کیا یہ مگر

कश्चित = کسی طرح आसाद इव स्थि. = پہلے سے ہی نکلا ہوا ؟

→ न अन्यत्र स्थितम् = نہیں دوسری جگہ پہ ٹھہرا अपि तु = بلکہ

तत्रैव चिदात्मनी = اسی جگہ آتما میں इत्याह = اسنے کہا

"यत्र स्थितम इति =" جہاں پہ تھا ٹھہرا ہے

10

आवृत्त्या च = [illegible] तत् योऽयम् = [illegible]

अयमर्थः = [illegible] यदि = [illegible]

चिदात्मनि = اسی [illegible] जगत् = [illegible]

अहंप्रकाशाभेदेन = [illegible]

न भवेत् = [illegible] (اگر وہ نہ ہو)

[illegible]

तत् कथं = [illegible] उपादानादि

निरपेक्षं = [illegible]

तत् उदियात् = [illegible]

" यथा न्यग्रोधबीजस्थः शक्तिरूपो महाद्रुमः
तथा हृदयबीजस्थं जगद् तत् चराचरम् ॥ "

स्वामिश्चात्मसंस्थस्य " [illegible] "

इति = [illegible] पूर्व उक्त युक्तिया = [illegible]

तत्र = [illegible]

तत् अभेदेन = [illegible] स्फुरतिस्थितं = [illegible]

= [illegible]

* If it can be taken for granted that this world has separated as an emanation from that mass of light (43) from that universal consciousness how can the universe be manifest. For it is untenable to regard something at once as separate from manifestation and as becoming

manifest as showing contradiction in terms.

ततः = [illegible] स्वयं चिदात्मा [illegible] भगवान्

= [illegible] = निजरस प्राप्यानता रूपं

जगत् उन्मज्जयतीति = اس کو ابھارتا ہے [illegible] इति युज्जयते = [illegible]

सर्वं च = اور سب यत्र = جہاں [illegible]

स्थितमेव = ٹھہرا ہوا सत = [illegible]

यस्मात् [illegible] निर्गतम् | इति यत्र योजना जाना

[illegible]

'च' [illegible] 'सर्वं' [illegible] = एवार्थे [illegible]

भिन्नक्रमः = [illegible] 'च'

= [illegible] 'सर्वं' [illegible]

ननु = [illegible] यदि = اگر [illegible] तस्माद् प्रकाशवपुष

[illegible]

इदं जगत् निर्यातं

= [illegible]

* | तत् न प्रथेत = ~~[illegible]~~ न हि प्रथा बाह्यं च प्रथते च

[illegible]

= [illegible]

इत्य युक्तम् इत्य आशङ्क्य ~~[illegible]~~

[illegible] → यस्मात् निरगतं सद् स्थितम् स्थितम — - - -

Concerned [illegible] Concerned

(44)

[illegible Urdu]

10/

इत्य आवृत्त्या संगमनीयम् = [illegible Urdu]

चोऽप्यर्थे = [illegible Urdu] च भिन्नक्रमः [illegible Urdu]

एतत उक्तं भवति = [illegible Urdu]

[illegible Urdu]

न प्रसेवेकाद् इव = [illegible Urdu] प्रसेवाद = [illegible Urdu] प्रादि

तत तस्मात् निर्गतम = [illegible Urdu] अपि तु =

अपि तु = [illegible Urdu] स एव भगवान् = [illegible Urdu]

स्वस्वान्याद [illegible Urdu] पनश्चातिरिक्तामस्य

[illegible Urdu]

[illegible Urdu] अतिरिक्ताम इव = [illegible Urdu]

जगत् रूपता = [illegible Urdu] स्वभित्तौ = [illegible Urdu]

दर्पणनगरवत् [illegible Urdu]

Reflects the world like the mirror

प्रकाशायस्थितः = [illegible Urdu]

ननु च = [illegible Urdu] भवेत एवम = [illegible Urdu]

सर्गस्थि इत्य अवस्था = [illegible Urdu]

[illegible Urdu]

reasonably to exist while the difference as effect.

i.e. The created world even when comming to dissolution, exists as identical with Him and (45) that no entire annihilation of the nature of vaccum is possible to the world. on the strength of the argument to be referred latter on, such an annihilation

!!

य: जगत् = [illegible] अस्य निरुद्धत्व = [illegible]

सहारावस्थाया = [illegible] तु = [illegible] प्रभावात्मना = [illegible]

सुषुप्तदेशीयया = [illegible] जगत = [illegible]

अस्य = [illegible]

सान्निध्यया = [illegible] कथं = [illegible]

नैतत् व्यतिरेचयिष्यते [illegible]

because the perceiving consciousness cannot exist apart from the perceptible world.

नहि = [illegible] ग्राह्यं जगत = [illegible] विना = [illegible]

ग्राहकाश्चिदात्मना = [illegible] कश्चिदित् = [illegible]

इति आवृत्त्वे = [illegible] इतत उत्तरं = [illegible]

यस्मात् निर्गतमपि = [illegible] सत = [illegible]

यत्रैव स्थितम् [illegible] उत्पन्नमपि = [illegible]

जगत संहारावस्थायां = [illegible] तदैव तत एकात्म्य नैव अपस्ति = [illegible]

न तु = [illegible] अस्य = [illegible] अन्या काचित [illegible]

उच्छेद: = [illegible] स्वरूप = [illegible]

तस्य = [illegible] वक्ष्यामा युक्त्या = [illegible]

प्रकाशः भित्तिभूत = [illegible] विना [illegible] अनुपपत्ते

उत्यर्थ: = [illegible]

The ó The non vaccum is described as the vaccum and the latter is described as (46) naught. O godess, that is to be considered as naught wherein things have gone to destruction.

11

यथोक्तं श्रीस्वच्छन्द शास्त्रे = [illegible]

"अशून्यं शून्यमित्युक्तं शून्यं चाभाव उच्यते।
देव्यभावः स विज्ञेयो यत्र भावाः क्षयं गताः॥"

एवं सर्वं = [illegible] यस्य कार्यं = [illegible]

[illegible] यत प्रकाशेनैव = [illegible] प्रकाशते = [illegible]

[illegible] संहृतमपि च = [illegible] सत् = [illegible]

[illegible] यत प्रकाशैकात्म्येन = [illegible] तिष्ठति = [illegible]

न तस्य देश-काल-आकारादि किंचित् = निरोधकं

[illegible]

युज्यते।

इति व्यापकं = [illegible] नित्यं = [illegible]

3 विश्वशक्ति = [illegible]

स्वचितं = [illegible] स्वप्रकाशम् [illegible]

असिद्धं = [illegible]

II

इतत् सततत्वम इत्य = یہ ٹھیک ہے ن प्रस्य

= لیکن یہ زبردستی ہے

सिद्धि सिद्धावस्थातां = بنائی کی سدھی प्रवज्ञाता = جانتا ہوا

अर्थप्रकाशरूपं = ارتھ کو پرکاشنے والا प्रमाणा वराकम् = پرمان بیچارہ

उपपद्येत उपयुज्यात् = ہو گیا ہے (اس کو کوئی پرمان سدھ کرنے کو کیا سمجھتا ہے - نہیں سکتا ہے

संभवति वा.

بلکہ پرمان آدی کی وشو وستوؤں کی سدھی کے [illegible]

प्रत्युत = بلکہ तत् तत्त्व = اس تو ہے ادھی [illegible]

सिद्धिधीना

प्रमाणादि = وہ پرمان آدی विश्ववस्तु सिद्धि = سارے جگت ہے وستوؤں کی سدھی

Appearance for only for 3 days.

بلکہ جگت ہے وستوؤں کی سدھی پر

بلکہ ان سدھیوں اور پرمانوں کی زندگی اور جگت کی اور چیزوں کی زندگی اسی ایک شیو وستو پر منحصر ہے

The same is referred to by my teacher in the Tantraloka

'He the same God forms the supreme vitality even of those proofs which constitute the life of things in general

"यस्मात् निर्गतम्" = جس سے نکلا ہوا "इदं" = یہ ملک

"यत्र स्थितं" = [illegible] → यत् प्रकाशेन = جس پرکاش سے

प्रकाशमानं = پرکاش مان [illegible] तथाभूतमपि = ویسی ہی identical [illegible]

as of that nature

यत्र स्थितं = [illegible] → यत् प्रकाशस्करूपं =

[illegible]

x in proof of whose existence

यत् प्रकाश एव = جو پرکاش ہی यस्य सिद्धये = جس کی سدھی کے لئے

न्यक्षेण = [illegible] उद्दयमाणं = [illegible] भवति =

न तु = نہیں तو अन्यत = [illegible] जगत् नाम = [illegible] = किंचित्

[illegible] अत्र यत्र = [illegible] सिथमि = [illegible]

उत्य आवर्त्यं = [illegible] द्वियोऽयम् = [illegible]

एवं च = [illegible] स्वानुभव = [illegible] सिद्धमेव =

to this principle that manifests creation, preservation, destruction & unification

अस्य तत्त्वस्य = [illegible] सृष्टि-स्थिथिति-संहार = [illegible]

मीलन = ملنا अवभासिनो = [illegible]

that is capable of doing impossible things

अघटितदुर्घटकारिणः = [illegible] सर्वदा = ہر وقت

सर्वत्र = [illegible] अनिरुद्धत्वम् = [illegible]

यथा उक्तं श्रीमदुत्पल देवाचार्यैः = جیسا کہ شری اُتپل دیو نے کہا ہے

परमेश्वरता जयत्यपूर्वा तव सर्वेश यदीशितव्यशून्या
अपरापि तथैव तेऽयद जगत आभाति यथा तथा न भाति.

جو پرمیشورتا ہے تمہاری وہ جے ہو سے اور جو اوکک ہے - بے مثال ہے النور - وہ اس پرمیشورتا پر
اور کوئی حکم نہیں چلا سکتا - یہی سوانتر شکتی اسی وقت تمہاری میں سے یہ جگت باہر میں آتا ہے
یہی سوانتر شکتی بناتی بھی اور ختم بھی کرتی ہے -

The meaning is

That the world when manifesting is one with the manifestation. Nothing can manifest as separate from manifestation

अपितु = بلکہ   हि = کیونکہ   भासमान एव = پرکاشمان ہے   जगत भासन् = اس پرکاش کی

एक घोषी भूतत्वात् = ایک ہی بانسنا ہوا یعنی جگت اس سے   भासन् = باسنا سے
شامل ہی ہے -

अतिरिक्तं न किंचित् = کچھ بھی نہیں   भाती = چمکتا ہے   इत्यर्थः = یہ اثر ہے

किंचित् (किं च) = ایسا ہے   "यत्र स्थितं" = جس پرکاش میں جگت ٹھہرا ہے

لیکن یہ شانتی پیدا ہو رہا ہے اور وہ یہ "سے نہ نکلے گا" سے پیر سے اسکا رہتا ہے

इत्य उक्तया = اس سے کہا گیا ہے   उपशामपदम = یہ شانتی پد ہے (یہ درجہ اعلیٰ ہے)

यस्मात् च = اس پد سے   = نکلا ہوا

निर्गतम् इति = یہ پد سے نکلا ہوا   पसरपद

The yogi should always be intent upon finding entrance in his own reality whether at the stage (50) of ingoing, by the mention of the phrase 'in whom located' or whether at that of outgoing by the phrase of 'from whom come out' or at both stages of concentration i.e. ingoing & outgoing, because his reality is beyond obstruction.

यतः प्रसृत्य = [illegible] न निरोधः = [illegible]

ततः = [illegible] निमीलन = [illegible] उन्मीलन = [illegible]

समाधिद्वय = [illegible] योगिना = [illegible]

स्वस्वभाव = [illegible] समावेश = [illegible]

परे शैव [illegible] भवितव्यम = [illegible]

([illegible])

यद् वक्ष्यते = [illegible]

" यदा क्षोभः प्रलीयेत तदा स्यात्परमं पदम् "

इति। तथा =

" तस्माच्छब्दार्थचिन्तासु न सावस्था न या शिवः "

कुत्रचिद् = [illegible] अनात्मवादिन = [illegible]

[illegible] → सौगतादौ = [illegible] प्रमातारि = [illegible]

कत्रचिद = [illegible] बाधकाभिमते = [illegible]

[illegible]

اگر — प्रमाणे सति = اگر یہ برہان ہو گا ہی — مگر

مگر اس برہان کی کوئی تردید نہیں ہے / یہ ثبوت ہے اس کا ساتھ برہان سے

कः न तस्य निरोधः

→ प्रतिषेधोऽस्ति = نہ وہ تردید نہیں ہوسکتی ہے

यतः = جس کا [illegible] यः = جو . तस्य = اس برہان کی

प्रतिषेधको = جو تردید کرنے والا . यत् च = जو . तस्य = اس کی

وہ لوگ جو برہان کو باطل برہان سے وہ دعا [illegible]

प्रतिबाधकं प्रमाणं = جو تردید کرنے والا برہان ہے तत् = وہ यदि = اگر برہان

न सिद्धम् = نہیں ثابت ہو وہ ثابت نہ ہو . प्रमितिकम्

تو کس طرح — کیونکہ وہ برہان تو ثابت ہو سکتا — جو وہ برہان ثابت ہو [illegible] — تو ثابت کرنا ہے =

एतत् = یہ चित्रं = عجیب . (جب تو ہی نہیں مگر دعویٰ)

اگر وہ برہان [illegible] — सिद्धिः च = ثبوت کی — प्रस्य = [illegible] प्रकाशते

ہوتا ہے — इति = اس لیے — ततः सिद्धयेव = اس کا ثبوت [illegible]

Exist — اگر وہ ثابت نہ ہو یا تو وہ ثابت ہے — کیونکہ وہ بات [illegible] نہیں ثابت کرنا ہے

भगवान् स्वप्रकाशसिद्ध = جو بھگوان ہے [illegible] स्वप्रकाशमूर्ति = سو پرکاش مورتی

परिस्ति = ہے इत = اس لیے एतत् = یہ

प्रतिषेधाय = تردید کے لیے — उदिते नाप्य = [illegible]

नक्षारमउक्रमम् = [illegible]

भविष्यति च सतत = [illegible]

" न तु योऽन्तर्मुखो भावः "

इत्यत्रान्तरे = [illegible]   एवं च = [illegible]

अनेन = [illegible]   विश्वोत्तीर्णं = [illegible] transcending the world.

is of the nature of the world विश्वमयं = [illegible] → विश्वसर्गसंहारादिकारि

[illegible] = & is performing these acts.

शंकरं = [illegible]   स्वस्वभावात्मकं = [illegible]

तत्त्वम् = [illegible]   इति = [illegible]

अभिसंधता = [illegible]   सर्वेषु पारमेश्वरेषु [illegible]

यत = उ. उपास्यं = [illegible]

तत = [illegible] सतत [illegible] स्पन्दतत्त्व = [illegible]

- न न्यूनाधिक | [illegible]

केवलम् = [illegible]   एतत = [illegible]

स्वातन्त्र्यवशेनैव [illegible] =

[illegible]

तत् उपासा = [illegible] वैचित्र्यम् = diversity of meditation

प्राभास्यते = [illegible] is due to that.

वस्तुतः = دراصل   सतत = [illegible]

[illegible] वीर्यसार [illegible] प्रवर्षणम् = [illegible]

यत् वक्ष्यति = آگے کہے گا

" तदाक्रम्य बलं मन्त्राः सर्वज्ञबलशालिनः "

[illegible] इत्येतदपि = [illegible] प्रतिपादितम् = [illegible]

भङ्ग्या

एव च न काश्चित् = [illegible]

च बुद्धि = [illegible] प्रवकाशः = [illegible]

एवम् = [illegible] सतत = [illegible] हृदयेषु

चिन्तारत्न = [illegible] प्रायिषु = [illegible]

श्रीस्पन्दसूत्रेषु = شری سپند سوتر میں

यतः 3 मन्त्र = [illegible] सर्वे = [illegible]

[illegible]

वृत्तिकृद्भिर्व्याख्यायि =

यत च = ... अस्माभि =

किंचिद् व्याक्रियते =

तत्र एतस्य ... अपमत्सरा =

एतावत् प्रार्थ्य = ... स्वयमेव = आप ही

by unprejudiced and unrelated ... themselves

विचारयन्तु = ... सचेतसो =

think ponder over it. intelligent ing

न तु = ... तत = ... अस्माभि =

उद्धार्य = ... प्रतिपदं =

by word after word

प्रदर्श्यते = ... ग्रन्थगौरवापत्तेः ॥

گرنتھ کا بھاری پن ... اس میں گرنتھ کا بھاری ہو جانا

18/6/67

ननु = پرنتو یہ — जागरादिदशासु = جاگرت آدی اوستھاؤں میں

स्वीदृशः स्वभावो = اس شنکر کا سوبھاؤ — न प्रत्यनुभूयते = مگر اس شنکر کا سوبھاؤ جاگرت آدی اوستھاؤں میں کیوں نہیں دیکھا جاتا ہے۔ جو آپ نے بتلایا ہے کہ یہ سوبھاؤ نردوش ہے

Even though — यदि च = اگرچہ — एवम् = یہ سوبھاؤ جاگرت آدی اوستھاؤں میں

Even though the Principle of God is being obstructed by none according to above mentioned arguments, it will by itself be concealed in these 3 states i.e. these 3 states

उक्तयुक्तिभि = کہی ہوئی یکتیوں سے — न = نہ — केनचित् = کسی سے

निरुद्ध्यते = روکا جاتا ہے — نردوش ہوتا ہے

तत् = وہ

(اس پرکاش کو)

जागराद्यवस्थासु = جاگرت آدی اوستھاؤں میں — स्वयमेव = کیول آپ ہی — خود ہی

निरोत्स्यते = ڈھک جاتا ہے — [illegible]

لیکن نردوش ہوتا ہے اسکا — [illegible]

इति प्राङ्क्यात = ایسی شنکا ہے — उक्तमप्यर्थम = کہا ہوا ارتھ بھی

اسی شنکا والے کو

प्रतिपद्यमाने = [illegible]

प्रबोधयन = [illegible] — उपदिशति = اپدیش کرتا ہے

जाग्रदादिविभेदेऽपि
तदभिन्ने प्रसर्पति
निवर्तते निजान्नैव
स्वभावादुपलब्धृतः ॥३॥ } never withdraws itself from its nature of cognitive power

जागर = جاگرت अपरपर्यायो = دوسرا لفظ is synonymous with जाग्रत = یعنی جاگرت

शिष्ट प्रयुक्तत्वात → ... लोकप्रसिद्धे = لوگوں میں پرسدھ

जाग्रत्स्वप्नसुप्तानो = جاگرت سپن اور سوشپت भेदे = ان کا بھید

च वा = یا योगिप्रसिद्धेऽपि = ... یوگیوں میں ... धारणा-ध्यान समाधिरूपे = دھارنا دھیان اور سمادھی ...

प्रसर्पति = ... अन्य अन्य रूपे = ... प्रवहति

सति = ہونے پر अपीत = ... तत्त्वे

निजात् = اپنے ... अनपायिन: = ... never vanishing

which constitutes the life of the whole world. सर्वस्यात्मभूतात च = ... अनुभवितृरूपात्

स्वभावात = ... नैव विवर्तते = ... بدلتا نہیں

never withdraws

بس بمر بر اسی لئے علم کی ہوا ہے جو اُس کال میں اُن کی قدرتے کا ہوتا

یدि हि स्वयं = اگر وہ آپ ہی سے — निवर्तेत = مٹ جاتا

ततः = تو — जाग्रत आदि अपि = جاگرت ادی کی — तत् प्रकाश विना कृते = اُس پرکاش کے بغیر ہو جانے پر

न किंचित् प्रकाशेत = کچھ بھی پرکاشت نہ ہوتا — لہٰذا उपलब्धृता = اپلبدھتا = cognitive nature

because these states also would then lose their light ← بالکل پرکاشت نہ ہوتا

च ह्यतदीया = اُسی کی — जाग्रत्स्वप्नयो = جاگرت اور سپن میں

सर्वस्य = ہر ایک کو — स्वसंवेदनसिद्धा = وہ اپنے ہی انوبھو سے — through self experience

سُشُپتی میں بھی ہے — ایسی اپلبدھتا ہو ہر ایک کو اپنے ہی انوبھو سے جاگرت اور سپن میں محسوس ہوتا ہے

सौषुप्ते = سُشُپتی میں — यद्यपि = اگرچہ — सा = وہ — اپلبدھتا

न चेत्यते = محسوس نہ ہوتی — مگر اُس طرح سے جیسی یہ نہیں ہوتی — तथापि = تو بھی — उत्तरकालिक = اگلے وقت میں — future

then the subsequent remembrance would be incompatible.

स्मृत्य = سمرتی — अप्रत्यय अनुपपत्त्या सिद्धा = دوسری طرح سے ثابت نہیں ہوتی

لہٰذا उपलब्धृत स्व च = اپلبدھتا — स्वभावात् न निवर्तेत = وہ اپنے سوبھاؤ سے کبھی نہیں مٹتا

उपलभ्यं = لبھی — प्रवस्थादि = اوستھا ادی — तत् महात्म्य = = اُسی کی عظمت

निवर्तितां = مٹتی — काम = زیادہ سے

कामक्षति = ... بھی نہیں ہوتی

(58)

एवकारोपि = एव (ہی) کا مطلب بیان کرتا ہے — सब

भिन्नक्रमः = بے ترتیب / بے لگاؤ

The meaning therefore is — even in this absence that principle does not arise

तत् अभावेपि = اس کے ابھاو (عدم) میں بھی — जारी رہتا ہے

न निवर्तते इत्यर्थः = کبھی (اپنے مادہ) سے الگ نہیں ہوتا — مسلسل

जाग्रादि विभेदस्य = جاگرت آدی کا بھید

भिन्न विशेषण द्वारेण = مختلف صفت سے

हेतु = وجہ तत् अभिन्न इति = اس سے نہ بٹا ہوا

اگر جاگرت آدی کا بھید ہے لیکن اس سے بٹا نہیں ہے

1st explanation of *

→ तस्मात् द्विव स्वभावाद् = اس دو سوبھاؤ سے अभेदेन =

نہیں بٹنے سے۔ اسکا ہی حصہ ہونے سے

پس प्रकाशमानत्वात् (اسی پرکاش سے) = پرکاش مان ہونے سے प्रकाशरूपे इत्यर्थः

They are therefore identical. لہذا یہ جاگرت آدی بھی پرکاش روپ ہی ہیں

identical ہونے کی وجہ سے

यत् च = اور جو → यत् एकैकात्मकं = جو وہ ایک ہی (جو دو چیزیں ایک ہی ہیں)

तत् कथं = وہ کیسے तत् निवर्त्तावः अवतिष्ठते = جب جاگرت آدی

= وہ ایک دوسرے سے الگ ہو سکتے ہیں — اپنے آپ کو کیسے الگ کر سکتے ہیں (اپنی بھیو ثابت کی)

تو یہ ان دونوں کو الگ نہیں کر سکتے

2nd Explanation

यत् वा = جو نہیں तत् इति = وہ اسی طرح

क्रिया का = करुपेदम् .

Set cleared again

"प्रभिन्न" = [illegible] इति = [illegible] → केवल = صرف

अभिन्नत्वे = [illegible] जाग्रादि = اس کا گراؤنڈ [illegible]

[illegible] शिव अपेक्षमिव = [illegible]

प्रपीत = [illegible] तत तत्त्वं = [illegible] जाग्रादिभेदेऽपि सति

= [illegible]

[illegible] प्रसर्पति → = [illegible] → प्रसरति वैचित्र्यं गृह्णाति

[illegible]

[illegible] तत = [illegible] न वै = نہ

स्वस्वभावौन्निवर्तत = [illegible]

= [illegible]

इति युऽयम [illegible]

किन्तु = [illegible] प्रेय = [illegible] जाग्रादिभेदः

= [illegible]

[illegible]

= [illegible]

[illegible] परिमार्गामो

= [illegible] वा विवीत

Transformation of Samkhya इति = [illegible] यत = 3. सांख्या — [illegible] वाद

[illegible]

= [illegible] पाञ्चरात्र = [illegible]

प्राब्दिकादवो = [illegible]

मन्यन्ते = سمجھتے ہیں   तदन्युदासाय = اس کے دور کرنے کے لئے / उसको

"तत् प्रमित्र इति" = "اس سے بھی نہیں" (پریثام) —

अवस्था प्रपञ्चोऽपि = [illegible]   यदि = اگر

चिन्मात्रात् = چن ماتر سے   परिणामतया = پریثام کے ساتھ / with this evolution

मनागप्य = تھوڑا سا   प्रतिरिच्येत = اگر ... [illegible]

व चिद्रूपं = [illegible]

तत् परिणातौ = اس کے پریثام کے بارے میں   मनागप्यं = تھوڑا سا

प्रतिरिच्यत (कस्याद इति / चयत) = [illegible]   तत = وہ   न = نہ

किंचित् = کچھ بھی   चकास्याद = [illegible]

इति = یعنی   तावत् = تو بھی   न = نہ   परिणामोऽस्ति = پریثام

There is no room — (پریثام نہیں ہوتا) — ہے پریثام
then for this evolution of different states.

यथाक्रम = ترتیب وار

" परिणाम उचेतनस्य चेतनस्य न युज्यते "

— پریثام تو اچیتن کا ہے — چیتن کا نہیں ہے

Evolution is possible to the insentient & does not ~~ugly~~ apply to the sentient.

इति श्री किसरो = اس طرح شری کرشن نے میں کہا ہے — न च = نہیں ہے

भासमानो = باس مان ہو — अपसौ = یہ جگت — असत्योपि = وہ جھوٹ نہیں ہے —

ब्रह्मतत्वस्यापि — جو برہم تتو کو بھی اسے ہی مانا پڑیگا —

اگر وہ مانی کو جگت جھوٹ ہے

तथात्वापत्ते = کو وہ بھی اس سے (اگر جگت جھوٹ ہو) اسی سے

asat connotes separate unreality, and assuming different forms.

इत्य = ایسا — अपसत्य = جھوٹ — विकल्पकाव्य = بانٹے ہوئے

अन्य स्वरूप = الگ روپ اور — उपग्राहिता = گرہن کرنے والا — شبد

विवर्तेऽप्यपि = ہی ہے دوسرے — (رسی کا سانپ).

The Polynomism which gives itself unreal diversity of form is also unjustifiable.

= یہ بھی — न = نہ — सङ्गतम् = جڑا ہوا ہے

अपनेन च = اور اس — अतिदुर्घटकारित्वमेव = سب سے مشکل کام کرنا ہے — جو ناممکن کو ممکن بنانا ہے —

{ तत अभिन्नम् = اس سے [illegible] نہیں ہے }

भगवतो = بھگوان — ध्वनितम् = دکھلا دیا

यस्मात् = جس سے — जाग्रादि विभेदं च = اور جاگرت وغیرہ

प्रकाशयति = وہ ظاہر کرتا ہے — तत्रैव च = وہیں

स्वप्रभेदम इति = اپنے [illegible] ہے ۔

भेदात्मना = بھید روپ سے   ततश्च भेदात्मना = اس کے بعد بھید روپ سے

उभयात्मना च = دونوں روپ سے (بھید ابھید)

अपरा, परा, परापरा (रूपेण) = اپرا - پرا - پراپرا

शक्तित्रयस्वरूपेण = پر شکتی شکتی سے

स्फुरत (manifest) = پھرتا ہے   इति = یوں   अनुत्तर = انوتر

षडर्ध तत्त्वात्मतया = شڈاردھ تتو روپ سے
سروپ ہونے سے

भगवानेव = آپ ہی بھگوان   स्फुरति = سپھرتا ہے

अतश्च = اس کارن سے   जाग्रादि दशा अवस्थतोऽपि
جاگرت آدی دشاؤں میں

स्थितोऽपि = ٹھہرا ہوا اگر ہے

एवं स्वकम् = ایسا اپنا   इमम् स्वस्वभाव = یہ اپنا سوبھاؤ

اس کو   परिशीलयन् = درشن کرتا ہے

جو   यः चिन्तुते = جو سوچتا ہے

स एव शंकर एव = وہ ہی ساکشات شنکر ہے

* Hence, it is explained here that he is verily Shankara who thus observes and investigates this his own nature although taking (63) his stand in such states as waking etc.

19.6.67

*इत्य उपदिष्टं भवति = [illegible]

अथ ये = جو کہ (صرف) "एकमेवेदं संविद्रूपं" = ایک ہی [illegible] universal consciousness
हर्षविषादाद्यनेकाकार विवर्तं पश्याम" = [illegible] ایک روپ سے [illegible] آئی [illegible] کو دیکھتے ہیں ۔

इत्युक्त्या = اس اُکتی سے ज्ञानसन्तान एव = اس [illegible] گیان [illegible] یعنی الگ الگ گیان میں ۔ [illegible]

तत्त्वम इति = [illegible] (وہ مانتے ہیں)

सौगता = بدھ मन्यन्ते = مانتے ہیں

ये च = جو اپنے प्रतीति = [illegible] प्रत्ययः = [illegible]

सदैव = ہمیشہ सुखाद्युपाधिः = [illegible]

तिरस्कृत = [illegible] आत्म इति = آتما

= اور मीमांसका: = میمانسا والے (کرم مانتے ہیں)

प्रतिपन्ना: = [illegible] तान = ان کو एकेनैव = ایک ہی

श्लोकेन = شلوک سے

अपवदति = اپواد کرتا ہے

अहं सुखी च दुःखी च
रक्तश्चेत्यादि संविदः ।
सुखाद्यवस्थानुस्यूते
वर्तन्तेऽन्यत्र ताः स्फुटम् ॥४॥

यः उ. एव = جو — अहं सुखी = میں سکھی ہوں
दुःखी = دکھی ہوں — सुखानुशायिना = سکھ پر [illegible]
रागेण = راگ سے — युक्तत्वात् = [illegible] — रक्तो = راگی ہو گیا ہے
दुःखानुशायिना = دکھ [illegible]
द्वेषेण = دویش سے — सम्बन्धात् = اس سمبندھ سے
द्विष्टः इत्यादयः = [illegible]
संविदः = [illegible] — ज्ञानानि گیان
ता = [illegible] — अन्यत्र इति = [illegible]
अवस्थातद्यात्म्य तत्त्वे — [illegible]
- वर्तन्ते [illegible]
- [illegible]

[illegible] (left margin)

→ तत्रैव = وہیں (اسی میں) अनन्तसुखे = اننت سکھ میں (ہوکر) विश्राम्यन्ति = وشرام کرتی ہیں – وہ اُسی پر رکتی ہیں۔ مہمان کیاں –

→ स्फुटं स्वसाक्षिकं कृत्वा = ظاہر کرکے اپنے گواہ کر کے

अन्यथा = اگر یہ نہ مانیں क्षणिक ज्ञानानां = کیونکہ اگر گیان ہوں

स्वाम मात्र = اپنی ذات پر क्षीणत्वात् = وہ فنا ہونا ہے

तत् संस्कार = اس کا جو سنسکار ہے जन्मनामपि = پیدا ہونا

विकल्पानाम् = وکلپوں کو अनुभव अगोचरे = جب ان کا تجربہ نہ ہو

प्रवृत्त्यभावात् = پرورتی (ان کا) نہ ہونا ہوجائیگا – अनुसंधानं इदं न घटते = اس کا انو سندھان ہونا نہیں سکتا –

चकार = 'च' جو ہے तुल्य योगिता परा = برابر جوڑ ہے

اس کا لگاؤ ہے – Connection

This shows connection (اس کا)

अनुसंधाने द्योतयन्ते = انو سندھان میں 'च' یہ ظاہر کرتے ہیں

कीदृशोऽन्यत्र = کس طرح کا ہے – (اس کا مطلب ہے) अन्यत्र یہ

सुखाद्यवस्था = جو سکھ آدی اوستھائیں ہیں

उदय प्रलयिन्यो = جو اُدے میں آتی ہیں اور ختم ہوتی ہیں

(ان کا اُدے – پرلے)

अनुस्यूता = یہ سب سلسلے میں پروئی ہوئی ہیں

→ दृढ़धा = مضبوط यस्मिं = جس میں – तस्मिन् = اُس میں

सुखाद्यवस्था अनुस्यूते = جو سکھ آدی اوستھائیں سلسلے میں ہیں

تجزیہ ہوا ہے –

-?- in which the state of pleasure etc which rise & subside are woven ie strung together like the beads in a rosary.

-x-

[illegible] → अन्तः – اندر । एक = ایک सूत्र = [illegible] ।

कल्पतया स्थिते = [illegible]

ता = [illegible] इति = [illegible] अनेन = اس سے

interconnected अनुसंधीयमान = [illegible] अवस्थानां = ان حالتوں کا

Can be remembered. स्मर्यमाणतां = [illegible] अभिदधत् = کہتا ہوا

[illegible] क्षणिकज्ञानवादिमते [illegible]

अनुभवसंस्कार = [illegible] उत्पन्नत्वात् = پیدا ہونے سے

अर्थाकार = [illegible] स्थितेऽपि = [illegible]

? | مگر स्मृतेः = [illegible] कामम् = بیشک

अनुभवसदृशत्वं = [illegible] भवतु = ہو

न तु = نہیں تو अनुभवानुभूता = [illegible] अतीतकाल

~~[illegible]~~

[illegible] =

अर्थ = [illegible] तत्र व्यवस्थापकत्वं = [illegible]

घटते = [illegible] – [illegible]

सर्वसंविदन्तर्मुखे तु = سارے جو شعور میں ان میں جو اندر مکھ ہے — प्रमातरि = کھوجنے پرماتا

सति = ہونے سے — सर्वं युज्यते = سب کچھ موزوں ہو جاتا ہے

इति सूचितवान् = اس سے یہ بات کا اشارہ کیا

Enough of these subtleties as they are sure to prove sickening to the readers of tender hearts — इति अलं = بس ہو اب زیادہ باریکی سے

सुकुमारहृदय = جو کومل ہردے ہیں ان کو

उपदेश्यजन = ان اپدیش جنوں کا

वैरस्यदायिनीभिः = ان پریشوں کو بے چینی دینے والی

शुष्काभिः कथाभिः = ان شکی کتھاؤں سے رسہین

एतत् = یہ — ग्रन्थैः = جو گرنتھوں والے میں

प्रत्यभिज्ञापरीक्षया = الٹا بار جان کی پرکشا کیا
کرنی جا چکی ہے

ग्रंथकृतैव = گرنتھ کار نے ہی — तु = لیکن

یہ انکار کی موزوں میں ٹھیک — यतः = جس سے — इह = یہاں — युक्ति = ٹھیک

शास्त्रितता = شاستری مرتبہ کی — ततः = اس کا

अस्माभिः = ہم نے — किंचित् = کچھ

اکثر — उद्घाटितम् = کھول دیا ہے — इति = سو ہے

सचेतोभि = [illegible] न = نہ अस्माभ्यम् = ہمارے لیے

Condemn ← असूययितव्यम् = نکتہ چینی کرنی چاہیے — Hence no intelligent people should condemn me for this attempt.

मीमांसक परिहाराय = [illegible] इतत् =

इत्थं = اس طرح — व्याख्यातव्यम् = [illegible]

'अहं सुखीत्या' = میں سکھی وغیرہ — संविदो यः = جو شعور ہیں

ता = وہ — अन्यत्र इति = دوسری جگہ → पुर्यष्टकस्वरूपे प्रमातरि

सुखाद्यवस्थाभि = [illegible] — अनुस्यूते = جو سلا ہوا ہے

→ ओतप्रोतरूप = [illegible] — स्फुरंते = [illegible]

लोकप्रतीति = لوگوں کی جانچ — on the evidence of the people

साक्षिके = [illegible]

वर्तन्ते । तिष्ठन्ति = [illegible] →

on the evidence of the people all such perceptions are found in a being such as the perceiver of the form of Puryashtaka and full to the brim of the states, pleasure etc. the real nature of Shankara blissful & intelligent

whom we have accepted as the one real principle.

न तु = لیکن نہیں अस्मदभ्य = ہم سے ~~अस्य~~ उपगत = [illegible]

अस्मिन् = اس میں चिदानन्दघने = [illegible] प्रकाशात्मनि स्वस्वभावे -

इति = ایسا न = نہ सर्वदा = ہمیشہ सुखाद्युपाधि = [illegible]

तिरस्कृतो = [illegible] अयं = یہ آتما आत्मा

अपि तु = بلکہ یہ चिन्मयः = صرف چیتن ہے.

यदा तु = جب کہ निज अभिसन्ध्या = [illegible]

वक्ष्यमाणाय = [illegible] अयं स्वस्वरूपं = [illegible]

He conceals his real nature.

गूहयित्वा = [illegible] तिष्ठति - [illegible]

तदा पुर्यष्टकाद्य = تب [illegible] अवस्थायां = [illegible] i.e. the State of Puryat take

He is surely to be of the nature of the happy etc.

सुखादि ~~भि अस्य~~ रूपतास्य = [illegible]

~~इत्य उक्तमेव~~ तत्रापि इति = [illegible] न निरोधस्ते = [illegible]

तै सुखादिभि = [illegible] अस्य

अस्य = اس کا इत्य = [illegible] उक्तमेव = [illegible] as already referred to

इति = ایسا = [illegible] न तत्र तिरस्कृतो अयं कदाचिद्

— [illegible]

अथ कृशो अहं स्थूल इत्यादि = میں پتلا ہوں - موٹا ہوں وغیرہ

प्रतीति = ظاہر ہے परिहारेण = اس کے ہٹانے سے

अहं सुखी दुःखी इत्यादि = میں سکھی - میں دکھی وغیرہ - جو ظاہر ہوتی ہے

वद्धता = بندھا ہوا ہے प्रथम आशयः = پہلے معنی یہ ہیں

پس सुखित्वादि = سکھی وغیرہ प्रतीति = ظاہر ہوتی

संभिन्नां = ملی ہوئی पुर्यष्टक भूमिम् = پوریاشٹک زمین کو

اور अन्तर्मुखे पदे = اندرونی مقام پر

اُسی निमज्जये = ڈوب دیوے तत अनषङ्गेण = اس پرسنگ سے

बाह्यस्यापि = باہر کی بھی देहघटादे = دیہہ یا گھٹ آدی

गलनात् = گلنے سے प्रत्यभिज्ञानादेव = پہچان ہی سے

स्वे शिवस्वभावत्वम् = اپنے شِو سوبھاو کو

इति = ایسا सर्वथा = ہر طرح

पुर्यष्टक प्रशमनायैव = پوریاشٹک کے شانت کرنے کے لئے ہی کوشش کرنی چاہئے

Hence to get rid of puryashtika the effort should be resorted to.

यत्र = effect [illegible] प्रास्थेय = [illegible] → should be resorted to.

उक्त उपपत्तिसिद्धां = [illegible] समस्तवादानाम = [illegible]

अनुपपन्नताम = [illegible] अनुवदन् = [illegible] अनुपपत्तिसिद्धं = [illegible]

[illegible]

स्पन्दतत्त्वमेव = [illegible] प्रसिद्धः इति = [illegible]

प्रतिजानाति = [illegible]

युक्त्य = [illegible] अनुभव + full of experience = [illegible] आगमज्ञो (revealed texts) = [illegible]

स्तज्ञो = [illegible] knowing the occult process

रहस्यगुरु = [illegible] — प्रवरः = [illegible] the best of the teachers

Of secret doctrine ([illegible]).

[illegible]

न दुखं न सुखं यत्र
न ग्राह्यं ग्राहकं न च
न चास्ति मूढभावोऽपि
तदस्ति परमार्थतः ॥५॥

اس شرح میں

इह = یہاں   यत् किंचिद् = جو کچھ   दुखसुखादि = دکھ سکھ وغیرہ (آدی)

و اندر سے جو ہیں   अन्तर = اندر   नीलपीतादिकं = نیلی پیلی وغیرہ
باہر کا (باہر وغیرہ)

बाह्यग्राह्यं = باہر گرہن کیے جانے والا (وغیرہ)   यत् च सत्ता ग्राहकं =
* اسکو جو گرہن کرنے والا ہے

گراہک کو جو   पुर्यष्टक-शरीर-इन्द्रियादि = پرشٹک یعنی پران - سریر - اندریاں وغیرہ -
اور وغیرہ
(جیسا کہ پہلی جگہ)

तत = وہ   तावत = تب تک

- सौषुप्तवद् = سوشپت کی طرح   असंचेत्यमान = نہ جینن میں آیا ہوا
are not sensed

→ स्फुटमेव = ظاہر ہی   न अस्ति = نہیں ہے

इति वक्तव्यं = کہنا چاہئے   शक्यम् = سکتی
(سوشپت کی طرح جیسے ... سکھ اور دکھ کا احساس نہیں ہوتا ہے)

यदि यत् अपि = اگر جو بھی   तु = لیکن   संचेत्यते =
احساس ہوتا ہے - جینن میں آتے - اگر ہم جو ... جینن میں آتی ہو

तदा = تو   संचेत्यमानस्य = جو جینن میں آیا ہو
یعنی گراہیہ - اور گراہک

چیتن   चैतन्यमयत्वात् चैतन्यमेव = تو یہ جینن روپ ہے
अस्ति
है

چیتن   इति प्राया तम: = یہ جینن روپ ہے
= یہ ... ہے

यदाहुः = یہ کہا ہے

The thing that can come to light is of the nature of light — no light no existence

"پرکاش بسیط ہے جو کچھ ادراک میں آتا ہے۔ جو پرکاشت نہ ہو وہ موجود نہیں ہوتا"

इति = اس لیے   रहस्य तत्त्व = رہسیہ کو روپ ہے   विदो = اس کو جاننے والے

परमत् पमेष्ठिनः = سب سے بڑے گرو   श्रीमत्उपलदेव पाद = شری اُتپل دیو جی نے

श्रीमद् प्रतिभिज्ञाम् = اُنہوں نے شری پرتیبھگیا میں   इत्यादि वक्ष्यते = اس میں بھی کہا گیا ہے

" तत्संवेदनरूपेण तदात्म्य प्रतिपत्तितः "

The thing that can come to light is of the nature of light. one which has no light cannot exist.

"جو جانا جاتا ہے وہ گیان روپ ہے تاکہ اس کو جانا جائے"

इत्यतो = اس لیے   दुःखसुखादि = سکھ دکھ آدی

नीलादि = نیلا پیلا وغیرہ   तत् ग्राहके च = اس کو گرہن کرنے والا

यत्र नास्ति = جہاں نہیں ہے ہوتا   तत् प्रकाशस्कधंन तत्त्वम् नास्ति

= اس میں پرکاش ہی نہیں گیا نہیں ہے۔

ननु = سوال ہے   सर्वं = سب کچھ اس لیے   सर्वे सर्वं सर्वे ग्राह्य ग्राहको च इदं = سب جو گراہیہ اور گراہک دونوں ہے

= اس کا مجید ہوگا

جب گراہیہ گراہک کا بھی مجید ہو۔ نہیں جب ان دونوں میں کیا تو فرق رہتا ہے

پہلا پو

पून्यात्म इव = جو صرف شونیہ ہو — तत्त्वम = ہمیشہ اوپر (इति प्रायात)

(یعنی شونیہ) اس سے صرف شونیہ یا آ ن ہی ترقی ہے۔

न इत्य प्राह ? = نہیں یہ بات نہیں ہے۔ اس لئے کہتے ہیں

Empty space — [illegible]

न च प्रास्ति मूढभोवोऽपि = اور نہ وہ مٹی کا ہو — نہیں ہے ۔ شونیہ یا خالی نہیں ہے

मूढभावो ⇒ मूढत्वे = مٹی کا ہونا → पून्यरूपता

यत्र न प्रास्ति = جہاں نہیں ہے — ,पादि = شونیہ روپ یا ہی

[illegible] सो प्रपि हि اگر موجود نہیں ہو وہ بھی نہیں ہے न प्रथते = نہیں ظاہر ہوتا (شونیہ) — If it does not manifest, does not exist.

اگر نہیں ظاہر ہوتا تو نہیں ہوگا —

Then it does not exist.

कथम प्रास्ति = وہ کیسے ہے؟ (موجود ہونا شونیہ کا)

प्रथते चेत प्राहि = اگر ظاہر ہوتا ہے — If it exists

[illegible] प्रथात्मकत्वात = یہ بھی ظہور کا ہے — Then it is of the nature of manifestation. न प्रसो

= [illegible] = ظہور ہے [[illegible]]

न व कश्चित प्रथैव (ظہور ہی ہے) = نہ کوئی ظہور ہے — न च प्रथाया: —

manifestation — [illegible] प्रास्ति

[illegible] कदाचित प्रभावो भवति [illegible] — manifestation

तत भावे = اگر اس کا ہو — प्रथाभावस्याप्य प्रासिद्ध

manifestation [illegible] — [illegible] (جو چیز ظہور میں آتی ہے)

[illegible]

should find its place

भविष्यति = ہوگا   च इतत् = اور یہ

'न तु योऽन्तर्मुखो भावः' اس میں

نہ کہ جو اندر مکھ بھاؤ ہے - اسکا کبھی وناش نہیں ہے

इत्यत्र = اس میں . पापि च = لیکن

मूढभाव = مورکھ بھاؤ ऐश्वर्यात्मक = ایشوریہ روپ دیکھو سوشن

विमर्शशून्य = ومرش رہت प्रकाशमात्र तत्त्वो = صرف پرکاش ماتر توشن کی طرف (یہ ویدانتی تھے ہیں)

ब्रह्मस्फोऽपि = یہ برہم بھی   यत्र न स्थित = جہاں نہیں ہے - (اس ستھتی کا برہم روپ جو ومرش شونیہ ہو)

→ यत = ज. श्रुत्यन्तविद: شرتی کے انت کو جاننے والے یعنی ویدانتی

प्रतिपन्नाः وہ کہتے ہیں یہی بات جو کہ انکی ہے

"کہ وگیان ہی برہم ہے" " विज्ञानं ब्रह्म इति " "یہ ویدوں کا اکھیہ ہے" - وہ برہم گیان روپ ہے

तस्यापि = اس برہم کو بھی स्वातन्त्र्यात्मक = سوانتریہ - ایشور روپ سو اتنتر

स्पन्दशक्तिं विना = کے بنا سپند شکتی

जडत्वात् = جڑ ہے یہ - اس لئے اس برہم وید انتیوں کا جڑ ہی ہے -

⊕ उक्तं भट्टनायकस्तोत्रेऽपि [illegible]

"नपुंसकमिदं नाथ परं ब्रह्म फलेत्कियत् (76) त्वत्पौरुषी नियोक्त्री चेन्न स्याच्छक्तिसुन्दरी ॥

यथोक्तं प्रत्यभिज्ञायाम् [illegible]

" स्वभावमवभासस्य विमर्शं विदुरन्यथा ।
प्रकाशोऽर्थोपरक्तोऽपि स्फटिकादिजडोपमः ॥"

[illegible]

⊕

एवं च = [illegible] यत्र स्थितम् " [illegible]

इत्यतः प्रभृति = [illegible] यत् तत्त्वं = [illegible]

विचारिते = [illegible] तत एव प्रसिद्ध [illegible]

तत च = [illegible] प्रसिद्धइव = [illegible] परमार्थतो [illegible]

युक्त्य = [illegible] अनुभव = [illegible]

आगम = [illegible] सिद्धेन रूपेण = [illegible]

परमार्थतएव च = [illegible] ~~प्रकल्पित~~ प्रकल्पितेन = [illegible] in artificial form

पूर्णेन रूपेण = [illegible] प्रसिद्ध = [illegible] न तु = نہیں تو

नीलादिवत्कल्पितेन = [illegible]

in artificial - [illegible]

for as - کیوں

एवम् इत्यते महागुरुः = اس طرح کہتے ہیں مہا گرو (وہ فرماتے ہیں)
भिः

१) " एवमात्मन्यसत्कल्पाः प्रकाशस्यैव सन्त्यमी
जडाः प्रकाश एवास्ति स्वात्मनः स्वपरात्मभिः "

" اسی طرح اسی آتما پر اسٹ جو کلپنا کی گئی ہیں یہ سب پرکاش کی ہی ہیں۔ جو جڑ پرکاش ہی ہے
یہ جڑ ہو
~~خود~~ سوائم - یہ سارا پرکاش ہی ہے سوائم اور پر کے ساتھ سے

तत्र भवद्भर्तृहरिणापि: جیسا بھرتری ہری نے بھی کہا ہے

" यदादौ च यदन्ते च यन्मध्ये तस्य सत्यता
न यदाभासते तस्य सत्यत्वे तावत् एव हि " "

جو آدی پر بھی ہے۔ جو انت پر بھی ہے۔ جو مدھیہ میں بھی رہے۔ وہی ستیہ ہے۔ جو زمانہ ۳
اس کے ساتھ ساتھ نہ ہو ... ویسا ہی ہے۔

सावधारणत्वात् = اس میں تین ۳ ہی ہے सर्ववाक्यानामेव = یہ سارے واکیہ (جو اوپر کہے گئے) - ان میں

'एव', का प्रयोग त्रियोज्यः: تین بار لگانا ہے

एवम् अनेन सूत्रेन = اس طرح اس سوتر سے सुखादि आकार संवित्संतान वादिनो
کے لئے جو آکار ... ~~ہے~~ نظار۔

جنہوں نے کہا کہ ... نظار ... ہیں۔ یہ وادی ... ہیں

سا सुखादिकलुषित = سکھ آدی کی कलुषित = اس میں میلے ہوئے

मातृ तत्त्व वादिनों = [illegible] وادیوں جو پرمانو [illegible] गाह्यग्राहक नानात्व वादिनों

= گراہیہ - گراہک [illegible] جو مانتے ہیں

सर्वेषाम अभाव वादिनो = ان سب ابھاو وادیوں کو निष्परामर्श ब्रह्मवादिनां च

[illegible] رہت برہما

= برہم وادی ویدانتی جو ہیں मतम = ان سب کا مت

अनुपपन्नत्वाद् = نہ سدھ ہونے سے प्रसक्तेन अन्वय

= [illegible] اس سے [illegible]

पारमार्थिकं = سچا सपन्दशक्तिरूपमेव

صرف سپند شکتی روپ ہی

तत्त्वम अस्ति = تتو ہے प्रतिज्ञातम =

[illegible] - [illegible] ہے -

अपि च = اور بھی यस्मिन्नस्मिन = اس [illegible]

The Principle really exists on whose revelation

सोपदेश = [illegible] سا [illegible] सावधान = [illegible]

महानुभव = [illegible]

परिष्ठीलये = [illegible] स्फुरत्तारे = [illegible]

स्पन्दतत्त्वे = [illegible] स्फुरीत = [illegible]

दुःख सुख ग्राह्यग्राहक अभावादिकं [illegible] = [illegible]

सत् अपि = [illegible] न किंचित एव = [illegible]

सर्वस्यैतत चमत्कार = [illegible] एक सारत्वात

तत एव = [illegible] एतत = [illegible] प्रसित = [illegible]

उपदिष्टम = [illegible]

यन्महागुरवः = [illegible]

दुःखान्यपि सुखायन्ते विषमप्यमृतायते
मोक्षायते च संसारो यत्र मार्गः स शंकरः ॥

[illegible]

शंकरो मार्गः = [illegible] → शंकरात्मस्वभाव प्राप्तिहेतु
प्रशाशक्तिरूप = [illegible]

एवं उपपत्ति = [illegible] परिघटित = [illegible] तत्त्व अभिज्ञानाय [illegible]

साभिज्ञान = [illegible] उपाय = [illegible]

निरूपयति = [illegible]

यतः करण वर्गोऽयं
विमूढोऽमूढवत्स्वयम् । भवन्
सहान्तरेण चक्रेण
प्रवृत्तिस्थिति संहृतीः ॥ ६ ॥
लभते, तत्प्रयत्नेन
परीक्ष्यं तत्त्वमादरात् ।
यतः स्वतन्त्रता तस्य
सर्वत्रेयमकृत्रिमा ॥ ७ ॥

ततः = [illegible] निर्णीतं = [illegible] तत्त्वम = [illegible]

आदरात् = آدر سے → श्रद्धया = شردھا سے

Effort is Bhairava

प्रयत्नेन च = [illegible] 'उद्यमो भैरवः'

शिवसूत्र = [illegible] प्रतिपादितेन [illegible]

सर्वभेदापसंहारात्मना = [illegible]

innate glory (81)

onward course of the innate glory

[illegible] निज औजः [illegible] वृत्ति = [illegible] स्फारणा = [illegible]

रूपेण = اُس روپ سے

परिपूर्णान्तरमुख स्वरूप सेवनात्मना

→ = پرپورن انترمکھ سے سوروپ [illegible]

मुखरूपेण = [illegible] उद्यमयेन = اُس ادھم [illegible] [illegible]

परीक्ष्यम् = اُس وقت کی پرکشا [illegible]

यतः = [illegible] इयम् इति = [illegible] सर्वस्य = سب کی

स्वसंविदिता = [illegible]

तस्य प्राकरात्मकः = اُس [illegible] स्वस्वभावस्य = [illegible] अकृत्रिमा

सहजा = [illegible] स्पन्दतत्त्वरूपा [illegible]

स्वतन्त्रा = [illegible] सर्वत्र = [illegible] जडाजड विषये = [illegible]

"is manifest & understood" स्फुरन्ती = [illegible] → स्थित इति शेषः

[illegible]

किं तत् तत्त्वम्? = [illegible]

इत्याह = [illegible]

"यतः" इत्यादि = [illegible] "लभते" इत्यर्थ = [illegible]

وہ تو مرکزی شعور باطن میں - وہ ظاہر ہو کر ... [illegible]

प्रियं इति = [illegible] लोक प्रसिद्धं = [illegible]

गोलकादिरूपो = [illegible] न तु = [illegible] + not शास्त्रत: = as defined in Shastra

(بدن)

तस्य = [illegible] नित्य = [illegible] परोक्षत्वेन = [illegible] invisible

"प्रियं श्रुति = [illegible] निर्दिष्टं = [illegible] प्रभावात = [illegible]

करणावग: क्रियादक्षो

उद्धयारिः = [illegible] विशेषेण =

मूढो = [illegible] → मायावशात् ब्रह्माभासीभूत: =

[illegible]

अनो = [illegible] मोहात = [illegible] आधिक्ये मूढत्वं

[illegible]

प्राप्ता [illegible]

अमूढवत = [illegible] चेतनवत् [illegible] स्वयं = [illegible]

प्रवृत्ति-स्थिति-संहृती = [illegible] → विषय उन्मुखी

लभते [illegible] भवति

तत्रा रमते = [illegible]

ततश्च निवर्तते = [illegible]

इत्यर्थ: [illegible]

x. They do not appear directly as authors of such functions as moving on to the Rupel(?) who is to be (?) instructed & who does not know yoga.

कथं = [illegible] सद्भान्तर चक्रं = [illegible]

इह = [illegible] अन्त चक्रं = [illegible] करीश्वरयो = کرنی شوری چکر

न अन्तःकरणानि = [illegible] तेषां = [illegible]

वशीशब्देन
स्वीकारात् = [illegible]

न वक्ष्यमाणं = [illegible] पुर्यष्टकं = [illegible]

ततस्थस्य = [illegible] अन्तःकरणत्रयस्य [illegible]

वशीशब्देनैव = [illegible]
गृहीत्वात् [illegible]

Sense object
तन्मात्राणां च = [illegible] वासनामात्ररूपाणाम् are mere impressions [illegible]

उपदेश्यम् = [illegible] प्रयोगिनं = [illegible]

x. प्रति साक्षात्प्रवृत्त्यादि - [illegible] कर्तृत्वेन = [illegible]

असिद्धेः = [illegible]

योगिनस्तु = [illegible] साक्षात्कृत तन्मात्रस्य [illegible]

[illegible]

(اس کو) स्वयमेव = آپ ہی (خود) परतत्त्व परिशीलन = [illegible]

प्रवर्तितस्य = اس [illegible]

उपदेश्यत्व = [illegible] अभावात = [illegible]

[illegible]

तस्मात एतत = اس کارن یہ بات स्वकीय मतम = [illegible]

[illegible]

असत = [illegible]

विमूढो = [illegible] अमूढवत = [illegible]

इति येन = [illegible] करणावर्गीयव = [illegible] संबन्धो

न तु = [illegible] आन्तरमपि = اندر کا करणेश्वरी चक्र = [illegible]

तस्य = [illegible] = ۔ चित् चमत्कार رو रूपत्वात

[illegible]

एवम् = [illegible] अभिधानस्य = [illegible] अयं आशयः =

[illegible]

यत = ۔ एष = یہ प्रकारात्मा = [illegible]

स्वस्वभाव [illegible] अति दुर्घटकारिणः = [illegible]

स्वातन्त्र्य [illegible] युगपथस्व = [illegible]

[illegible]

(85)

nothing but Pure Consciousness

संवित्तसारं च = شعور سار   करणेश्वरी चक्र = [illegible]

जडाभासरूपं च = [illegible]   करणवर्गो = [illegible]

एक तथैव = [illegible]   निर्भासयन = [illegible] → करणाते

प्रवृत्ति-स्थिति-संहृती = [illegible]

येन = جس   भगवत्या = [illegible]   करणेश्वर्यो = [illegible]

यथा = [illegible]   तत् तत = [illegible] भाव सृष्ट्यादि

विदधाति = [illegible]

तथा = [illegible]   करणवर्गो = [illegible]   जडोऽपि = [illegible]

तत्कारीव → [illegible]   लक्ष्यते = [illegible]

यद्यपि = [illegible]   रहस्य दृष्टौ = [illegible]

न कश्चित जड़ [illegible]   करण वर्गो प्रसौत [illegible]

अपि तु = [illegible]   विज्ञान देहा [illegible]

करणेश्वर्य एव = [illegible]   विजृम्भन्ते = [illegible]

तथापीह = [illegible]

सुप्रसिद्ध = [illegible]   प्रतीत्य = [illegible]

well accepted   older method

[illegible]

अनुसारेण = [illegible] उपदेश्य: = [illegible]

क्रमेण = [illegible] रहस्यार्थी = [illegible]

उपदेशे [illegible]

[illegible] ← अनुप्रविश्य = [illegible]

इत्येवमनुक्रमं = [illegible]

एवं च गोलकादिरूप करणावगे = [illegible]

प्रवृत्त्यादि क्रमेण = [illegible]

तत्प्रादिज्ञातृरूप = [illegible]

निजमरीचिचक्रं = [illegible]

चिन्वानेनैव = [illegible] ; तत उभय प्रचोदकं = [illegible]

श्रीमत्शंकरात्मकं = [illegible] स्वस्वरूप = [illegible]

परीक्षणीयं = [illegible]

यतः = [illegible] तत्प्राप्तौ = [illegible]

तदीय = [illegible] अकृत्रिम = [illegible]

स्वतन्त्रमास्य = [illegible]

(87)

* Such are examination is quite appropriate there & this new explained.

योगिनः = اس ہوگی — स्थाने = بجی

इत्यपक्लेनव [illegible] एव उक्तं = [illegible]

= [illegible] — परीक्षा इह

तदेव तदेव = [illegible] परीक्षया [illegible] = [illegible]

परमोपादेयत्वात = [illegible] = [illegible]

परीक्षितु [illegible] प्राक्यम = [illegible]

उक्तं युक्त्या = [illegible] सुखोपायत्वात

[illegible]

अत एव = [illegible] आदरेण = [illegible] →

अभिलषित विषय = [illegible] उपभोग = [illegible]

अनिरोधात्मना = [illegible] वर्तमानेन = [illegible]

Such an examination is quite in season according to the view here explained.

अतो = [illegible] "परीक्षणस्य" = [illegible] इह = [illegible]

उपदे = [illegible] अनुसारेण = [illegible]

प्राप्तकालता = [illegible] → It is not out of * point here

यथोक्तं रहस्यगुरुभिः [illegible]

* The "Kritya" affix in "परीक्ष्यम्" denotes worthiness, practicability timeliness, and command.

निज निजेषु पदेषु पतन्त्विमाः
करराववृत्तय उल्लसिता मम ।
क्षणमपीष्ट मनागपि मनै भू
त्वदविभेदरसक्षति साहसम् ॥ ?

निज निज ------ [illegible]

[illegible]

* परीक्ष्यम् = [illegible] कृत्य [illegible] = [illegible]

प्राक्ये = [illegible] प्राप्तकालतायो = [illegible]

प्रैषादौ च = [illegible] कृत्य = [illegible]

प्रथ च = [illegible] जड = [illegible] → करराववर्गो

यत् बलात् = [illegible] उपमूदवत् → [illegible]

प्रवृत्त्यादिलमते = [illegible] इति = [illegible]

सर्वस्य [illegible] अनुमनसाक्षिकम् = [illegible]

The author has by this rejected the view of Charvakas who attribute consciousness to senses etc.

अभिदधत् = [illegible] - [illegible] इन्द्रियाणि = [illegible]
चैतन्य वादि

चार्वाकमतमप्यनेन = [illegible] व्युदस्तवान् = [illegible]

Rejects -

20.6.67 अथ = [illegible] कथं उक्तं = [illegible] ततः तत्त्वात् = اس وجہ سے

चेतनत्ताम इव आसाद्य = [illegible] इन्द्रियाणि = [illegible] स्वयं = آپ ہی

प्रवृत्त्यादि = [illegible] लभन्त इति = [illegible] यावता = [illegible]

अये इव = [illegible] ग्राहक = [illegible] इच्छया = [illegible]

directs the senses. श्रोत्रादीनीव = [illegible] करणानि = [illegible] प्रेरयति = [illegible]

यदप्युक्तं = [illegible] तत्तत्त्वं = [illegible]

with effort. प्रयत्नेन = [illegible] परीक्ष्यम् इति = [illegible]

तत्र तदपि कथं = [illegible] यतः = [illegible] अस्माकम = इच्छा [illegible]

बहिरेव = [illegible] अनुधावति = [illegible]

न तु = [illegible] तत्त्वपरीक्षायां [illegible] प्रवर्तितुम = [illegible]

उत्सहते = [illegible] इत्य आशङ्कयाह = [illegible]

न ह्रीच्छानोदनस्यायं
प्रेरकत्वेन वर्तते ।
अपि त्वात्मबल स्पर्शा- — by the inspiration of the vitality of the Self
त्पुरुषस्तत्समो भवेत् ॥ ८॥

अयं = یہ, लौकिक: (पुरुष) = لوکک پرش इच्छैव = اچھا ہی نودنم = چابک
तस्य = اس (چابک) प्रेरकत्वेन = پریرک طور پر چابک = प्रोद:
करणप्रवर्तन = [illegible] अर्थव्यापारसाम = [illegible]
यस्मात् = [illegible] न प्रवर्तते = [illegible]
अपि तु = بلکہ — आत्मनश्चिद्रूपस्य = [illegible] यत बलं
स्पन्दतत्वात्मकं = [illegible]

तत्स्पर्शात् = اس کے [illegible] तत्कृता = اس سے کی ہوا
कियन्मात्राद् = [illegible] आवेशात् = [illegible]

तत्समो भवेत् = [illegible] →

अक्लान्तासार = [illegible] विप्रुड = [illegible] आभिषेकाद् = [illegible]

अचेतनोऽपि = [illegible] चेतनताम्
(जड़ होकर) आसादयत्येव = [illegible]

ततः = [illegible] तत तत्त्वे = [illegible] न केवलं = [illegible] करणानि = [illegible]

यावत् = [illegible] तत प्रेरकत्वेन = [illegible]

प्राक्तिते = [illegible] कल्पितमपि = [illegible]

प्रमातारं = [illegible] चेतनीकृत्य = [illegible]

स्वयं = [illegible] प्रवृत्त्यादि पात्रं = [illegible] करोति = [illegible]

येन = [illegible] परस्य = [illegible] —

प्रथम आभिमाना = [illegible] पहले = [illegible] करणानि = [illegible]

प्रेरयामीति = [illegible]

स्पन्दतत्त्वा = [illegible] अनुवेधे = [illegible] विनापि = [illegible]

तु = [illegible] स एव = [illegible]

न = نہ किंचित् अति = [illegible] करणानां = [illegible]

ग्राहकस्य च = [illegible] स्वरश्मिचक्र = [illegible]

प्रसर = [illegible] अनुवेधेन = [illegible]

चेतनीभाव = [illegible] तत्त्वं = وہ [illegible]

आपादके = [illegible]

परीक्ष्यमिति = [illegible]

युक्तमेव = [illegible]

[illegible marginal notes]

यदि = اگر पुनर = پھر इच्छया = (اپنی) خواہش سے प्रारब्धेन प्रतोदस्य रूपेण = چابک

करस्थानतरे = دوسری سواری ← دوسری سواری

कर्स्थानि
~~स्वप्रेरणाय~~ = اپنے چلانے ~~प्रपेक्षेत~~ प्रेरयेत = چلانا چاہیے

ततपि = تو इच्छारब्धेन = اپنی خواہش سے करस्थो

प्रेर्यत्वात = چلانے کی وجہ سے करस्थानतरे = دوسری سواری کو = اسکا چلانا

स्वप्रेरणाय = اپنی چلانے प्रपेक्षेत = اسکا

तदप्यपि ते अवस्था = اس سے بھی स्यात

यत्तुक्रम = جو exert अस्माकम इच्छा

न तत्र प्रवर्तितुमुत्सहते

इति = یہ अनाप्य = اس श्लोकार्थम = یہ

उपगमन साध्यं = وہ

परे = پر तु = تو उत्तरतया =

योऽयम = جو

The man cannot set his desire to work to examine the Reality.

पुरुषः

सत्यं = [illegible] नश्रय = [illegible] तत्त्वपरीक्षायै [illegible]

इच्छां = [illegible] प्रवर्तयितुं = [illegible]

प्राप्नोति = [illegible] न = [illegible] इच्छया = [illegible]

He is not capable of examining the Reality by desire.

तत्त्व = [illegible] विषयी = [illegible] क्षमः = [illegible]

कुतः

तस्य = [illegible]

अविकल्पप्रवृत्त्वादपि तु = [illegible]

विषयान् = [illegible] अनुधावन्ती [illegible] इच्छा = [illegible]

तत उपभोग = [illegible] पुरःसरे [illegible]

प्रसामर्थ्य = [illegible] यदा तु = [illegible]

अन्तरमुखात्मात्म = [illegible] अप्रात्वालं = [illegible] → स्वदतत्त्वं = [illegible]

स्वकरणानां = [illegible] चेतनां च [illegible] प्रहे [illegible]

स्पृशति = [illegible] तदा = [illegible]

तत्समो = [illegible] भवेत् = [illegible] →

तत्समावेशात् [illegible] ततवत = [illegible]

सर्वत्र = [illegible] स्वान्त्रताम = [illegible]

प्रासादय

इत्य एव = [illegible] - यस्मात् एवम् - तस्मात् तत्त्व परीक्षम

इत्यर्थः - [illegible]

Possible

سے

اکبر

[illegible]

[illegible] शक्तिभूमेः = [illegible] स्पर्श प्रधानत्वात्
[illegible] Sensation to Touch [illegible]

आत्मबल स्पर्शात् [illegible] इत्य उक्तं = اس طرح کہا

ननु = [illegible] च = اور अयं कृत्री = [illegible] परमेश्वरमयोऽपि
= [illegible]

किं न सदा [illegible] पारिपूर्ण्येन [illegible] स्फुरति [illegible]

कस्मात् अन्तर्मुखात्म बल स्पर्श = [illegible] Introspection [illegible]

अपेक्षात = [illegible]

इत्याशङ्क्याह = [illegible]

निजाशुद्ध्यासमर्थस्य
कर्तव्येष्वभिलाषिणः ।
यदा क्षोभः प्रलीयेत
तदा स्यात्परमं पदम् ॥ ९ ॥

निजा → स्वात्मीया = پنی ذاتی | स्वस्वातन्त्र्योल्ला सिता = اپنی ذات کی آزادی سے

येयं = یہ | स्वरूप प्रविमर्षी = اپنے سروپ کو [illegible] | स्वभाव = سوبھاؤ

→ इच्छाशक्ति اچھا شکتی = وہی جو اچھا کاری

संकुचिता = سنکوچت ہوئی | → सत्यपूर्णमहत्ता

अपूर्णता = پوری نہ ہونا | → प्राणव मल = وہی آنو مل

तत मल उत्थित = اٹھنا | उत्थित = اٹھا | कञ्चुक पञ्चक = پانچ کنچک

← निलत्वत = یہی مل | ज्ञानशक्ति گیان شکتی | कर्मेन्द्रिय = کرم

भेद = سर्वज्ञत्व = سروگیہ | किंचित ज्ञत्वात

अन्तःकरण = وہی انترکرن | बुद्धीन्द्रिय = بدھی اندریہ

प्रापत्ति = [illegible]

अपूर्णम = ادھورا | प्रत्यन्त = بہت زیادہ

संकोचग्रहणान = سنکوچ گرہن | भिन्न वेद्य प्रथायाः →

मायीयं मलम = مائیہ مل

अशुद्धिरेव = یہی اشدھی

क्रियाशक्ति = [illegible] अमेश = [illegible] भेद = [illegible]

सर्वकर्तृत्व किंचित् = [illegible] कर्तृत्व

कर्मेन्द्रियरूप = [illegible]

संकोचग्रहण = [illegible] पविम अतन्यातं परिमितता

[illegible] limitation [illegible]

प्राप्ता = [illegible] शुभाशुभ अनुष्ठानमयं

[illegible]

अणुद्धि = [illegible] कर्म मलमप्य

[illegible]

तस्य तया = [illegible] असमिथस्य पूर्णत्व कर्तृत्व

[illegible]

अविकलस्य = [illegible] तत्रैव [illegible]

कर्तव्येषु = [illegible] → लौकिक शास्त्रीयानुष्ठानेषु

[illegible]

अभिलाषिणो = [illegible] ~~[illegible]~~ → [illegible]

नित्य = [illegible] अभिलाषव्याकुलस्य

[illegible]

तत्सत्व = [illegible] सामर्थ्य = [illegible]

अलब्धस्वरूप विज्ञाते = [illegible] यदा = جب [illegible]

उक्त = کہے ہوئے [illegible] वक्ष्यमाण = [illegible] उपपत्त्य = [illegible]

अनुभव = [illegible] अवष्टम्भ = [illegible]

अभिलाष विवक्षा = [illegible] ग्राहक = گراہک [illegible]

अभिमानात्मा [illegible] क्षोभः = [illegible]

प्रलीयेत = [illegible] → अनात्मन्यात्म अभिमान [illegible]

निवृत्त पुरःसर = [illegible] आत्मन्यनात्म अभिमान [illegible]

उपशान्ति = [illegible]

प्रकैश = [illegible] लीयेत = [illegible] तदा = تب

परमे स्पन्द तत्त्वात्मके पदे = [illegible] स्याद = [illegible] अस्य = [illegible]

→ प्रत्यभिज्ञा = [illegible] विषयतां = [illegible]

यायात् = [illegible] इत्यर्थः = [illegible]

[illegible] यदा क्रियेये परिशीलितं तदा भैरवे वपु ॥

(98) [illegible]

which not takes place then & there

because it is eternal

न तु = [illegible] तदैव भवेति = [illegible] नित्यत्वात् = [illegible]

तस्य

उक्तं च विज्ञानभैरवे = [illegible] मानसं चेतना शक्तिरात्मा चेति चतुष्टयम् ॥

[illegible]

इति = [illegible] निज अपह्नवादि = [illegible]

प्राक्ठेन मल नाम [illegible] द्रव्यं = [illegible]

पृथक् भूतम = [illegible] प्रसीत = [illegible]

Those who think that this impurity is something separate

इत्यये = [illegible] प्रतिपन्नास्ते = [illegible]

दूष्यत्वेन have critised [illegible] कटाक्षिता: = [illegible]

— [illegible]

तदास्याकृत्रिमो धर्मो
ज्ञत्व कर्तृत्व लक्षणः ।
यतस्तदेप्सितं सर्वं
जानाति च करोति च ॥ १० ॥

(99)

×· Such Reality will be devoid of any activity

21/6 ननु च = [illegible] ग्राहक = [illegible] अहंभावात्मनि = [illegible]

[illegible] ← क्षोभे क्षीणे = [illegible] निस्तरङ्ग = [illegible] जलधि = سمندر

प्रख्यम = [illegible] अस्पन्दमेव = [illegible] तत्त्वं = [illegible] Reality

[illegible] ← प्रसक्तमित्य = [illegible] आशङ्कां शमयति = [illegible]

तदा → [illegible] अकृत्रिमा → Real & not artificial,

धर्मो → nature flashes forth, ज्ञातृकर्तृत्वलक्षण:

[illegible]

यत: = [illegible] तदृदितं सर्वं ...... [illegible]

तत इत्य = [illegible] उपदेश अपेक्षया = [illegible] अकृत्रिम: = [illegible]

सहजो = [illegible] धर्म: = [illegible]

प्राक = [illegible]

निर्दिष्ट = [illegible] स्वतन्त्रतारूप = [illegible]

परमेश्वरस्वभावो = [illegible] ज्ञातृकर्तृत्वे = [illegible]

सामरस्य = [illegible] अवस्थित = [illegible]

प्रकाशानन्दात्मनी = [illegible] ज्ञानक्रिये = [illegible]

लक्षणम = [illegible] अव्यभिचारि = [illegible] स्वरूप = [illegible]

यस्य = [illegible] तादृक् = [illegible] तदा = [illegible]

क्षोभ उपशमे = [illegible] अस्य = [illegible]

ظاہر स्याद् = ہے، ظاہر प्रभिव्यक्त = ظاہر ہو جاتا इत्यर्थः = یہ مطلب ہے

कुतः = کیوں کہ ایتد् एतद् = ظاہر प्रभिव्यक्तं = ظاہر ہوتا इत्याह = یہی بیان کرتے ہیں

यतः = جبکہ तदा = تب परमपद प्रवेश समये = پرم پد میں داخل ہونے کے وقت

सर्वेम = سارا ईप्सितम = چاہا ہوا →

यत्यत् जिज्ञासितं = جو جو چاہا ہوا इति चिकीर्षितं = جو جو کرنا چاہا ہوا

उपस्थ = [illegible] तत प्राविश्याम उपभुक्त = اسی کو جو [illegible] ہے

→ तत्तत् जानाति च करोति च = وہ اس کو [illegible] اور [illegible]

चकारद्वय = 'च' دو بار یوگپدیم = ایک ساتھ

ज्ञापयतुः = [illegible] - [illegible]

नतु = نہ کہ यथा = جیسے एके = ایک

चकाराभ्यां = دو "च" [illegible] ज्ञानक्रियो = [illegible] اور کرنا

एकात्म्यं = ایک ہونا सूचयतीति = [illegible] [illegible]

[illegible]

तत्त्वि = [illegible] ज्ञातृत्वकर्तृत्व = [illegible] लक्षण = [illegible]

एव = [illegible] इत्थं = [illegible] = [illegible]

धर्म = [illegible] विशेषणेन = [illegible]

संबन्धिनिर्देशेन = [illegible]

वास्तव = [illegible] स्वरूप = [illegible] अभिधास्यते = [illegible]

उक्रम् = [illegible]

अथ: = [illegible] यत: = [illegible] करणे = [illegible] इति = [illegible]

{ निजाशुद्ध्येति = [illegible] ([illegible])

{ सूत्रप्रतिपादितो = [illegible] उन्मेष क्रम समाधान

[illegible] → [illegible] = साक्षात्कृतस्य

स्पन्दतत्त्वस्य = [illegible] दृढावष्टम्भात = [illegible] By firm grasp

एवं व्युत्थानमपि = [illegible] समाधि एकरसं = [illegible] by fixed attention कुर्वतो

भव: = [illegible] उच्छेदो = [illegible] भवेत

इत्याह: = [illegible]

– [illegible] explain

तमधिष्ठातृभावेन
स्वभावमवलोकयन्
स्मयमान इवास्तेय-
उक्तउपपत्त्युलब्धय स्तस्येयं कुसृतिः कुतः ॥२२॥

[illegible]

अनुशीलन = [illegible]   प्रत्यभिसन्धत्ते = [illegible]

ते स्पन्दतत्त्वात्मकं = اس سپند تتو کو   स्वभावम् = اپنے سوبھاؤ کو

आत्मीयम् = اپنا   अधिष्ठातृभावेन = مالک بھاؤ سے

व्युत्थानदशायामपि = [illegible] میں بھی   व्याप्नुवन्तम् = ویاپی کر

अवलोकयन् = دیکھتا ہوا   → प्रविष्टवान्: [illegible]

"न व्रजेन्न विशेच्छक्तिर्मरुद्रूपा विकासिते ।
निर्विकल्पतया मध्ये तया भैरवरूपधृक् ॥" → तक

न = نہ   व्रजेत = [illegible]   न विशेत = نہ اندر جاتا ہے

शक्ति = [illegible]   मरुद्रूपा = [illegible]   विकासिते = [illegible]

निर्विकल्पतया = [illegible]   तया भैरवरूपधृक

मध्ये = [illegible]

[illegible]

अपि तथा = ایسے ہی

"सर्वाः प्रान्तिश्चेतसा दर्शनाद्याः
स्वे स्वे वेद्ये यौगपद्येन विष्वक्।
क्षिप्त्वा मध्ये हाटकस्तम्भभूत-
स्तिष्ठन्विश्वाकार एकोऽवभासि॥"

सर्वाः प्रान्ति = سبھی اندریاں चेतसा = من کی दर्शनाद्याः = دیکھنے وغیرہ ہمارے آنکھ کان وغیرہ

स्वे स्वे विद्ये = اپنے اپنے وِشے

यौगपद्येन = ایک ہی وقت میں विष्वक् = ہر طرف

क्षिप्त्वा = پھینک کر मध्ये = بیچ میں [illegible]

زبانی اپنا اپنا کام چھوڑ کر

हाटकस्तम्भभूत = سونا بن کر کھمبا [illegible] तिष्ठन् = رہتے ہوئے

विश्वाकार = سبھی آکار والے एकोऽवभासि = ایک ہی ظاہر ہوتا ہے

[illegible] श्रीविज्ञान भैरव कक्ष्यास्तोत्र निर्दिष्ट संप्रदाययुक्तया

اس طرح شری وگیان بھیرو کا کچھیا ستوتر اس میں جو سمپردائے دکھایا ہے - اسی کے مطابق

[illegible] निमीलन-उन्मीलन = بند کرنا کھولنا [illegible] समाधिना = اسی سمادھی سے

युगपद् = ایک دم - ایک ہی व्यापक = سب میں ویاپک

ان حقوق سماؤں کی اس کی رگڑ [illegible]

[illegible]

मध्यभूम्यै [illegible] प्रवेशम् = [illegible]

प्रध्यासित = [illegible] इतव उभयं = [illegible]

विसर्गआरम्भ स्फारित [illegible] विगलित = [illegible]

सकल विकल्पो = [illegible] उपक्रम = [illegible]

स्फारित = [illegible] करणचक्रः = [illegible]

"अन्तर्लक्ष्यो बहिर्दृष्टिर्निमेषोन्मेषवर्जितः।
इयं सा भैरवी मुद्रा सर्वतन्त्रेषु गोपिता॥"

इत्याम्नात = [illegible] भगवद्भैरव मुद्रा = [illegible] प्रानुप्रविष्टो

मुकुरान्त = [illegible] निमज्जत् = ڈوبا ہوا उन्मज्जत् = [illegible]

नाना = [illegible] प्रतिबिम्ब = عکس [illegible] कदम्ब = [illegible]

कल्पन = [illegible] प्रकल्पं = [illegible] भावराशि = [illegible]

चिदाकाश = [illegible] एव अदितमपि = [illegible]

तत्रैव विलीयमान = [illegible] पश्यन् = [illegible]

[illegible]

जन्मसहस्र = ہزاروں جنموں میں — अपूर्वे = اپوروا جو نہ ہو — परमानन्दघन = پرم آنند کی

लोकोत्तर = لوک سے اتم — स्वस्वरूप प्रत्यभिज्ञानात् = اس سوروپ کی پہچان سے

झटिति = جلدی — त्रुटित सकल वृत्ति = سب ورتیوں کی ترٹی ہوئی

स्मयमानो = حیرانی میں ہو کر — विस्मय मुद्रा = آسچرج مدرا میں

अनुप्रविष्ट इव = گویا گھسا ہوا — महाविकास प्रसादनात् च = بڑی ترقی کا اس پر اثر کرنے

सहसैव = ایک دم — समुदित = ادے میں آیا — समुचित = ہو یا

तात्विक स्वभावो = اصلی سوبھاؤ

यो योगीन्द्र = جو یوگیندر — आस्ते → = رہتا ہے — अतिस्तुति

न तु = نہیں — प्रबन्धमात् = اس طرف سے

शिथिली भवति = ڈھیلا ہو جاتا ہے — [illegible] — तस्य इयम = اس پر کی

= یہ [illegible] — सकल जगत्कम्पकारिणी = سارے جگت کو کپکپانے والی ہے

कुत्सिता = نندت → ضروری میں باندھنے والی ہی — जन्म मरणादि प्रबन्धरूपा

स्रोत → प्रवृत्ति = اس کی [illegible]

یہ ساری ہزاروں جنموں کی [illegible] سمجھ کر [illegible] ہو گئی

कुतो = کہاں سے   निज प्रबुद्धि = [illegible] लक्षणस्य

तत हेतु = اس لئے [illegible]   प्रभावात = [illegible]

नैव भवती = [illegible]   इत्यर्थः = [illegible]

"तत्त्वे निश्चलचित्तस्तु भुञ्जानो विषयानपि।
नैव संस्पृश्यते दोषैः पद्मपत्रमिवाम्भसा॥
विषापहारिमन्त्रादिसन्नद्धो भक्षयन्नपि।
विषं न मुह्यते तेन तद्वद्योगी महामतिः॥"

तत्त्वे = [illegible]   निश्चलचित: = [illegible]   तु = [illegible]

भुञ्जानो = [illegible]   विषयानपि = [illegible]

नैव = نہ   संस्पृश्यते = [illegible]   दोषै = [illegible]

पद्मपत्रमिवाम्भसा = [illegible]

विषापहारि = زہر کو دور کرنے والا   मन्त्रादि = منتر آدی

सन्नद्धो = [illegible]   भक्षयन्नपि = [illegible]

विषं न मुह्यते = [illegible]   तेन = اس سے

तत् वत् = [illegible] योगी = [illegible] महामतिः = [illegible]

अथ ये = [illegible] श्रुत्यन्तविद् = ویدانتی अक्षपाद = نیائیک

माध्यमिकादयः = مادھیمک آدی क्षोभ = प्रलये = [illegible]

विश्वोद्भेदरूपम् अभावात्मकम् = [illegible] तत्त्वत = ٹھیک

सर्वापह्नुवत = [illegible]

इत्युपादिक्षन् – [illegible] तान् प्रतिबोधयितुं [illegible]

तत उपगत = [illegible] तत्त्व = ٹھیک

प्रतिपक्षयेरा = [illegible] लोकोत्तरता = [illegible]

प्रकरणशरीरस्य = [illegible] – स्पन्दतत्त्वस्य = [illegible]

निरूपयति. نروپن کرتا ہے

नाभावो भाव्यतामेति
न च तत्रास्त्यमूढता ।
यतोऽभियोग संस्पर्शी –
त्तदासीदिति निश्चयः ॥२२॥

अतस्तत्कृत्रिमं ज्ञेयं
सौषुप्तपदवत्सदा ।
नत्वेवं स्मर्यमाणत्व
तत्तत्त्वं प्रतिपद्यते ॥१३॥

इत्याद्युक्त्या = [illegible] श्रुत्यन्तविदा = [illegible] आदिभिमतो [illegible]

(अभावो = [illegible] भाव्यतो = [illegible]

Cannot exist. न इति) = [illegible] → भावनाया = [illegible]

भाव्यवस्तु = [illegible] विषयत्वात = [illegible]

अभावस्य = [illegible] न = [illegible] किंचित = [illegible] ([illegible])

भाव्यमानतायां = [illegible] ([illegible]) किंचित्वे = [illegible]

सत्यभावत्व अभावात् [illegible] किं च = [illegible]

Conceiver [illegible] भावकस्यापि [illegible] यत्र अभावः = [illegible] ([illegible])

स विश्वच्छेदः = [illegible]

[illegible] कथं भावनी = [illegible] How can that be conceived

*: The conceiver is artificial. And he becomes & one with non-existence. He brings in to conception the destruction of the world by means with immaginatiōn & on the maturity of the (109) conception, cannot help becoming one with non-existence, being identical with the existing.

भावकाभ्युपगमे = [illegible] तु = [illegible] न विश्वोच्छेदो

& of conceiver remain, then there is no विश्वोच्छेद। [illegible]

= دنیا کا [illegible] نہیں ہو جاتا ہے۔

भावकस्य = [illegible] रूपविशिष्यमाणत्वात् [illegible] इति

[illegible] न विश्व अभाव = [illegible] एव तत्त्वम् (in reality)

= [illegible] نہیں ہے۔

*| रूपस्य [illegible] कल्पितोऽयं = (by immagination) [illegible] भावको (conceiver)

([illegible])

विश्वोच्छेदं = [illegible] विकल्पकल्प्यमानं

= [illegible] ہے۔

भावयन् [illegible] = भावना परिनिष्पत्तौ

([illegible]) = [illegible] ([illegible])

[illegible] } भाव्यताद् = [illegible] रूपात्याद् = [illegible] रूपभावरूपः

= ([illegible]) [illegible]

संपद्यत = [illegible] इति

पक्षः [illegible] तत्र उच्यते

= [illegible]

तत्र = [illegible], अभाव भावनायां [illegible]

** न अमूढता = [illegible] न च तत्र अस्य मूढता

non-unconciousness [illegible] =

अपि तु मोह एव अस्ति।

"...... यत् यत् एव इति भाव्यते = - جو جو ہے وہ ہو سکتا ہے

भावनापरिनिष्पत्तौ तत्स्फुट कल्पधीफलम्"

جو وہی بھاؤنا میں لایا جائے - بھاؤنا پر سدھ ہونے سے وہ پرکٹ ہے کلپنا سے پرے بھی ہوتی ہے - یہ اس کا پھل ہے
(یہ بیان ہو چکا ہے)

इति न्यायादि = اس نیائے سے । विश्वचक्षोतमल्य = دنیا کی آنکھ کی طرح प्रभावे = پربھاؤ سے
(اس اعتبار سے) - اعلاقی =

मगर भाव्यमान = بھاؤنا میں لایا न कदा = نہیں کبھی

चित्परमार्थी = چت پرمارتھی प्राप्ति = پراپتی भवति = ہوتی ہے

अथोच्यते = ورنہ کہا

" सर्वालम्बनधर्मैश्च सर्वतत्त्वैरशेषत:
सर्वक्लेशाशयै: शून्यं, न शून्यं परमार्थत:"

سارا جہان جو ہیں ودھیا دھرم سے سب ٹوٹوں سے پرے ہے - سب شونیہ ہے - شونیہ ہے -
مگر شونیہ نہیں اس لحاظ سے -

इति = اس طرح । नागार्जुन उक्तं = ناگارجن کی بات

इदमं - اس کو । तत् शून्यम इति = وہ شونیہ
= کہا ہے

(ہو بنی) - جو
सत्यं = سچ यदि = اگر चिदानन्दघना

स्वतन्त्रा पारमार्थिकी = ہو بھی = اپنی [illegible] (ہو بنی) भित्तिभूता भू.

ثابت ہے प्रथ्यं उदेयते = اپنی ادائی پاتا यथा = جیسے

विज्ञानभैरवादौ = [illegible] पारमेश्वरी = پرمیشوری

" दिक्काल कलना तीता "

" دیش - کال - اندکی کلنا سے دور رہی "

इत्यादिना = وغیرہ पारमार्थिकी = حقیقی

भित्तिभूतां = بنیادی चित भूमिम = چت بھومی

तत प्रवस्थाप्य = ٹھہرا کر शून्यभावेन उक्तौ = شونیہ بھاو سے کہی

अन्यथा = اگر نہیں न शून्यम् इति = شونیہ نہیں

→ शून्यैव = شونیہ = ہی = [illegible]

" यतयत एव = جہاں جہاں " प्रीत = خوشی

भाव्यते = [illegible] इति प्रतिपादितत्वात् = [illegible] +

which atheists ascribe to it

"सावस्था काप्यविज्ञेया मादृशां शून्यतोच्यते
न पुनर लोकरूढ्येव नास्तिक्यार्थानुपातिनी"

सावस्था = وہ حالت → [illegible] काप्य = کوئی अविज्ञेया = نا جانی मादृशां = مجھ جیسوں کے

शून्योच्यते = خلا کہی جاتی ہے [illegible]

न पुनर = نہ پھر लोकरूढ्येन = [illegible] नास्तिक्य अर्थ
= [illegible] अनुपातिनी

इत्य = ایسا आलोकमाला = [illegible] उक्ते = کہنے
याम

you are justified in saying that — तन्नु सत्यं = سچ ہے → वा दृशाम = [illegible]

अविज्ञेया = نا جانی (ہے) → کیوں अविज्ञेयत्वात
= کیونکہ نا جانی

this is inexpressible — वक्तम = [illegible] अशक्य = [illegible]

उच्यतां = کہی جائے ایسا शून्यत = [illegible]

But how is it called vacuum. — इति = ایسا तु = لیکن कुत: = [illegible] शून्तापि [illegible]

यावत भाव्यते = [illegible] तावत = تب تک

विकल्प = [illegible] उल्लिखतम = [illegible] असौ

विवेज्ञेय = [illegible]

Because even vacuum is verily knowable inasmuch as it is conceived & expressed by imagination

यदि च = اگر तादृशो सा = ویسا وہ ज्ञातुम् = جاننے

अपृथक्या = نہ سکی [illegible] ततः = وہ

तत्पद = اس کا साक्षात्कार = [illegible] अभिसत्यामा [illegible]

सद्गुरु = [illegible] सपर्या = سیوا कार्या = کرنی چاہئے

न तु = نہ کہ प्रोच्यते = کہا گیا इति = ایسا [illegible]

[illegible] स्वमनीषिकयैव [illegible] व्यवहृत्यात्का [illegible]

आत्मा = [illegible] परब्रह्म = [illegible] अगाधे = [illegible]

महामोहे = بڑے موہ میں निक्षेप्तव्ये = نہ ڈالنا چاہئے

इत्यलम् = بس بہت بات ہو گئی

अथ = اب कतो = کس سے ज्ञात = جانا

तत्र मूढता अस्ति = وہاں نادانی ہے इत्य = ایسا

पत्र = خط अन्ते = آخر उत्तरं = جواب

पाठ = سبق "यतः" = جس इति —

अभियोगः = [illegible] → समाधान अथितस्य
[illegible] =

कीदृग् अहं आसम् इति - "[illegible]" - سوچا।

तत् अवस्था = اس حالت। अभिमुख [illegible]

विमर्शात्मक = [illegible] अभिलापः = [illegible]

तत् संस्पर्शात् = [illegible] तत् वशात् हेत

तत = वह "आसीत इति" [illegible] = [illegible]

यतो = سوچا। = [illegible]

निश्चयः = [illegible]

" गाढमूढो अहम् आसम् " इति - [illegible]

= سوچا। यतः = [illegible] आसित = [illegible]

प्रतिपत्ति = [illegible] अपेता [illegible]

मोहावस्थैव = [illegible] सा = वह

सा कल्पिता = [illegible]

तथा = [illegible] स्मर्यमाणत्वात् = [illegible] सा च = وہ

अनुभूयमानत्वात् = [illegible] अनुभवितृ = [illegible] ([illegible])

प्रमातु = [illegible] अवस्थातृरूप = [illegible]

प्रत्युत = بلکہ सत्तामस्य = [illegible] प्राविद्यते = [illegible]

न तु अभावम् इति = [illegible] ([illegible]) वि

विश्व अभावावस्थायां = [illegible]

مگر चिद्रूपस्य अखण्डतमेव = [illegible]

रूपं तिष्ठती [illegible]

इति = [illegible]

इति = یعنی न अमुष्य = [illegible] ([illegible]) अभाव = [illegible]

जातुचित् = [illegible] उक्तं = [illegible]

शक्यते = [illegible] इत्य = [illegible] उक्तं भवति = [illegible]

ननु = [illegible] दृष्टं = [illegible] निश्चितं = [illegible]

नीलादि = [illegible] स स्मर्यते = [illegible]

न तु प्रान्यभूतस्य = جو شونیہ ہوئے ہیں   अन्यभूत बुद्धि वृत्ते = بدھی ورتی جو نہ ہو گئی } ..

तत् निश्चयो ऽस्ति = اس کا نشچے نہیں ہو سکتا

तत् कथं उक्तं = اس کا کیوں کہا ہے کہ   तत् आसीत् इति = وہ تھا

= ہوا।   उत्तरकाल = بعد میں نشچے کر ... سمادھی سے اٹھنے کے بعد یہ بات

निश्चयात् = نشچے سے।   मूढता सा इति = [illegible]
[یہ بات کس طرح کہی] - اسکی مورکھتا ہے

उच्यते = کہا جاتا ہے   वेद्यस्यैषा गति = یہ گتی ویدیہ کی ہے
.*. { "یہ لوکک ویدیہ کی شونیتا ہے"

यस्मात् = جس کارن سے   तत् = ∞ → इदन्तासारं = ? ایدنتا سار

इदन्तया = ایدنتا سے   यावत् = جب تک

प्रमाता = پرماتا سے   स्वात्म = اپنے سروپ

उपारूढ अपरामृष्टत्व = اپنا آپ کر - اپنے سروپ کو نہیں   न निश्चेतुं शक्यते
تب تک کچھ نشچے نہیں کیا جا سکتا -

جب تک ویدک پرماتا اپنے آپ کو نہ جانے ... [illegible]

[illegible] वेदकस्य तु = ویدک کا تو جواب -   कल्पित शून्याद्यवस्थासु
= کلپت جو شونیہ وغیرہ اوستھا میں۔

संकुचितरूपं = [illegible] प्रसांकेतिक = [illegible]

अहन्ता परामर्श = [illegible] एव इति = [illegible] न तस्य = [illegible]

स्वात्मनि = [illegible] पृथक्का = [illegible] परिस्त

न = [illegible] तत = [illegible] निश्चायको = [illegible]

विकल्पः = [illegible] ([illegible]) . इदं = [illegible]

अहं विमृश्यमेव = [illegible] तदा = [illegible]

स्वसंवेदनेनैव = [illegible] सिद्धं = [illegible]

शून्यप्रमातृरूपं = [illegible]

विश्वप्रतियोगित्वात् च = [illegible]

संकोचसारं = [illegible] सतः = [illegible]

उत्तरकाले = [illegible] स्मर्यते = [illegible]

इति = [illegible] न = [illegible] काचित् = [illegible]

अनुपपत्तिः = [illegible] यस्मात् = [illegible]

एतत् = [illegible] तत् शून्यात्मकं = [illegible]

कृत्रिमम् = [illegible] (पद [illegible])

"तस्माद्भूतम भूतं वा यद् यद् स्वाति भाव्यते"

तस्माद = [illegible] यत्यत (सत्यति) = [illegible] भूतम = [illegible] प्रभूतं = [illegible]

भाव्यते = [illegible]

इति तत उक्तैव नीत्या = [illegible]

प्रभूतं = [illegible] भावानद्वैव [illegible] उत्थापितं = [illegible]

परमेश्वरस्यैव = [illegible] ज्ञानगोपनाय = [illegible]

मूढानां = [illegible] उपेयतया

तथाभासिम् इत्यर्थः = [illegible] [[illegible]]

ज्ञेयं = [illegible] ज्ञातव्यं = [illegible] ज्ञेयरूपं = [illegible]

The knowable & the form of the knowable are like sound sleep. [illegible]

स सदा = [illegible] सुषुप्तवद् इति दृष्टान्तः [illegible]

अयं भाव: [illegible]

सदा = [illegible] सुषुप्तं = [illegible] मोहरूपम = [illegible]

अप्रयास सिद्ध [illegible]

सर्वस्य अस्यैव = [illegible] =

तदा = [illegible] किम = [illegible] अनेन समाधि प्रयत्नेन = [illegible]

It being so of what use is it to acquire the state of ... Shuniya by the effort of meditation

उपार्जितेन = [illegible] अन्येन शून्येन = [illegible]

कृत्य = [illegible] द्वयस्यापि = [illegible]

अवस्तुतु = [illegible]

अविशेषाद् इति = [illegible] इति = [illegible]

प्रायश्च = [illegible] अस्मिन शून्ये = [illegible]

३. दुरुत्तरे = [illegible] ३. → मा महामोहार्णवः = [illegible]

[illegible] वेदान्ततत्त्वविद = [illegible] ब्रह्मवाद = [illegible]

सांख्य = [illegible] सौगतादि = [illegible]

[illegible] | प्राया (बहवो) = [illegible] अनुप्रविष्टाः = [illegible]

स्पन्द तत्त्व समाविविक्षणामपि च = [illegible]

शिथिलीभूत प्रयत्नाना = [illegible]

[illegible] शून्यम इति विप्रभूतम = [illegible]

यद् वक्ष्यति = [illegible]

अथ आरभ्य = [illegible]

"तदा तस्मिन् महाव्योम्नि"

अन्य 'सौक्षुप्तपदवन्मूढ.....'

इति = [illegible] एतत् = [illegible] एतद्दुष्टमिदं = [illegible]

ग्रन्थकारस्य = گرنتھ کار کی महान् = بڑا संरम्भ = [illegible]

लक्ष्यते = [illegible] has spared no pains

तथा च इह = [illegible] प्रयतत एव = [illegible]

ततः निरासीयापि = [illegible] पुनरपि = پھر بھی

निराक्रियते = [illegible]

"कार्योन्मुखः प्रयत्नो यः........."

اس میں

ततः = [illegible] एषस्माभि = [illegible] इतरत्र दृष्टाया

contradiction [illegible] = एषारम्भः

कृत = [illegible], इति = [illegible] न = نہ नः = [illegible]

कोपः = [illegible] कार्यो = [illegible]

एवं भवद्भिरपि = [illegible] उपदेश [illegible]

निभालन = [illegible] दत्तकर्णाः = [illegible]

सौगतेषु दूषितेषु = [illegible] शून्यतावादयो = ویدانتی وغیرہ

दूषिता एव = [illegible]

because their contention is similar. Hence I have not gone into details.

तत्त्वन्यायत्वात् = [illegible] इति न प्रपञ्च्याधिकमुक्तं = [illegible]

तत् इदानीं = [illegible] प्रकृतमेव = [illegible]

ब्रूमहे = کہتے ہیں Now let us turn to the subject.

तत्तु = [illegible] स्पन्दाख्यं = [illegible]

इति = [illegible] तत्त्वमेव शून्यवत् = [illegible] न = [illegible]

स्मर्यमाणत्वं = [illegible] प्रतिपद्यते = [illegible]

([illegible])

तस्य = [illegible] सर्वदा = ہر وقت पुनस्स्फुट = [illegible]

उपलब्धृकरूपस्य = [illegible]

कदाचिदप्य = [illegible] अनुपलभ्यत्व = [illegible]

अप्रयोगात् = [illegible] ([illegible])

तथा च आह = [illegible]

" विज्ञातारमरे केन विज्ञानीयात् "

[illegible] 13.

Ah! By what means can one know the Knower.

यद्यपि च = اگرچہ   १. समावेशदशा = سماویش دشا

व्युत्थितेन = دنیاوی حالت میں اس نے   प्राणादिसंस्कारवशात = پران وغیرہ کے سنسکار کی وجہ سے

२ स्मर्यते = سمرن میں لایا جاتا ہے

तथापि = تو بھی   न = نہ   तावतदेव = اتنے سے ہی

स्पन्दतत्त्वमपि = سپند تتو بھی ... ہے سپندن

११ सर्वानुस्यूता = سب چیزوں میں   स्पन्दबहिष्कृत = سپندن سے باہر کوئی بھی شے نہیں ہے =

प्रकाश = پرکاش   आनन्दसार = آنند سے بھرپور

परप्रमातृरूपमेव = پر پرماتا ہی ہے

ततः यत् वक्ष्यति = جو کہے گا ۔ ٧.

" तस्माच्छब्दार्थचिन्तासु न सावस्था न या शिवः " ॥

इति = [illegible] अतः = [illegible] रूपस्य = [illegible]

अनवच्छिन्न चमत्काररूपस्य = [illegible] न जातुचित = [illegible]

स्मर्यमाणत्वं = [illegible] मूढत्वं वा = [illegible]

यस्तु = [illegible] तत = [illegible] तत्त्वम = [illegible]

इत्य इह = [illegible] तत शब्देन = [illegible]

+ अस्य निर्देशः कृतः सो = [illegible] "स्वातन्त्र्यामुक्तमात्मानं ...."

इति श्री प्रत्यभिज्ञाकारिको = [illegible] उक्तनीत्या = [illegible]

कल्पित = [illegible] सैव अपारमार्थिक स्वरूपस्य = [illegible]

न तु = [illegible] तत्त्वतः = [illegible] अपारमार्थिकस्य = [illegible]

"न प्रतिपद्यते" = [illegible] इत्यनेन = इदं आह [illegible]

→ रूपस्य तत्त्वस्य = [illegible] स्मर्यमाणत्वेन = [illegible]

प्रतीति इव = [illegible]

न आभासती इति = [illegible] — [illegible]

ननु = شبہ ہے "यत्र = جس میں" स्थितम इत्यादौ = اس میں موجود اور ٹھہرا ہوا

चिद्रूपस्यैव = چیتن روپ کا ہی — اس کو تمام کائنات विश्वकार्यरूपता ग्राहित्वम उक्तं = اس میں کہا گیا کہ تمام کائنات کا کار یہ روپ میں اس کے گرہن کرنے والا کہا ہے — اس کو گرہن کرنے والا کہا

= کہا گیا तत ध्यान उत्थापितं = اس دھیان سے اٹھایا گیا

कृत्रिमम अभावात्म = اس کا روپ جو بناوٹی ہے तेनैव = اسی سے
क रूपं
روپ — بناوٹی ہے गृहीतम इति = کہ اس کو گرہن کیا ہے =

कथम अस्य = کیسے اس کا روپ بن سکتا ہے کہ اس کا ,पनवच्छिन्न चमत्कार रूपम
— جو روپ کبھی دور نہ ہو وہی ان کا روپ ہے = सूदत्वम

इत्य आशङ्कयामाह = اس شنکا پر کہا ہے
क

अवस्थायुगलं चात्र
कार्यकर्तृत्व शब्दितम् ।
कार्यता क्षयिणी तत्र
कर्तृत्वं पुनरक्षयम् ॥२४॥

कार्योन्मुख : प्रयत्नो य :
केवलम् सोऽत्र लुप्यते ।

तस्मिंल्लुप्ते विलुप्तोऽस्मी-
त्यबुधः प्रतिपद्यते ॥२५॥
न तु योऽन्तर्मुखो भावः
सर्वज्ञत्वगुणास्पदम् ।
तस्य लोपः कदाचित्स्या-
दन्यस्यानुपलम्भनात् ॥२६॥

अत्र स्पन्दतत्त्वे = اس سپند تتّو میں कार्यत्वं = [illegible]

कर्तृत्वम् इत्य च = [illegible] प्रविदितं = [illegible]

प्रान्तव्यवहारमात्रेण = [illegible] मोदितम् = [illegible]

अवस्थायुगलम् अस्ति = [illegible]

वस्तुतो = اصل میں हि = کیونکہ तत् एकम् एव = یہ ایک ہی ہے

स्वतन्त्रप्रकाशप्रधानप्रकाशरूपं तत्त्वं = سوتنتر پرکاش [illegible]

कर्तृसत्त्वा = [illegible] अव्यतिरिक्तया = [illegible] وہ الگ نہیں [illegible]

प्रकाशात्मना क्रियया = پرکاش [illegible]

व्याप्ते = [illegible]

तत् अभेदेन = [illegible] प्रकाशमाने = [illegible] پرکاش [illegible]

کتاب तत्त्व = ذات भुवन = دنیا शरीर = سریر

तत् प्रभावादिरूपत्व = [illegible] स्वीकुर्वीत = قبول کرنا چاہئے

ध कार्यम् = [illegible]

इत्य उच्यते = اس طرح کہا جاتا ہے

तत् प्रत्यस्य = [illegible] कस्यापि

कारणत्वा प्रयोगात् = [illegible]

यथोक्तं श्री प्रत्यभिज्ञायाम् = شری پرتبگیا میں اسطرح کہا ہے

"जडस्य तु न सा शक्तिः सत्ता यदसतः सतः
कर्तृ कर्मत्व तत्त्वैव कार्यकारणता ततः"

[illegible]

[illegible]

तस्य च इदम इव कार्यत्व [illegible]

[illegible] यद्यं = [illegible] विचित्रदेशकालाद्यवभास

= [illegible]

संयोजन वियोजन = [illegible]

क्रमेण = [illegible] अनन्तान् = بے حد - انیک

इदं नीलाद्य आभासा = [illegible] یہ سب نیلا وغیرہ آبھاس =
चितात्मनः स्वरूपात् = [illegible]

अतिरिक्ता नापि = [illegible] न मकरप्रतिबिम्बवद् = [illegible]

अतिरिक्ता निव = [illegible]
आभासयति

यावत् च = [illegible] । किंचित् = کچھ आभासयति [illegible]

तत्सर्वं आभासमानत्वादेव = [illegible] बहिर्मुखेन रूपेण [illegible]

क्षयधर्मके = [illegible]

क्षयश्च अस्य
~~एत एव~~ = [illegible] = [illegible]

इदन्ताभास = [illegible] निमज्जनेन
دب جانے

→ अहन्तारूपतयावस्थानं [illegible]

एत एव = [illegible]

इदन्ताप्रमातृकस्य = [illegible]

यो वेद्यांशः = [illegible] } स एव = [illegible]
सृज्यते = [illegible]

भगवता = [illegible]

संह्रियते = [illegible] اور سمہار
च

न तु = لیکن   अनन्ता प्रकाशात्मक = اسمیں بیرونی
कर्तृरूपं   کرنے روپ ہے

तस्य = اُس کو   देशाद्यावेशोऽपि = اگر دیس کا آویش بھی ہے

भगवदेकरूपत्वात् = بھگوان کا ایک روپ ہونے سے

अपि तु तत्र = اس کا سبب ہے کہ   तयो = ان دو کی

→ कार्यकर्तृत्वस्य = کاریہ کرتا کا   योमध्य = ان میں سے

कार्यता स्थिर = کاریتا کا ٹھہرنا ہے   कर्तृत्वं

चित्स्वातन्त्र्यरूपं = لیکن چت روپ

पुनर प्रकाशं = نا شروع ہے →

जगदुदय = جگت کا اُدے ہوا   अपायाद्यपि
یا پہلے ناش ہوا

= ان دونوں میں   तस्य = اسکا

स्वभावात् = سوبھاؤ سے ہے   प चलनात्

चलनं तु = چلنا کرنے والا   जगदुद्यापायावपि
جگت کا اُدے اور ناش بھی

न = ?   कौचित् = کسی سے دونوں

एव चकास्याताम् = इति   کہ چمکیں گے   یا اس میں بھی اسکے

मदाद्यवस्थायामप्य = مدہوشی وغیرہ کی حالتوں میں بھی

अखण्डित चमत्कार = اکھنڈت اس میں جس کا ظہور
सारम [illegible]

اسی अमूढमेवैतत = اس سے بیدار اور بے ہوش

ननु = کہیں [illegible] अभावसमाधान [illegible]

निष्पत्तौ = [illegible] اس सुषुप्तादौ = یا نیند میں

च प्रस्य = [illegible] न उपलभाम = ہم نہیں پاتے
कर्तृत्वे [illegible]

कश्चिद् पि = [illegible] प्रवृत्त्वदर्शनात् = [illegible]

सत्य [illegible] कार्योन्मुख [illegible] →

इन्द्रियादि प्रेरणात्मक व्यापार = [illegible]
प्रवरप्र यः

प्रयत्नः → संरम्भ = [illegible] सा = [illegible]

कार्येच्छाय पद = [illegible]

तुच्यते = [illegible] - विच्छिद्यते [illegible]

तस्मिन्सुप्ते सति = [illegible]

[illegible]

प्रबुधा = [illegible] → [illegible] प्रभाव समाध्य
उपपत्तारि तामरूपो
[illegible] =

मद्दो विलुप्तोऽस्मीति = یہ کہ میں بھولا ہوں
= کہ میں ڈوب گیا ہوں
मन्यते = یہ مانتا ہے

य: उ. पुनरन्तरमुखो = یہ کہ ہمیشہ اندرونی | अपहन्ता प्रकाशरूप: = ہمیشہ روشن رہنے والا

स्वभाव = طبیعت एत एव = یہی وہی

सर्वज्ञत्व गुणस्यस्य परम् = یہ ہر چیز کا جاننے والا
उपलक्षणं = نشانی | च इतत् - सर्वकर्तृत्वादेरपि = سب کچھ کرنے والا

तस्य लोपो न कदाचित् स्यात् - یہ اس کا کبھی بھی نہیں ہوتا

इति = ایسا न कदाचिद् = کبھی بھی

सम्भावनीय = سوچنا چاہیے अन्यस्य = دوسرے کا
न लोपम = بچھڑنا | उपलब्ध = یہ ملنا
कस्याप्य अनुपलम्भात् = کسی کا نہ ملنے سے

١٢. یہ ہے ناممکن بات ہے کیونکہ اس کا مطلب یہ ہوا کہ ... اس کا مطلب ہے ...

यदि स काश्चिद् उपलभ्येत = یہ اگر کوئی بھی ملنا ...
... یہ کہ کوئی اس ...

ایسا सस्व = یہ وہ अन्तरमुख = اندرونی ...
चितरूपा = یہ کہ ...

न चेद् उपलभ्यते = اگر وہ پایا نہیں جاتا

तर्हि = تو सा = وہ लोप दृशा = [illegible] ज्ञास्य इति = [illegible]

कुतो = کس طرح [illegible] निश्चयः = یقین ہوا

अथ च अन्यः = اور دوسرا कश्चित् लोपं = کسی لوپ کو

न उपलभेत = نہ دور کر سکتا ہے = نہیں پا سکتا ہے [illegible]

अपि तु = بلکہ

स स्व प्रकाशात्मा = وہ اپنی روشنی والا روح (his own inner self)

तत् कथं तस्य अभावः = تو کیسے اس کا ابھاو (نہ ہونا) [illegible]

सर्वे च = سب अन्यस्य = دوسرے کا

अनुपलम्भनादि = نہ پانا وغیرہ इति = اس لیے

अत्र = یہاں अन्यस्य = دوسرا

कर्तृकस्य = کرنے والے کا دوسرے کرنے والے کا

उपलम्भस्य (अन्य) = پانا अभावात् = نہ ہونے سے

— دوسرا کوئی نہیں ہے جو دیکھنے والا ہے

इत्यर्थः।

[illegible]
24/6.

अथ च = [illegible] घटाभावो = [illegible] यथा = [illegible]

घटाविविक्ताद्य = [illegible] भूतलाद्य = [illegible]

उपलम्भनात = [illegible] निश्चीयते = [illegible]

तथैव = [illegible] स्व आत्म अभावोऽप्य = [illegible]

आत्मविविक्तस्य = [illegible] कस्यचित = [illegible] उपलम्भात

([illegible] perceive [illegible]) [illegible] =

निश्चीयेत = [illegible] तत्र उपलम्भ स्वतः [illegible]

त एव द्वयम भावनी = [illegible] इति = [illegible]

तत उपलम्भक = [illegible] स्वात्मन = [illegible]

[illegible] perceive [illegible]

अस्तिता = [illegible] न सिद्ध्यति = [illegible]

यदि च = [illegible] कार्योन्मुख = [illegible]

प्रयत्नलोपे = [illegible] स लीलुप्येत

[illegible] =

तत उत्तर कालमन्यस्य = [illegible]

Future [illegible]

कस्याप्यु = [illegible] उपलम्भो = [illegible]

न भवेत = [illegible] अन्य उपलम्भ अभावा.

any subsequent effect

There will be existence of [illegible] =

प्रसज्येते = [illegible]   उत्पथी: = [illegible]

अपि च = اور بھی   अपनस्य → [illegible]   बहिर्मुखस्य باہر مکھ [illegible]

प्रयत्नस्य = اس پریتن کا   مگر   सौक्ष्म्यादो = [illegible]

अनुपलम्भात (ऽ) = نہ ملنے سے   कथम = کیونکر

अन्तर्मुखस्य तत्स्य = اندرمکھ [illegible]   बालिशैर्लोकैः = [illegible]

लोप = لوپ   आशङ्कितो = شبہ کیا ہے [illegible]

यतो = کیونکہ   अन्यस्य लोपे = [illegible]

अन्यस्य किं वृत्तम् = [illegible]   [illegible]

[illegible]

अपि च = اور بھی   अन्यस्य = دوسرے کا

कार्योन्मुख प्रयत्नस्य = [illegible]   अनउपलम्भात = نہ ملنے سے

→ अनुपलम्भ अप्रकाशात् = [illegible]

न = نہ कदाचिद् = کبھی بھی   प्रकाशात्मनो = [illegible]

अन्तर्मुखस्य = [illegible]   तस्य उपलब्धुर = [illegible]

न लोपः = [illegible]

यतो = جس سے   अस्मौ = اس   अन्तरमुखो भावः = وہ اندرمکھ بھاو [illegible]

3. सर्वज्ञत्व गुणास्यास्पदं = [illegible]

ताम् अपि = اسکو بھی ([illegible]) = [illegible] भावदशा

[illegible]   वेत्त्येव — = جانتا ہے ([illegible])

अन्यथा = اگر ایسا نہ ہو   सर्वे न सिध्येत् इव इति ([illegible]) =

अन्यस्येति = دوسرے کی   कर्तरि = [illegible]

[illegible]   2/3/69 कर्मणि च षष्ठी = کرم شٹی

अन्तरमुखे = اندرمکھ [illegible]   कार्यत्व प्रा [illegible] =

प्रतियोगिताम् [illegible]   इव = [illegible]   कर्तृत्वस्य = کرتاپن کا

सम्भाव्य = [illegible]

अवस्थत्वम् = [illegible]   उक्तं = [illegible]

In reality it is the experiencer in the state of waking etc.

वस्तुतस्तु = دراصل   उक्तायुक्त्या = [illegible]

तस्य = اسی کا ([illegible])

अस्थातृत्वमेव = [illegible]

→ अन्तरमुख इति = اندر ہو اس इति انتر। अन्त: → پوری ہستی ہے पूर्णा। अनन्तात्मक

मुख → प्रधानं = بڑا پردھان, यस्य = جس کی

इति योज्यम् = اس طرح جوڑنا چاہیے (انتر معنی پوری ہستی کا ہو جس کی).

unenlightened

एवम् अप्रबुद्धो = ایسا جو جاگا ہوا نہیں। बहिर्मुख व्यापार निरोधे

= باہر والے کاروبار جب ختم ہو جاتا ہے

ग्राहकस्याप्यस्य = پکڑنے والا اس کا بھی آتمنو आत्मनो = آتما کا

न अनुपपन्नमस्य अभावे = اگر اس کا نہ ہو निश्चिनुत

& self ... dissolution ...

इति प्रतिपाद्य = اس طرح ... = اگر اس کا نہ ہونا ... ثابت کرتا ہے۔

authors ...

सुप्रबुद्धाप्रबुद्धयो = سوئے ہوئے اور نہ جاگے ہوئے کی यास्क = یاسک نے

आत्मनः उपलम्भाः = آتما کا جاننا (to understand the self) ते = ان کو

निरूपयति = ثابت کرتا ہے ..

तस्योपलब्धिः सततं । त्रिपदाव्यभिचारिणी ।
नित्यं स्यात्सुप्रबुद्धस्य (186) तदाद्यन्ते परस्य तु ॥१८॥

तस्य प्राकरणि = اس - میں طاقت کے پرکرن میں   यः = جو

ie topic   اس پرکرن   شنکر سوبھاؤ کی ← स्वभावस्य

اس کی پراپتی = उपलब्धिः

وہ کبھی   अनवच्छिन्नः प्रकाशः = لانوچھن پرکاش (جو)

सा कथितयुक्त्या = اوپر کہی ہوئی یکتی سے   अवष्टम्भात्

اس کو تھام کے =

सष्टु = [illegible]   प्रबुद्धस्य = پربودھ کی   अप्रबुद्धतासंस्कारेण + गापि —

= اپربودھتا سنسکار سے

शून्यस्य = جب رہت ہو گیا   سیدا   सततं = ہمیشہ never vanishing

त्रिष्वपि जागर-
स्वप्न-सौषुप्तपदेषु = تینوں پدوں میں جاگرت سوپن سُشپتی میں   नित्यम् इति = وہ نت ہے اور ہر وقت ہی

आदौ - मध्ये - अन्ते च = آدی میں مدھیہ اور انت میں

अव्यभिचारिणी = جو نہ ٹلنے والی ہے → अनपायनी

= نہ دور ہونے والی

स्यात् = ہے → भवति = ہے

सदा सौ (اس ہی) = [illegible]   शंकरात्मक स्वस्व- = شنکر روپ
भावतया   اس سے
स्फुरती = سپھرنا ہے   इत्यर्थः = یہ ارتھ ہے

परस्य = دوسرے کی → وہ अप्रबुद्धस्य

اپربودھ کی (3-1)

पुनः = [illegible] तासां दशानां = [illegible] स्वोचित = [illegible]

संविद्रूपाणां = [illegible] प्रत्येकम = [illegible]

आदौ = [illegible] उन्मुमिषायाम् = [illegible] for the desire to manifest

अन्ते च = [illegible] विश्रान्त्यात्मक = [illegible] →

on the inward facedness ← identical with the emmersion of those states which are of the form of consciousness suited to them

अन्तर्मुखत्वेन = [illegible] न तु = [illegible] never स्वोचिता = [illegible]

अथ = [illegible]

अवभास = [illegible] अवस्थितिरूप [illegible]

मध्य पदे = [illegible]

यद् उक्तं श्रीशिव-दृष्टौ = [illegible]

"यावत्समग्रज्ञानज्ञातृस्पर्शदशास्वपि ।
स्थितैव लक्ष्यते सा तु तत विश्रान्त्याथवा फले ॥"

इति भट्टलोल्लटेनापि = [illegible]

ततः प्राच्य प्रभृत = اس کے بعد [illegible] इत्येवम् इव = اس طرح

व्याख्यापि = [illegible] स्ववृत्तौ = [illegible]

भट्ट श्री कल्लट वृत्त्यक्षराशय = [illegible]

प्रेक्ष्य = [illegible] वयमपि = ہم بھی

ततः वृत्त्यक्षरानुरोधेन = [illegible]

सौत्रमर्थम् = [illegible] = [illegible]

इति विमलमपि = [illegible] مگر क्लिष्टकल्पनया

[illegible] = [illegible]

व्याकर्तुम् = [illegible] शिक्षिताः = [illegible]

यत एव = [illegible] उपसम्प्रबुद्धस्य = [illegible]

ततः प्राधान्येन = [illegible] उपस्थिते = [illegible]

ततः अपलब्धः = [illegible] यत एव = [illegible]

उपयं = [illegible] देह = [illegible] प्राधिकारी = [illegible]

स्पन्दउपदेशो = [illegible] सम्प्रबुद्धी क्रियते = [illegible]

यदृच्छयाति = چونکہ

" अतः सततमुद्युक्तः स्पन्दतत्त्वविविक्तये "

(ادھیوگ یعنی تیار ہے) (پرکٹ کرنے کو)

" ہمیشہ ادھیوگ رہو - کس لئے سپندتتو کو پرکٹ کرنے کو - (یعنی اس کا گیان حاصل کرنے کو) "

इत्यादि = وغیرہ

" सौप्तपदवन्मूढः प्रबुद्धः स्यादनावृतः "

" اپربودھ سوشپت پد کی طرح مورکھ ہوتا ہے۔ پربودھ کسی آورن رہت ہے "

इति :-

" तथा स्वप्नेऽपि "

اسی طرح سپن میں

इत्यादि = وغیرہ

" प्रबुद्धः सर्वदा तिष्ठेत्

پربودھ ہمیشہ رہتا ہے پربودھ ہی میں "

= وغیرہ ہی

इत्यत्र हि जाग्रादित्रिषु पदेषु یہاں جاگرت آدی تینوں پدوں میں

ان میں

आद्यन्तकोटिवत् = [illegible]

मध्यमप्य = [illegible]

अथ अवस्थात्मकं = [illegible] पदं = [illegible]

तुर्याभयम = [illegible]

कुंतु = [illegible] प्रबुद्धस्य = [illegible]

सुप्रबुद्धता आपादयन्त्य = [illegible]

उपदेशः = [illegible]

प्रवृत्तः [illegible]

सतत च निरोध्याम: = [illegible]

तथा चाभ्यावस्त्रम = [illegible]

on [illegible] " जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तभेदे तुर्याभोग संभवः ॥

तथा ·

" त्रिषु चतुर्थं तैलवदासेच्यम् "

इति

" त्रितयभोक्ता वीरेशः "

सुप्रबुद्धस्य = [illegible] त्रिषु पदेषु = [illegible]

याहशस्य उपलब्धिरस्तो = [illegible] =

विभागेन = [illegible] दर्शयति = [illegible]

ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्या
शक्त्या परमया युतः।
पदद्वये विभुर्भाति
तदन्यत्र तु चिन्मयः ॥१८॥

सुप्रबुद्धस्य = [illegible] भूम्ना = [illegible] ज्ञानज्ञेयस्वरूपया = [illegible]

मध्यमे पदे = [illegible] → ज्ञानज्ञेयपर्यन्त यो ,परस्त = [illegible]

स्वस्वरूपैव = [illegible] स्पन्दतत्त्वात्मना [illegible]

पराशक्त्या [illegible] युक्तो = [illegible] विभुः

शंकरात्मा स्वभावो = [illegible] = [illegible]

जाग्रत्स्वप्नरूपे = [illegible] पदद्वये = [illegible]

तत्राहि = ان میں   विभ्रम = [illegible]   प्रसौ = [illegible]

सदाशिव ईश्वरा = سدا شیو اور ایشور   स्वाङ्कवर = [illegible]

[illegible] } पश्यति (اس حالت کو دیکھتا ہے)

"the phrase 'in other than those'"

"तत् प्रत्यत्र" = [illegible] → तु सुषुप्त = سوشپتی [illegible] (implies)

न तु = نہیں   यथा अन्ये = جیسے اور کہتے ہیں & not as some say.

सुषुप्तस्वप्नयोरिति = "سوشپتی اور سوپن"

"त्रिपदाव्यभिचारिणी" [illegible]

इति = اس میں   प्रक्रान्त = [illegible]

तुर्यस्याप्रस्तुतत्वात् = [illegible] | [illegible]

[illegible] तदुपलब्धेरेव च [illegible] तुर्यस्यपदवा [illegible]

[illegible] प्रसौ विभुक्ति [illegible] प्रसा [illegible]

स्वास्थ्य भाति [illegible]

प्रबोधवद्य उपशमादि = [illegible] जगत सुप्रबुद्ध प्रमिप्रायमेव
= [illegible] ([illegible]) [illegible]

न तु = نہیں   वस्तुवृत्त = [illegible]
= [illegible] अनुसारेण —

اس حصہ میں کتاب میں نہیں ملے گا

"तदन्यत्र तु चिन्त्यः" = وہ دوسری جگہ میں سوچنا ہے — یعنی دوسرے موقع پر

इति प्रस्य अनुपपन्नत्व = اس سے اسکی نہ ہونا آپڑتا ہے

आपद्येत

لوک میں लोके सौषुप्तस्य = لوک میں سوشپتی [illegible]

→ मोहमयत्वात = موہ مئی ہونے سے

शिव अपेक्षया तु = شو اپیکشا سے ہے

जाग्रत-स्वप्नयोरपि = جاگرت سپن کا بھی चिन्मयत्वात = چنمئے ہونے سے

Besides it is useless as regards the topic under discussion ← एवमपि च = ایسا ہوتے بھی प्रकृत अनुपयुक्तत्वात

= مطلوب میں نہ ہونے سے

प्रभृति

इतः = یہاں प्रथमनिष्यन्दतो = پہلا نشیندہ سے ग्रन्थ (chapter)

Concluding — Gesture

प्रबुद्धस्य सुप्रबुद्धतायै = پربدھ کو سپربدھ ہونے کے لئے

स्थितौ = ٹھہرنا यथा = جیسے टीकाकारैः = ٹیکا کاروں نے

ن न च = نہیں इति तः = اس سے

تتہا کی سی کچھ तथा = ویسا परीक्ष्यतां = پرکھ کر لیجئے

لیا स्वयमेव = آپ ہی कियत = کتنا

प्रातिपदं = ہر پد लिखाम = لکھیں

25/6 · यथा = [illegible] येयं = [illegible] जागरादिमध्यदशासु अपि
[illegible]

प्रबुद्धं न = [illegible] न = [illegible] प्रतिबध्नाति
[illegible]

तथा = [illegible] उपपादयति = [illegible]

गुणादिस्पन्दनिष्यन्दाः
सामान्यस्पन्दसंश्रयात् ।
लब्धात्मलाभाः सततं
स्युर्ज्ञस्य परिपन्थिनः ॥१९॥

गुणाः = [illegible] सत्त्व-रजः-तमांसि = [illegible]
येषां [illegible] प्रकृतितत्त्वे = [illegible] विभवः = [illegible]
ते = [illegible] मायातत्त्वास्थिताः = [illegible]
इह = [illegible] अभिप्रेताः = [illegible]

यथोक्तं = [illegible] श्रीस्वच्छन्दे = [illegible] मायामसूर
[illegible] कविन्यासे

अधश्शासनमूर्ध्वं च रक्तं शुक्लं विचिन्तयेत् ।
मध्ये तमो विजानीयाद् गुणास्त्वेते व्यवस्थिताः

[illegible] arrangement [illegible]

इति = یعنی ते = وہ प्रादयो = وغیرہ —

एषां = ان سب कलादीनां क्षित्यन्तानां = کلا تت سے پرتھوی تت تک

ان سب स्पंदानां = سپند (ہلچل) یعنی

विशेष प्रसराणां = خصوصی پھیلاؤ تیز तेषां = ان

ये = جو निष्यन्दाः = نتیجے → तनु-करण-भुवन, प्रसराः = جسم، حواس، دنیا یہ سب

نیلے سکھ नील-सुखादे = نیلا رنگ، سکھ وغیرہ संविदश्च = اور گیان

तथा = اسی طرح योग्यपेक्षया = یوگیوں کی نسبت سے

बिन्दु नादादयः = بندو اور ناد آدی ते = وہ सततं = ہمیشہ

ज्ञस्य = جانکار सुप्रबुद्धस्य = پوری طرح بیدار → कस्यचिद् एव

प्रपश्चित जन्मनो = ... جنم ...

راہ میں رکاوٹ प्रपरिपन्थिनः = راہ میں رکاوٹ ڈالنے والے →

स्वस्वभावस्याच्छादका = اپنے سوبھاؤ کو ڈھانپنے والے न भवन्ती = نہیں ہوتے ہیں

इति निश्चयः = یہ یقینی ہے

کیونکہ यतः = کیونکہ ते = یہ سب

सामान्य स्पन्दम = ... उक्तरूपम प्राप्तिस्य = ...

" यत्र = جہاں स्थितमिदम् [illegible] इत्यत्र "

विरागीति दृशा = [illegible] [illegible]

[illegible] लब्धात्मलाभाः = [illegible] → [illegible]
[illegible]

तत एव उत्पन्नास्तः = [illegible]

[illegible] तन्मयाश्च = [illegible] ([illegible]) इत्यर्थः = [illegible]

तथाहि :-
= [illegible]

" स्वाङ्गरूपेषु भावेषु पत्युर्ज्ञानं क्रिया च या।
मायातृतीये त एव पशो सत्त्वे रजस्तमः॥ "

[illegible]
[illegible]

इति श्री प्रत्यभिज्ञा = [illegible] उक्तदृशा

चितिशक्तिरेव = [illegible] पारमेश्वरी . [illegible]

ज्ञानक्रियामाया = [illegible]
शक्तित्रितयतया [illegible]

श्रीसदादिपदे — سوادی وغیرہ پدوں کو — स्फुरित्वा — سفوں میں آکر

संकोच प्रकर्षात् = سنکوچ کے پرکاش سے — بہت زیادہ

सत्त्व-रजः-तमोरूपं = اُس نے ستو رجو تمو روپی

क्रीडा शरीरं श्रयति = یہ کریڈا کے لئے شریر کو
آشرت ہو جاتی ہے —

यतः = چونکہ — निजचित् शक्ति — اپنی چت شکتی

स्फारमयत्वात् = اسکے سفار روپ ہونے سے

अधिष्ठितमेव — یہ سب کچھ اُسی پر ٹکا ہے —

सर्वदा सर्वं = ہمیشہ — جو جاننے والا — जानन् सुप्र = جو پروبدھ — बुद्धो
= وہ سب جانتا ہے

وہ پُر — गुणादिविशेषस्पन्द = جو گنوں کے فرق والے سپند

अनुदितस्पन्दनादि = نہ پرکٹ ہونے والے

स्पन्दतत्त्वसमावेशमय = یہ سب کچھ سپند تتو کا
एव. — آویش ہی اسکے بنے ہیں

یہ آپ کی اپر بدھ لوگوں کو باندھتی ہیں

यथा तु = جس طرح   अप्रबुद्धान्बध्नन्त्येते لوگوں کو

ये ते = یہ جو شکتیاں   آنون ... باندھتی ہیں

तत् = اس کو   प्रतिपादयति = سمجھ کرتے

اپر بدھ بدھی والے لوگوں کو ... अप्रबुद्धधियस्त्वेते یہ

... स्वस्थिति स्थगनोद्यताः । ...

... पातयन्ति दुरुत्तरे ... گرا کر ...

धोरे संसारवर्त्मनि ॥२०॥

अप्रबुद्धधियः = ... प्रायः ...

सर्वान् = سب   अप्रत्यभिज्ञात = ... पारमेश्वरी शक्त्यात्मक

निजस्पन्दतत्त्वस्य = ...   देहात्ममानिनो =

लौकिकान् = لوگ   प्राणाद्य ... आत्म

अभिमाननिष्ठ = ...   मितयोगिनः ते इत्य =

یہ تو ... ہوں گی

एते पूर्वोक्ताः ...   गुणादिस्पन्दस्य निष्यन्दः ...

यः उद्यताः ...

سپندروپ کھیچنے کی ... آگھو اٹھ سکتے ہیں

स्वस्थो: = ... स्पन्दतत्त्वात् ... स्थगना

स्थित

योधता = ... ہوتے ہیں →

नित्यं तत उद्यमैक सारा = ... میں ہوتے ہیں

दुःखेन उत्तार्यन्ते = ... پار ہو جاتے ہیں

अस्मात् = اس سنسار ... دُःखों के

जन्तु चक्रम् इति = ان جیووں کو ... दुःख तारे

→ लङ्घयितुम् = ... दुःखये

घोरे = ... दुःखये संसारस्य = ... मार्गे

पातयन्ति. = ... ہیں

यथोक्तं श्रीमालिनीविजये = شری مالنی وجے میں ...

"विषयेष्वेव संलीनानधोऽधः पातयन्त्यणून्।

रुद्राण्व्याः समालिङ्ग्य घोरतर्यायोऽपरा स्मृता॥"

... تو ... سمجھا

دشتمول بیرہی لیس ہوئے ہوتے ہیں - اس کو نیچے ہی ان جیووں کو ڈالتی ہیں - کون؟

یہی رودرانی ... شکتیاں ... آنگن ... میں ... ہیں - (ببدلیجاد) +

Pras... bella

इति तथाहि प्रतिपादिता = [illegible]

यः येयं = جو स्पन्दतत्त्वात्मना = [illegible]

परा शक्तिः = پرا شکتی सैव = وہی विश्वस्य अन्तः बहिश्च = [illegible]

वमनात् = [illegible]

संसारे = [illegible] वामाचारत्वात् = [illegible]

वामेश्वरी ~~समाख्येति~~ शक्तिः = [illegible] तत् अधिष्ठितानि तु [illegible]

खेचरी - गोचरी - दिक्चरी - भूचरी आदीनि = [illegible]

चत्वारि = چار देवताचक्राणि = دیوتا چکر

सुप्रबुद्धस्य = [illegible]

परभूमिसंचारीणि = [illegible] अप्रबुद्धानां = [illegible]

उपायः प्रायः + = [illegible]

सरणि प्रकाराणि = [illegible]

तथा हि = [illegible] या एव = [illegible]

सुप्रबुद्धस्य = سو پربدھ کی   खे → جیسے آکاش میں بودھ گگن میں बोधगगने

चरन्त्य = چلنے والی ہیں   खेचरी میں = کھیچری

प्र काल कलितत्वाभेद सर्वकर्तृत्व सर्वज्ञत्व पूर्णत्व व्यापकत्व

= کال سے ابھید ہے - سرو کرتا ہے - سرو گیتا ہے - آپ کا م - ویاپک ہے   प्रथा हेतु:

یہ پرتھا جاں میں - یہی تو وہ ہوتے جو میں نہ سمجھا

तावत् = یہی   सुप्रबुद्धस्य = اس پربدھ کی

शून्यप्रमातृपद = ... پرماتر پد میں

चारिण्यः = میں چلنے والی ہیں =

कुंचक रूपतया = ... سے   स्थिता: = رکھی ہیں

कालकलितत्व किंचित कर्तृत्व

= کال سے ... کنچت کرتا ... किंचितज्ञता अभिष्वङ्ग नियम

... हेतव:

= ...

गौ = واک वाक् → ...   ततु अवलक्षितास्

=

सञ्जल्पमयीषु = ... (speech)

[illegible] बुद्ध्यहंकारमनोभूमिषु = بدھی۔ من۔ اہنکار کی بھومیوں میں

चरन्त्यो = ان میں گھومنے والی → गोचर्यः [illegible]

सुप्रबुद्धस्य = جو پوری طرح جاگا ہوا ہے اس کی

ऽपृथक् स्वात्म अभेदमयं = [illegible]

अध्यवसाय-अभिमान संकल्पात् = [illegible]

जन्यन्ति = [illegible]

मूढानां तु = موڑھوں کو

भेदैकसारान् = [illegible]

[illegible] दिक्षु → दशासु = [illegible]

→ बाह्येन्द्रियभूमिषु = [illegible]

चरन्त्यो = [illegible]

दिकचर्यः = [illegible]

सुप्रबुद्धस्य प्रबुद्धय = سو پربدھ کے ادوت پرتھا والے [illegible]

प्रथासारा: = ادوت کی دوئت پرتھا [illegible]

प्रन्येषां द्वयप्रथा हेतवः

भू: = पर्व्/. रूपादि पञ्चकात्मके . روپادی پانچ [illegible] - [illegible]

मेयपदे = [illegible] तत्र = [illegible]

चरन्त्यो = [illegible] भूचर्यस्य [illegible]

तदा भोगमय्या = [illegible] Coagulated [illegible]

प्राप्यानी भावतया [illegible] तन्मयत्व = [illegible]

प्रापन्ना: = [illegible] भूचरी:

भू सुप्रबुद्धस्य = [illegible] =

चित्प्रकाश शरीरतयात्मनः [illegible]

इतरेषां = [illegible] उदीयन्त्यः सर्वतोऽपि = [illegible]

प्रविच्छिन्नतां = [illegible] प्रसयन्त्यः स्थिताः

इत्येव = [illegible] प्रमात्रन्तः = [illegible]

[illegible] प्रन्तः करण [illegible] बाह्यकरण

प्रमेयरूपतयैव [illegible]

चत्वारि चक्राणि = [illegible]

[illegible]

गुरादि स्पन्दमयात् = [illegible]

[illegible] = अन्यप्रबुद्ध [illegible]

उद्भूतलौकिकां = [illegible] तथा = [illegible]

बिन्दुनादादि = [illegible]

प्रथामात्रे [illegible]

संतुष्टान् = [illegible]

योगिनः = [illegible]

तत्त्वप्रसरक्रमे = [illegible]

संसारे ~~पात~~ पातयन्ति = [illegible]

4/7/67 यतन्त एवम् = [illegible]

अतः सततमुद्युक्तः
स्पन्दतत्त्वविविक्तये।
जाग्रदेव निजं भाव-
मचिरेणाधिगच्छति ॥२१॥

[illegible]

उक्त वक्ष्यमाण रूपस्य स्पन्द तत्त्वस्य [illegible]

विविक्तये = [illegible] — विमर्शनाय = [illegible] सततम्

उद्युक्तः = [illegible]

— मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते

[illegible]

इति = [illegible] गीता उक्त दृशा = [illegible]

सततमेव = [illegible] → अन्तर मुख स्व-स्वरूप = [illegible]

निभालन = [illegible]

पदस्थे = [illegible] पर: = [illegible]

स = [illegible] जाग्रदेव = [illegible] जाग्रत वस्थास्थितो [illegible]

निजे = [illegible] → आत्मीयं [illegible]

शंकरात्मके = [illegible] स्वस्वभावम् = [illegible]

अचिरेण = [illegible] अधिगच्छति = [illegible]

तथा अस्य = [illegible] अस्य = [illegible]

शंकरात्मना अन्तर स्वभाव [illegible] तत = [illegible]

स्वयमेव = [illegible] उन्मज्जति = [illegible]

येन = [illegible] प्रबुद्धो = [illegible] नित्योदित

[illegible]

समावेश आसादनात = [illegible] सुप्रबुद्धो = [illegible]

जीवनमुक्तो = [illegible] भवती इत्यर्थः = [illegible]

यथा = جس طرح अस्य = اس उद्युक्तस्य = [illegible]

बलवद् = زور سے आलम्बन = [illegible]

वशोदितान्नाद = [illegible] ततप्रभृत्य = [illegible]

अनायास = [illegible] तत प्रभृत्य = [illegible]

सकलवृत्ति = [illegible] क्षयमयीषु = [illegible]

नियतासु = [illegible] यास्ववस्थासु = [illegible]

स्पन्दनिधानम् = [illegible] उन्मुद्रितम् [illegible]

→ अभिमुखीभूतम [illegible] ता सता

[illegible] – अप्रसक्ते [illegible]

प्रथमम = پہلے उद्योगस्य = [illegible] विषया

इत्युपदेष्टुमाह = [illegible]

अति क्रुद्धः प्रहृष्टो वा

किं करोमीति वा मृशन्

धावन्वा यत्पदं गच्छेत्

तत्र स्पन्दः प्रतिष्ठितः ॥२२॥

सर्वत्र = [illegible] तावत् = [illegible] उपायमार्ग = [illegible]

समस्ते = [illegible] इतर वृत्ति = [illegible] प्रशम

एकाग्री भवन्ति = [illegible] पूर्वम = [illegible]

योगिनः = [illegible]

एतास्व = [illegible] स्व अति क्रोधाद्यावस्थासु [illegible]

x. which by themselves + without any effort lead to cessation of all functions ← स्वरसत एव = [illegible], समस्त अपर वृत्ति = [illegible]

क्षयमयीषु [illegible]

elect [illegible] यदि = [illegible] स्पन्द तत्त्व [illegible] विविक्तय

सततमुद्युक्तो [illegible] झटिय = [illegible]

[illegible] अन्तरमुखी भवन्ति = [illegible] योगिनः = [illegible]

तत = [illegible] समीहितम = [illegible]

[illegible]

آنتر کا اشٹ ۳ دو

प्रचिरेणैव = بہت جلدی ہی · लभन्ते = پراپت کرتے ہیں (وہ)

प्रयोगिनः तु = ۔ پریوگی لوگ تو · [illegible] مुदा एवेति = خوشی سے ہی [illegible]

तात्पर्यम् = مطلب

तथाहि = جیسے · समनन्तर = اسکے بعد ہی

विहत = [illegible] drawin · दारिका = لڑکی · उपधान = تکیہ

placed in front of some person

शत्रुदर्शनात् = دشمن کو دیکھ کر · मम स्य स्पर्शात् = [illegible]

ततत वचन मकरी नाद = [illegible] یا

प्रथममेव = پہلے ہی · उन्मीषत = [illegible]

संजिहीर्षा = [illegible] · एवताकलाद =

avoid

अन्तरमुखीभवद = اندر مکھ ہو کر · रश्मिचक्रो = رشمی چکر

प्रतिक्रुद्ध = [illegible]

चिर = بہت دیر · प्रार्थित = [illegible] · प्राणेशी

beloved

वदनेन्दु = اسکی [illegible] · दर्शनाद् एव = وہ دیکھ [illegible]

[illegible]

तत्क्षणमेव = اسی وقت   उन्मज्जत् = ابھرتا ہوا   पूर्ण अभिलाष

देवतावक्षः = دیوتا وکش   विकासित = [illegible]

अनुधावत् = [illegible]   समस्त करणवृत्तिः [illegible]

→ प्रहृष्टो वा = [illegible]

बलवत् = زبردست   प्रातताथिबलेन = [illegible]

सवेतो = [illegible]   बलित्वात् = [illegible]   कान्दिशीकः (इतिवत्स)

किं करोमीति = کیا کروں میں   [illegible]

मृशन् = [illegible] → विकल्पयन [illegible]

संशय धारा = شک کی دھارا [illegible]   अधिरोहात्मकः = [illegible]

पदे = اس جگہ   अनुप्रविष्टः = [illegible]

क्षीनसकल [illegible] आलम्बना = [illegible]   विकसत्

संशयसवित् = [illegible]

[illegible] निरालम्बनीकृत = [illegible]   वृत्ति प्रसरो वा

[illegible]

being pursued by

اس سے پیچھا کیا گیا ہوا

मत्त = [illegible] वारणादि = [illegible] अनुबध्यमानो

धावने = [illegible] → शरीर निरपेक्षमेव

स्वात्म प्रवशीकृत = [illegible]

Baheek [illegible]

इतर वृत्ति प्रसर = [illegible] उद्योग देववी

प्रेरणया इति = [illegible]

प्रति त्वरित = [illegible] पलायन = بھاگنا

क्रिया [illegible]

प्रविष्टो वा = [illegible]

[illegible] प्रयासे = [illegible]

सिंहाजगराद्य अवलो-कन = [illegible]

जनित = [illegible] महात्रास = [illegible]

आद्य अवस्थासु = [illegible] यत वृत्तिक्षयप्रदं = संचार्य

[illegible]

गदहृदयोतिष्ठत

[illegible] स्पन्दतत्त्वम [illegible] विविक्तये

सततम उद्युक्तो यो योगिजनः ~~आत्ममुखीभूतमेव~~ [illegible] तिष्ठति तस्य = [illegible]

[illegible] । तत्र → वृत्तिक्षयात्मके [illegible] पदे

[illegible]

अवस्थाविशेषे = [illegible] स्पन्दः प्रतिष्ठितः [illegible]

स्पन्दतत्त्वसमाभिमुखीभूतमेव = [illegible]

[illegible] = प्रतिष्ठुति

तस्माद् = [illegible] इतरवृत्तिक्षयपदे = [illegible]

संचेत्य = [illegible] झटिति = [illegible] कूर्माङ्गसंकोचयुक्त्या

= [illegible]

क्रोधसंक्षयवृत्ती = [illegible]

प्रशमस्य = [illegible] महाविकासव्याप्तियुक्त्या वा

= [illegible]

[illegible]

प्रहर्ष = [illegible] धावन = [illegible] वृत्तीविस्फारया ~~प्रवृत्ति~~ [illegible]

= [illegible]

[illegible] – अभिमुखीभूत = [illegible] निज स्पन्द शक्ति = [illegible]

विमर्शवता = [illegible] = [illegible]

= [illegible]

योगिना भाव्यम् = [illegible], यथोक्तं श्रीविज्ञान भैरवे

(162)

کامکرودھ

کامक्रोधलोभमोहमदमात्सर्यं गोचरे ।

बुद्धिं निस्तिमितां कृत्वा तत्त्वमवशिष्यते ॥

आनन्दे महति प्राप्ते दृष्टे वाबान्धवे विराता

मात्सर्य = رشک

= حسد

त्र =

=

=

=

=

=

Source

=

=

= ? कत् = سوال

= ... = ...

एवम एतास्वअवस्थासु उक्त युक्त्या = اس طرح ان اوستھاؤں میں ...

प्रथमे = स्पन्दप्राप्तिं = ... اسپند شکتی ...

परिशील्य = ... तदनु = اس کے بعد

तामेव अनुसंदध्यात् = ... सर्वासु अवस्थासु

... اوستھاؤں میں ...

तत् दार्ढ्य = اسکی دردتا ...

एवप्रवेशमयी = ...

जीवन्मुक्तताम् = ...

प्राहरेत = ... सततोद्युक्त = ...

इत्य उपादिशति = اس طرح ...

यामवस्थां समालम्ब्य

यदयं मम वक्ष्यति

तदवश्यं करिष्येऽहम्

इति संकल्प्य तिष्ठति ॥२३॥

[illegible] तामाश्रित्योर्ध्वमार्गेण चन्द्रसूर्यावुभावपि [illegible]
[illegible] सौषुम्नेऽध्वन्यस्तमितो (184) हित्वा ब्रह्माण्डगोचरम् ॥२४॥
[illegible]

अयं शंकरात्मा स्वभावो यन्मम वक्ष्यति [illegible]

अभिव्यक्तं सत् = [illegible] यत् चिदानन्दघनम् अनुभूत
[illegible] = पूर्वं

स्वरूपं = [illegible] मो = [illegible] विमर्शयिष्यति
[illegible]

तत् अवश्यम अहं करिष्ये
= [illegible]

बहिर्मुखतां हित्वा [illegible]

तत प्रवण एव = [illegible] भविष्यामि = [illegible]

[illegible] इति संकल्प्य → = [illegible] निश्चित्य

याम = [illegible] प्रतिक्रोधाद्यवस्थास्व अनुभूतचरी
[illegible]
= [illegible] चिदानन्दघनां

स्पन्दात्मिकामव [illegible]

= [illegible] अवस्थाम = [illegible]

[illegible] अवलम्ब्य = [illegible] → प्राप्तत्वेन
[illegible]
अभिसंधाय तिष्ठति

[illegible] → श्रीमत विकल्पगातिम विकल्प अवस्थाम अविचलत्वेन
[illegible] = [illegible]

(165)

तदा तस्मिन्महाव्योम्नि प्रलीन शशिभास्करे
सौषुम्नपदवन्मूढः प्रबुद्धः स्यादनावृतः ॥२५॥

भजते = سیر کرتا ہے — यो योगी = جو یوگی

तदासौ = اُس کی — तामवस्थां = اُس حالت کو

समाश्रित्य = حاصل کر — चन्द्रसूर्यौ = چاند سورج

— प्राणापानः प्राणाख्य = پران اپان — उभावपि = دونوں

हृदयभूमौ = دل کی زمین میں — मिलित्वा = مل کر

युगपदेव = ایک دم — सौषुम्नेऽध्वनि = سوشمنا مارگ

— ब्रह्मदण्डलक्षणं [illegible] — मार्गेण = اُسی مارگ

उदानपथेन = اُدان کی مارگ → शाम्यतः = [illegible]

अस्तमितः [illegible]

[illegible]

कथं → = کیا — ब्रह्मदण्डलक्षणं = [illegible]

गोचरीकृत्वा [illegible]

→ ब्रह्मबिल = [illegible]

अधिष्ठाता = [illegible] — ब्रह्माधिष्ठित [illegible]

अण्ड = [illegible]

मुक्ता = [illegible]

[illegible]

(166)

[illegible]

—ऊर्ध्वकवाटान्ता — اوپر کا جو دوار ہے — देहव्याप्तिं = سر پر کی ویاپتی [illegible]

[illegible]

यत्त्वा — [illegible] — तदा च = تو

उल्लङ्घित = الانگھنا — देहव्याप्तिके — [illegible]

प्रतस्थः = [illegible] — प्रकर्षेण = [illegible]

लीनलीना = [illegible] — अनुबुभुक्षारूपा = [illegible]

शशिभास्करौ = سورج اور چندر — [illegible] — यत्र तस्मिन्

महाव्योम्नि = مہا آکاش میں → [illegible]

→ निःशेषवेद्य उपशमरूपे = جہاں [illegible]

परमाकाशे = [illegible] — प्राप्तेऽपि

[illegible]

यः = 2 ऽ शिथिलप्रयत्नतया = [illegible]

खेचरया आत्मना = [illegible] — गुणादि स्पन्द निष्यन्देन = [illegible]

व्योमालितत्वात् [illegible]

[illegible]

सौषुप्तपदवद् भवति = [illegible] →

[illegible] सौषुप्तेन च = [illegible] सुप्तमाप्य = [illegible]

उपलक्षितं = [illegible] तेन च = [illegible]

स्वप्नसुषुप्तवत् = [illegible] यः = [illegible]

शून्यादिभूमिमेव = [illegible] अधितिष्ठति = [illegible]

स योगी = [illegible] सम्यक् = [illegible]

[illegible] एवं अनभिव्यक्त = [illegible] स्वस्वभावो = [illegible]

मूढ इत्युच्यते = [illegible]

यथोक्तं श्रीमद्भट्टकल्लटेन = [illegible]

"यां स्पन्दात्मिकामवस्थामवलम्बय"

इति योगिनः

इति च [illegible] "यस्य स्वस्वभावाभिव्यक्तिर्न सम्यक् वृत्ता स स्वप्नादिना मुह्यमानोऽप्रबुद्धो निरुद्धः स्यात्"।

شوقِ الٰہی میں پیچھے ہٹ کر

وہی انسان — यस्तु = جو تو, तत्रापि = اس میں بھی

روشن سامنے — प्रयत्नपाटवाद् = محنت کی چالاکی سے

उद्युक्तता बलाद् = کوشش کے زور سے, क्षणामपि = ایک لمحہ بھی

न शिथिली भवति = ڈھیلا نہیں ہے, ڈھیلا نہیں پڑتا

स = وہ, तमसः = اندھیرے سے

पुनरनभिभूतत्वात् = نہ دبنے سے, ہوکر

चिदाकाशमयत्वेन = چیت آکاش سے

एव अवस्थितः = ایک سرگرم ہی رہتا ہے

प्रबुद्ध उच्यते = جاگا ہوا, کہا جاتا ہے

एत एव = یہی تو

सतत उद्योगवत = ہمیشہ کوشش کرنے والا

एव योगिना भवितव्यम् = یوگی کو ایسا ہونا چاہیے

इत्यादिषु गुरुभिः = ان سب میں گرو نے

[illegible]

دوسرا شلوک

एवं = [illegible] प्रथमनिष्यन्देन [illegible] स्वरूपात्पात्मकं [illegible]

युक्त्युपपन्नं = [illegible] साभिज्ञानं [illegible]

निमीलनसमाधि [illegible] प्रत्यभिज्ञेय [illegible]

स्पन्दतत्त्वं प्रतिपाद्य = [illegible]

यथा = [illegible] सततं = [illegible] ततस्वरूप = [illegible]

समासादनेन = [illegible] सुप्रबुद्धता = [illegible]

प्राक्सूचिता = [illegible] भवति = [illegible]

तथा = [illegible] इदानीं = اب [illegible]

तस्यैव = [illegible] वैश्वात्म्यम् = [illegible]

उन्मीलनसमाधि = [illegible] प्रत्यभिज्ञेयं = [illegible]

युक्तितोऽपि = [illegible] निर्णेतुं [illegible]

सर्वत्र = ہرجگہ चिदभेदप्रकाशकं [illegible]

सहजविद्योदयाख्यम् = [illegible] इमं द्वितीय [illegible]

निष्यन्दे = [illegible]

तादात्म्य रश्म्यादिना [illegible]

"शिवसद्भावदायिनी" इत्यन्तेन = اس شلوک

श्लोकसप्तकेन = سات شلوکوں سے ان کو निरूपयति = تحریر کیا ہے

तत्र = اس میں विश्वं = [illegible] शुद्धाशुद्धभेदेन

[illegible]

द्विधा = دو طرح کا [illegible] तत्र = اس میں

शुद्धं = [illegible] मन्त्रादिरूपं = [illegible]

तत्र एव उत्पन्नं = [illegible] तन्मयं = [illegible]

तत्रैव = اسی میں विश्राम्यति = [illegible]

इति श्लोकद्वयेन उक्तं = [illegible]

अशुद्धमपि = [illegible] तन्मयमेव = [illegible]

इत्यग्रपरेण श्लोकद्वयेन = [illegible] प्रमीलितम् = [illegible]

तत्संवेदनाधिरूढो = [illegible]

जीवन्मुक्तः = وہ جیون مکت [illegible]

इति श्लोकेन उक्तम् = اس شلوک سے کہا

[illegible]

[illegible]

सतत = [illegible] तत्त्वसमासदत्तनव = [illegible] साधकानां = [illegible]

स्वेष्टसिद्धिः = [illegible]

इति श्लोकद्वयेन प्रमि-
हितमिति = [illegible]

संक्षेपः = [illegible]

अथ ग्रन्थो व्याख्या-
यते = [illegible] यथाक्रमम् =

[illegible]

pure aspect of the world of the form of mantras

तत्र = [illegible] शुद्ध = [illegible] तावत् [illegible]

मन्त्रादिरूपं [illegible] तच्च यथा → [illegible] = [illegible]

[illegible] तत एव उत्पन्नं = [illegible] → तत्र बलेनैव →

[illegible] = प्रकाशमाने

तत्रैव विश्राम्यति = [illegible]

तत प्रथममनिष्पन्न = [illegible]

[illegible] परिघटित हृत्तान्त [illegible]

पुरःसर

निरूपयामि:

[illegible]

तदाक्रम्य बलं मन्त्राः प्रवर्तन्ते ऽधिकाराय
सर्वज्ञबलशालिनः । (171) करणानीव देहिनाम् ॥१॥

तत = → स्पन्दतत्त्वात्मकं बलं =

प्राणरूपं = वीर्यम् = व

आक्रम्य =

अभेदेन आश्रयतया = अवष्टभ्य

holy+worshipful like such as

भगवतः = अनन्तव्योमव्याप्यादयो मन्त्राः

mantras

सर्वज्ञबलेन = → सर्वज्ञत्वादिसामर्थ्येन

=

श्लाघमाना = — जृम्भमाणाः =

अधिकाराय = in the domain of embodied. देहिनां प्रवर्तन्ते

→

सृष्टिसंहारतिरोधानानुग्रहादि कुर्वन्ती इत्यर्थः

=

सर्वज्ञत्वम् (understood)

सर्वज्ञशब्दो = भाव प्रधानः

सर्वकर्तृत्वादि उपलक्षयति -

यथा देहिनां = करणान्य

उपपादित दृष्टा =

तत्रैव संप्रलीयन्ते सहाराधकचित्तेन
शान्तरूपा निरञ्जनाः (172) तेनैते शिवधर्मिणः ॥२१॥

sense objects manifest

तत् बलम् = ... आक्रम्य = ... विषयप्रकाशादौ

प्रवर्तन्ते = ... इति = ... दृष्टान्तः

कृतकृत्यत्वात = ... ← ... = निरञ्जनाः

निवृत्ता = ... अधिकारमल = ... → particular things for particular persons

... = शान्त विविध वाचकात्म स्वरूपा

तत्रैव स्पन्दात्मके बले ... सम्यग् अभेद प्राप्त्या

← ... =

प्रकर्षेण अपुनरावृत्त्या ...

लीयन्ते = ... →

अधिकार मलान्मुच्यन्ते ...

... →

आराधकचित्तेन ...

उपासक लोक ...

संवेदनेन ... सह = ...

الٹا شو ... [illegible]

यतश्च = جس سے [illegible] तत्सर्वमुदेति = اس سے وہ →

तत् बलेन विसृष्टाः = اسی کی طاقت سے [illegible] तत्रैव लीयन्ते = اسی میں لیہ ہو جاتے ہیں۔

[illegible]

ते तैते = اس سے ते = سب ہی मन्त्र-मन्त्रेश्वर [illegible]

= منتر - منتریشور [illegible]

[illegible] → प्रावस्य = [illegible] → परमेश्वरस्य [illegible] सम्बन्धी धर्मः

[illegible]

धर्मः → स्वभावो [illegible] विद्यते येषां

ते तथा = [illegible] सामान्यस्पन्द = [illegible]

[illegible] सारा उदय थिर - [illegible]

ननु = [illegible] करणानां [illegible] मन्त्राणां च

[illegible]

तत उदयादौ = [illegible] लीयन्ते = [illegible]

[illegible]

किमिति = کیوں [illegible] करणानि = [illegible]

न सर्वज्ञादिरूपाणि = [illegible] کیوں نہیں

उद्यते = [illegible]

= اسکا جواب

[illegible]

Offshoot سے
P.
نوانکر شکتی

परमेश्वरो = پرمیشور نے मायाशक्त्या = مایا شکتی سے

शरीर-करणानि = شریر - سادھن भेदमयानि = بھید والے

निर्मिमीते = بناتا ہے विद्याशक्त्या = شدھ ودیا شکتی سے

तु → "पाकशः = ٹکڑے ٹکڑے / برا / विचित्र = کئی طرح

حرف ٹکڑے سمجھی

لیکن اسی شدھ ودیا سے منتروں کی وجہ سے آکاش سے بناتا ہے

वाचक = واچک परामर्श = صرف پرامرش سے

शरीराणि

मन्त्रान् = ہی منتر ہیں

اور وہ اعضاء منتر سے دوسری طرح بناتا ہے

वाचकस्य = بولنے والے کی मायापदेऽपि = وہ مایا پد میں بھی

اس کے شریر کی منتروں کی وجہ سے آکاش کے ذریعہ سے ... ساتھ اس کا ... ہے

"घटोऽयमित्यध्यवसा नामरूपातिरेकिणी
परेशशक्तिरात्मेव भासते न त्विदन्तया"

- اسی طرح پر مشیا ہے نہیں دکھائی دیتی

ایام - شو دوام

یہ گھڑا ہے ایسا نشچے ہونا - ادھیوسا

... سے الگ پر میشور کی شکتی جو پرمیشور کا سروپ ... دکھائی دیتی ہے

جو یہ نام اور روپ

سے الگ ہے اور یہ ... ہونا

= پرمیشور کی شکتی =

= اپنی

= یہی ہے سی ہی

... یہ ایسا نہیں دکھائی دیتی ہے

इति प्रत्यभिज्ञा उक्तनीत्या = اس طرح پرتیبگیا میں بتائی گئی ہے

प्रमातृभूम्यन अतिक्रान्ते नै = جو پرماتر بھومی ہے اس سے نہ اتکرانتن کیا ہوا

→ न = نہ शरीर = شریر पुर्यष्टकादि वत् = پرانٹک وغیرہ جیسے

बोधसंकोचकत्वम् अस्तीति = اُن کو گیان کا سنکوچ دلانے والا ہے (یہ بیان کیا ہے)

युक्तमेवैषां = ٹھیک ہے ان کو सर्व ज्ञत्वादि = سرو گیاتا وغیرہ (منتر مہیشر وغیرہ کو)

भेदे त्वेकरसे भाते ......

"اگر بھید بھی ایک رس میں بھاسے - تو وہ بھی شدھ ہے"

इति = اس طرح प्रत्यभिज्ञाकारिकाटीकायां = سری پرتیبگیا کارکا میں

वितत्य दर्शितम् - تفصیل سے دکھایا ہے

एवं विद्या पर अवस्था = شدھ ودیا پر میں स्थित = جو ٹھہرے ہیں

सृष्ट्यादिकार्य = وہ پرش سرشٹی وغیرہ کو اور کرتے ہیں

अनन्त भट्टारकाद्य = وہ میں اننت بھٹارک وغیرہ

अपेक्षयैतत

व्याख्येयम् = اُن کی اپیکشا سے یہ سمجھنا چاہئے

(left margin:) پرماتر بھومی کو اتکرانت نہیں کیا ہوا
گیان کی سنکوچ ہونا ہے
اس کی اپیکشا سے
یہ سمجھنا چاہئے

[illegible] / [illegible]

Explanation — [illegible]

तथा = [illegible] दीक्षादि प्रवृत्तानाम = [illegible]

आचार्या दीनामेव = [illegible] करुणारूप: = [illegible] सर्वे = سب

मन्त्रा: = منتر   तत = [illegible] स्पन्दतत्त्वरूप [illegible]

बलाक्रम्य = [illegible] = [illegible] अनुग्राहक = [illegible] तेन

प्रवक्ष्य = [illegible] आचार्यादीनामेव

सम्बन्धिना = [illegible] प्राराधक चित्तेन — along with the mind of the Practiser

[illegible] = सह

for → मोक्ष भोग साधनाद्य अधिकाराय = [illegible]

प्रवर्तन्ते [illegible]

They might be merge in that alone after they lose their existence as articulate sounds are hence purified.

एते व = [illegible] शान्त वाचक = [illegible] [ ]

शब्दात्मक = [illegible] शरीररूपा [illegible]

एत एव च निरञ्जना: = [illegible] शुद्धा:

सम्यक् प्रलीयन्ते → [illegible]

→ विश्राम्यन्ति = [illegible]

पत्र व्याख्याने = [illegible]

'along with the mind of the practiser' [illegible]

[illegible]

सद्गराधकचित्तेन " phrase [illegible]

इति पूर्वश्लोकेन = [illegible] योऽयम् [illegible]

सर्वे च मन्त्राणाम = [illegible]

point उदय = [illegible] प्रलय = [illegible]

कोटि [illegible] व्यापि = [illegible]

प्रवृत्तावपि = [illegible] भिन्नभूतमिति

[illegible] = [illegible]

एभिरुक्तितम् = [illegible] अर्ह = 64

10 18

सर्वे च = [illegible] दशाष्टादशा भवेत्

[illegible] 10 - 18 [illegible]

[illegible] } भिन्ने पूर्वे मन्त्राणां [illegible]

स्पन्दतत्त्वसारत एव इत्य उक्तं भवति।

[illegible]

12/7 एवं = [illegible] मंत्र मन्त्रेश्वरादिरूपा = [illegible]

— शुद्धाभिमतापि [illegible]

सृष्टि = [illegible] शिवस्वभावेति = [illegible]

प्रतिपाद्य = [illegible]

جو مانی گئی ہے

प्रभुणा = اس پربھو کی = अभिमता = مانی ہوئی ہے

सा = वह मायादिरूपा = مایا وغیرہ روپ مگر وہ शिवस्वरूपैव = شیو سروپ ہی ہے

इति उपपादयन् = اس بات کو ثابت کرتے ہوئے श्रीमत्शास्त्रादि → = شری مت شاستر وغیرہ جو ہیں

रहस्यदृष्टिमादि = انکی رہسیہ درشٹی

उपक्षिपति = اس کا سنکیت بیان کرتا ہے

यत: = جس کارن سے जीव: → ग्राहक: = یہ جو گراہک ہے

सर्वमय: = سروویاپک ہے → शिववत् विश्वरूप: = جس طرح شیو وشو روپ ہے

तेन = اس سے हेतुना = کارن سے शब्देषु →

वाचकेषु = جو نام ہیں वाच्येषु = معنی

चिन्तासु = خیالوں میں →

विकल्पज्ञानादिरूपासु = وکلپ گیان وغیرہ آदिमध्यान्तरूपा

सावस्था = وہ اوستھا

नास्ति = نہیں ہے

यः = ३. शिवो न भवति = [illegible]

सर्वमेव = [illegible] शिवस्वरूपम् = [illegible]

[illegible] इत्यर्थः

यत = [illegible] एवं = [illegible] प्रत: = [illegible]

भोक्तैव = [illegible]

— चिदात्मा = [illegible] ग्राहको = [illegible]

भोग्यभावेन → [illegible] → देहनीलादिरूपेण

[illegible]

सदा — नित्यं = [illegible] → सर्वत्र = [illegible] →

→ विचित्रतत्त्वभुवनादिपदे = [illegible] सम्यक् = [illegible]

→ प्रपन्न = [illegible] प्राधिकतया = [illegible]

स्थित: = [illegible] न तु = [illegible] भोग्यं = [illegible]

नाम = [illegible] किञ्चित = [illegible]

भोक्ता = [illegible] भिन्नमस्ति [illegible]

([illegible]).

جیو اور شو [illegible] کہ جیو اور شو میں [illegible]

जीव = جیو ; इत्य = [illegible] ; उपनामय =

शिव इत्य = شو [illegible] ; उपसंहारेच्छा [illegible]

जीवशिवयो = جیو اور شو کا [illegible]

इति = [illegible] ; देहादिवस्थासु = [illegible] ; न कोऽपि भेदः

[illegible] = न कास्वपि

तथापि

एकपूर्शी मन्यता = [illegible] ; मन्तव्या = [illegible]

अपितु = [illegible] ; चितघन शिवस्वभाव = [illegible]

तैः [illegible]

इति भङ्ग्या = [illegible] ; उपदिशति = [illegible]

यथाक्रमम् = [illegible]

शरीरमपि = [illegible] ; यत् = [illegible]

घटादिप्रानस्वमय = [illegible] 36 ; शिवरूपतया पश्यन्ति = [illegible]

[illegible] प्रचयन्ति च = [illegible] ; त = [illegible] ; सिद्यान्ति

घटादिकमपि = [illegible]

तथा = [illegible] अभिमानविषय [illegible] ; पश्यन्ति = [illegible]

प्रचयन्ति च = [illegible] ; तदपि = [illegible]

विवादः

इति = [illegible] अस्ति, पत्र = [illegible] इति श्री प्रत्यभिज्ञा टीकायाम्

[illegible]

[illegible] भट्टश्रीवामनेन अप्युक्तम् [illegible]

[illegible] "आलम्बनय संविदं यस्मात्संवेद्यं, न स्वभावतः [illegible]

तस्मात्संविदितं सर्वमिति संविन्मयो भवेत्" [illegible]

[illegible] आलम्बनय = [illegible] संविदं = [illegible]

यस्मात् = [illegible] न संवेद्यं [illegible]

स्वभावतः = [illegible] [[illegible]]

तस्मात् = [illegible] संविदितं [illegible]

([illegible]) सर्वम्

इति = [illegible]

संवितमयो भवेत = [illegible] ([illegible])

कस्मात् = کس لئے جीवः सर्वमयः [illegible]

अत्य अत्र हेतु = اس لیے [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible] सर्वभावानां [illegible] समुद्भवाद् = [illegible]

→ उपात्ति हेतुत्वात् = [illegible] ([illegible])

प्रमेय अनुपरक्ता = प्रकीर्ति.

→ प्रपादान (भाव) = [illegible], प्रधानश्च = [illegible], निर्देश: = [illegible]

([illegible])

प्रमातृमितिमानमेय भेदजातस्य ते
विहार इह हेतुतां समुपयापि, यस्मात्त्वयि ।
विवृत्तविवृतौ क्वचित्तदपयाति, तेनाद्धवना
नयेन पुनरीक्ष्यते जगति जातु चित्केनचित् ॥

प्रमातृम् (स्य) = [illegible] मान = [illegible] मेय = [illegible]

मेय = [illegible] भेदजातस्य = [illegible] ते = [illegible]

विहार = [illegible] हेतुतां = [illegible] समुपयापि = [illegible]

यस्मात् त्वयि = [illegible]

विवृत्तविवृतौ = [illegible] क्वचित = [illegible]

तत् = [illegible] अपयाति = [illegible]

तेन = [illegible] अद्धवना = [illegible] नयेन = [illegible]

पुनर = [illegible] ईक्ष्यते = [illegible] जगति = [illegible]

[illegible]

जातुचित = کسی وقت   केनचित = [illegible]

इति = ॐ श्रीज्ञानगर्भस्तोत्र = [illegible] उक्तनीत्या

[illegible]

सवितृस्व = [illegible]   प्रसूताया = [illegible]

जगतः = [illegible]   सद्भावात् = [illegible]

सर्वभाव = [illegible]   समुद्भवत्व = [illegible]

जीवस्य = [illegible]   यतश्च = [illegible]

जीवात् इव = [illegible]   उदयाति = [illegible]

विभ्रमतोऽप्यये = [illegible]   प्रेतो = [illegible]

सर्वमयो = [illegible] ⟶

विश्वप्राप्ति इति यावत = [illegible]

[illegible]

निराीतं च = اور تیز شدہ [illegible] इतत = دوسرے سوتر کی ورتی میں द्वितीय सूत्रवृत्तौ

सर्वमयत्वे = سب [illegible] सेत्वन्तरस = دوسرا [illegible] प्राह = کہا ہے

तत्संवेदन = اس کا علم इत्यर्थेन = اس معنی سے

→ तस्य सर्वस्य = اس سب کا → नीलसुखादि = نیل سکھ وغیرہ کا [illegible] संवेदने

→ प्रकाशस्य = پرکاش کی तेनरूपेण = اس روپ سے स्वभावेन = جو جانتا ہے

तादात्म्य प्रतिपत्ते = [illegible] -

اس → सर्वमयत्वस्योपलम्भात् = [illegible]

एवमनेन श्लोकद्वयेन = ان دو شلوکوں سے रहस्य चर्या = [illegible]

सर्वभेद = سب بھید [illegible]

पादप = درخت उन्मूल = اکھاڑنا [illegible]

اس उपपत्ति = [illegible] पारिधारे ताभ्य = [illegible]

ज्ञान उपदेशकथा = گیان اپدیش [illegible]

प्रथम चरम सूत्राभ्यां = [illegible]

महार्थ तत्त्वं = بڑا ارتھ کا سر ہے (بڑا ارتھ تو ہے)

जाग्रदादिसूत्रेण = اس جاگرت آدی سوتر سے ۔ یہ وشتو کہے

षडर्धपरमार्थ = تریکش شاستر کا
اس بڑا ارتھ کا بابا کا ہے

तथास्य = وہ ملکر اس سوتر سے

इत्यनेन = اس سے

सर्वोपासारत = سار بات جو اپاسناؤں میں ان کا جو سار ہے
اپنا سکھ پانا کا سب سے

इत्यादि = یہی وغیرہ

उपाक्षिप्तम् = یہی نچوڑ کر

इत्थं

स्पन्दतत्त्वेनैव = اس سپند تو سے

विश्व उपदेशा: = وشو اپدیش اس ان کا سار ہے

स्वीकृता: = رنگتی کا روپ ہے

अथ = پھر اس यतः = یہی

प्रतिपत्ति = جان

सारतैव = یہی سار ہوتا ہے

मोक्ष = موکش ہے

इत्यग्रादिशति = یہی آگیا کرتا ہے

वा प्राहद: = [illegible] वा [illegible] प्रथम निष्यन्द = [illegible]

उक्त निमीलन समाधि [illegible] प्रकारे = [illegible]

विकल्पयन् = [illegible] प्रस्था समापत्ते [illegible]

[illegible] दुर्लभामतां = [illegible] = ध्वनयाति = [illegible]

तेन [illegible] प्रथम प्रथा: = [illegible]

ईदृशी = [illegible] तावत् सवित्ति = [illegible]

दुर्लभा = [illegible] यस्य कस्यचित् = [illegible]

[illegible] अपश्चिमजन्मनो = [illegible] इव [illegible]
भवति [illegible]

[illegible] सोऽखिलं = [illegible] जगत क्रीडा वन = [illegible]
पश्यन्

= [illegible] निजसंविद = [illegible]

उन्मेष निमेषाभ्यां [illegible]

सृजन संहरस्व [illegible]

([illegible]) [illegible]

جو مجھ میں من لگا کر

۲ " मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते "

جو لوگ مجھ میں من کو ٹکا کر ہمیشہ یوگ یکت ہو کر اپاسنا کرتے ہیں

इति स्थित्या = اس کیفیت سے सततसमाविष्टा = ہر وقت مستغرق رہنے والے

महायोगी = بڑے بھاری یوگی

जीवन्नेव → प्राणादि मानपि — پران کو ... ہوئے بھی مگر विज्ञानाग्नि = گیان کی آگ سے

निर्दग्धाशेषबन्धनो = جن کے سب بندھن جل گئے ہوں

۳ देहपाते तु → وہ دیہہ پات سے शिव एव = ... ہی ہے

जीवंश्चेद् = اگر زندہ ہی ہے मुक्तः एव = مکت ہی ہے

= [illegible]

न तु = نہ تو कथञ्चिदपि = کسی طرح

बद्धः = بندھن میں

"न संशयः" = اس میں کوئی شک نہیں ہے

[illegible] Discipline

इत्थंनेन = اس سے   इदं = یہ

ध्वनयति = دکھلاتا ہے   दीक्षादिना   دیکھا دیکھی سے

गुरुप्रत्ययतो = گرو کی جان سے   मुक्तिः =

इदंशास्त्र = اس کی   ज्ञानात्

समाचाराद्वा = آچار سے   स्वप्रत्ययत एव इति   اپنی جان سے

= Function [illegible]

18/7 "शिवो भूत्वा शिवं यजेत" = شو ہو کر شو کی پوجا کرنی چاہئے

इति यत् उद्घोष्यते = جو [illegible]   तत्र = وہاں →

ध्यानिश्चेतासि [illegible]   → संवेदने तस्य वाति

न सावस्था न या शिवः = وہ [illegible]

इति = اس   प्रतिपादित [illegible]   शिवस्वभावस्य

उदयं यस्य = [illegible]   अन्यस्य

कस्यचित् = کسی کا   तत्सिद्धिहेतो [illegible]

मन्त्रदेवताविशेषस्य = منتر دیوتا وشیش کا

अयमेव उदयः = یہی ادے ہے   → प्रकटीभावः

या = ३. साधकस्य = [illegible] ध्यातुर = [illegible] ३

→ प्राचार्योदि : = [illegible]

इति प्रतिपादितरूपा = [illegible]

तदात्मता समापत्ति = [illegible]

= [illegible]

→ द्विवैक्यावेशा = [illegible] न तु = [illegible]

पञ्चवक्त्रादेर्य = [illegible] अतिरिक्त = [illegible] आकारस्य = [illegible]

दर्शन = [illegible]

न तु = [illegible] निश्चयमात्रेन = [illegible]

तादात्मता समापत्तिः [illegible] अपितु = [illegible]

उदयतो = [illegible] → प्रविकल्प विश्वाच्छन्दतात्मक द्विवैक्यरूपेच्छा परामर्श = [illegible]

आधिरूढस्य [illegible]

[illegible]

१. एतत = [illegible] उक्त = [illegible] भवति = [illegible]

एवमेव = [illegible] तत संवेदन = [illegible] रूपता [illegible]

तादात्म्य प्रतिपत्तिता [illegible]

विश्वशरीर = [illegible] चितानन्दघन: = [illegible]

शिव इति = [illegible] सङ्कल्पो = [illegible]

यस्य च = [illegible] प्रविकल्पदशोजीभूतत्वेन फलति = [illegible] Residue [illegible]

तस्य = [illegible] ध्येयमन्त्रदेवतादि = [illegible]

किं न = [illegible] नाम = [illegible] प्राभिमुखी = [illegible] भवति

[illegible] सर्वस्यैतस्य = [illegible] सतत = [illegible] ग्राह्य प्रथा लग्नत्वात = [illegible]

यथोक्त ग्रस्मते परमेष्ठि पादै: = [illegible]

इयमेव च = [illegible] समापत्ति: = [illegible]

[illegible] परमाद्वयरूपस्य = [illegible] ग्रमृतस्य प्राप्ति: = [illegible]

प्रत्यासिमँ स्वमते [illegible] कतिपयकाल = [illegible]

[illegible] शरीरदादर्यदायिनी [illegible] = [illegible]

प्राप्स्यदपि = [illegible] साधके = [illegible]

मरणाम् अवश्यमवाप्यत = وہ مرنا اوش پراپت کرتا ہے

इत्य एव कारा = یہی ادھر شروع ہے 'एव' कार = یہی خرض ہے میں

एवं = ایسا सर्वत्र = ہر جگہ अनेन एव आशयेन = اسی غرض سے

श्रीस्वच्छन्दे = سری سو چھند میں

स्थूलदृष्ट्य = موٹی نظر سے अमृत प्राप्ति प्रकरणे = وہ امرت پراپتی کا پرکرن ہے

"नैव च अमृतयोगेन कालमृत्युजयो भवेत्"

نہ ہی رس سے اور شو ہوگے سے (یعنی) کال مرتیو کا جے نہیں ہوتا ہے

इत्य = اس उक्त्य = کہکر उपसंहृत्य = سمیٹ کر - اس کے

तात्त्विकस्तत = واستو واقع میں प्राप्ति प्रकारः = اس پراپتی کا مرگ / نیاں وکھاتا ہیں

"अथवा परतत्त्वस्थः सर्वकालेन बाध्यते"

ہی تو ... پرتتو میں ٹھہرا ہو

= ساتھ کال سے / = بادھا نہیں ہوتی ہے / روکی

وہ کسی وقت بھی بادھا نہیں ہوتا ہے

[illegible]

[illegible] जीवन्नेव विमुक्तोऽसौ यस्येयं भावना सदा [illegible]

यः शिवं भावयेन्नित्यं न कालः कलयेत्तु तम्।

[illegible] योगी स्वच्छन्दयोगेन स्वच्छन्द~~[illegible]~~ गतिचारिणा।

[illegible] स स्वच्छन्दपदे युक्तः स्वच्छन्दसमतां व्रजेत

स्वच्छन्दश्चैव स्वच्छन्दः स्वच्छन्दो विचरेत्सदा।"

जीवन् एव = [illegible] विमुक्तोऽसौ = [illegible]

यस्येयं = [illegible] भावना सदा = [illegible]

यः = [illegible] शिवं भाव = [illegible] येत नित्यं = [illegible]

न = [illegible] कालः = [illegible] कलयेत्तु = [illegible]

योगी = [illegible] स्वच्छन्द योगेन = [illegible]

स्वच्छन्दगति चारिण = [illegible]

स = [illegible] स्वच्छन्दपदे = [illegible] युक्तः = [illegible]

स्वच्छन्दसमतां [illegible] व्रजेत = [illegible]

[illegible] =

[illegible] = [illegible] =

[illegible] =

इत्येतेन = [illegible] सहज = [illegible] सन्देशरा

[illegible] = [illegible]

सप्रपंसं = [illegible] [illegible]

पश्चादुपादिष्ट = [illegible]

प्रयमेवात्मनो = [illegible] ग्राह्यो — [illegible] = [illegible] ज्ञातं [illegible]

यद् उच्यते = [illegible]

[illegible] आत्मा ज्ञातव्य [illegible] [illegible]

इति [illegible] तत्र = [illegible]

[illegible] इदमेव = [illegible] सर्वज्ञसर्वकर्तृस्वतन्त्रत्वस्वरूपतया

[illegible] =

[illegible]

[illegible]

میں بہت سارا کام ہے =

دوسرا بھی =

اسی طرح دوسری کی جانب دیکھتے ہیں
اصول سے کیا ہے } —

یہ اسی طرح آدم اور ابلیس سو مقصد یہ کہ نہیں جانتے

جس وقت دیکھا تھا = وہ وہم ہوتا تھا

اسی طرح =

دیکھو اور کام ہے =

جو ڈر گیا اور عشق کا نام ہے =

واہ سنتی کی =

وہ اچھی لگی =

اپنی لپی لگائیں آدم کا انگوٹھا =

گالی جو اکام ہو =

لہی لہی لہی =

سنتے سکے آنکھ کی =

شو مچاتے پیر جوڑ دیتے ہیں =

دیکھی اکام ہو گئے =

اتنی جو مان ہے =　　　　بیوی =

اسی سے سدھ ہے =

سنتر ملا =

سو بعد =

جو شاید جانتے ہے ⟵

پرمانک سروت ہوہ =

اسکو جو دیتے والا ہے

سروال دیکھایا ہے =

اسی طرح دو ساتھک جاننا ہوں پرمانک بعد سے اُسی کو ۲ سروال والی شے
دیکھا دیتی ہے ۔ جو شکشا لیتر ہے ۔ جس کو نقل لگی کی آسولی اس ہے
ہے ۔

آسولی ہے ہوہ =　　　　اسمولی =

وہ دیکھا ہو =

کہاں کہ =　　　　دو شے =　　　　دماک =

السا لعش =

سال =
روز گزرے =
منٹ گئے =
اس وقت =

کار '۲۹'

Bhavuphar Contd.

39

मोक्षलक्ष्मी कराम्भोज
पात्रे विन्यस्य संस्कृताम्
निवेदयामि भगवन्
प्राणसर्वस्वदक्षिणाम् ॥ ४३॥

मोक्षलक्ष्मी = موکش لکشمی   कर = ہاتھ   کے   अम्भोज = کنول

पात्र = برتن، [illegible]   विन्यस्य = رکھ کر - قرار

یہ संस्कृताम् = یہ سنسکار کیا ہوا   مَیں निवेदयामि = نذر کرتا ہوں

भगवन् = اے بھگوان   प्राण = پران بھی

सर्वस्वद = [illegible]   स्वदक्षिणाम् = [illegible]

प्राण स्व = پران اپنے   तेषां वा = ان کو

सर्वस्वम् → प्राणवे स्वरूपे = [illegible] - [illegible] ([illegible])

तत् निवेदयामि = وہی نذر کرتا ہوں

→ मायीय = [illegible]   पारिमित्या = [illegible]

ज्ञवज्ञाभास = [illegible] ([illegible]) [illegible]   निरास = دور کر

39 [illegible] समुपलब्ध = [illegible]। सतत् सिद्ध = [illegible]

पर पारिपूर्ण्य = [illegible] ३.

[illegible] वृहिततया = [illegible] विशेषतो = [illegible]

वेद्यामि = جانتا (میں ... ہوتا ہے)

([illegible])

मोक्षलक्ष्म्या → भवत् अनुरव्य = [illegible]

परावृत्ताया = [illegible] सविद्धंवा = [illegible]

करामभासि = [illegible] → परमवीचिनिक्षेप

= [illegible]

[illegible] जातं यत् = [illegible] पात्रं = [illegible] →

पात्राणात्मकम् = [illegible]

[illegible] अविलुप्तम् अवधानं = [illegible]

[illegible] तदर्पितं = [illegible] कृत्वा = [illegible]

40 संस्कृतो = کی ہوئی سے → कृत = کیا ہوا प्रास्त्र
شاستر =

प्राचार्य संप्रदाय = گروؤں کی چلی ہوئی راہ اُپسکرام् =
پیش کش کا سامان

तदेव = وہی मायोपकल्पित = مایا سے کلپت کیا ہوا

तत् तत् = وہ وہ प्रविवेक्ष = بیچ میں داخل ہونا विच्छेदि
کاٹنا ~~کرنے والا~~ =

क्रमाक्रम चार = ترتیب اور بے ترتیب آمد چار = چال

महासामरस्य = بڑا ہم رس ہونا سا ہم آہنگی समापत्ति
آپس میں مل جانا =

प्रतिपादन = ثابت کرنا

यदेव = جو " नम: सर्यकला "

इत्यादिना = وغیرہ سے प्रक्रान्ते =
شروع کئے گئے موضوع میں

तदेव पर्यवसितम् = اسی پر ختم ہوا
= سمایا ہوا

40/

संसारवारिधे: सन्त:
परं पारं तितीर्षवे: ।
चन्द्रमौले: श्रयन्तु च्चै-
भावपूजा तरण्डकम् ॥ ४४ ॥

/ संसार वारिधे = سمسار سمندر کے   सन्त: = وسنت
परं = اپرا   पारं = پار   तितीर्षवे: =
اس پار جانا چاہتے ہیں

४० चन्द्रमौल = چندرمولی شیوجی - کو   श्रयन्तु
= آشرن کریں -
उच्चै = اونچا   भावपूजा = بھاوپوجا
तरण्डकम् = جہاز   اس بھاو پوجا کا جہاز بنا
کر وہ ساگر پار جائیں گے -

श्रयन्तु = آشرن → उपधानेन = سہارے
सेवन्ताम् = درشن کرنا چاہئے
भावपूजामयं = بھاو پوجا کا → तरण्डकं → पोतम
= جہاز

41

इत्थमीशान चरणा-
नुतेर्यत्समुपार्जितम् ।
श्रेयस्तेन जगत्कृत्स्नं
द्वेषदोषाद्विमुच्यताम् ॥ ४५ ॥

इत्थम् = اس طرح ईशान चरण = شو جی کے چرنوں کی नुते = استتی سے
यत् = जो समुपार्जितम = حاصل کیا - پایا
श्रेय: = کلیان तेन = اس کلیان سے जगत कृत्स्नं = سارا جگت
द्वेष दूषात = دویش دوش سے विमुच्यताम = چھوٹ جائے (یہ جگت دویش دوش سے - دور رہے)

नियत = مقرر दर्शन = درشن अवग्रह = درشن روک - ग्रह
समुद्धृत = اوپر اٹھایا दर्शनान्तर = ان درشنوں اس کا گرہن کرنا
निर्भत्सना = دھتکارنا खण्डन = کھنڈن
سے समद लोपात = وہ سب دوش جگت
विमुक्तमस्तु = چھوٹا ہوا ہو = یہی جگت

41 नियत दर्शन = ہمیشہ دیکھنے والا اس کو [illegible] हवा किता

सर्वोदय = سب کا اُدے विश्राम = [illegible] भूमि

भूत = بنا ہوا परतत्त्व = پرتتو اصلی [illegible]

परिखण्डनत्व = ٹکڑے کرنا [illegible] प्रमरत्वात

सर्वस्यैव = ہر ایک کا ہی [illegible] =

पर: = دوسرا प्रकार: = پرکار

तदुक्तं मया = وہ میں نے کہا ہے कृतान्ततान्तिश = [illegible]

मायेयं = یہ مایا बहुरसता = بہت رس [illegible] उपगता = [illegible]

नाना = [illegible] यथा = جیسے ते = تیرا

विभो = اے وبھو विद्याप्ये = [illegible] इव = جیسا

अनन्त भेद गहना = [illegible] नो = نہ चेद = اگر

कथं = کیسے स्यादिदम = [illegible]

न = نہ स्वभावगमेन = [illegible] केवल = [illegible]

परे = دوسرے वै = [illegible] विज्ञायत: = [illegible]

41/

कोऽपि वा = کوئی   सर्वात्मना = [illegible]

परे = [illegible]   तदुत्तरदशा = [illegible]   मत्तो = [illegible]

परे   [illegible]

परे = کوئی   सर्वतः = [illegible]

इति अद्वयद्वादशिकायाम् [illegible]

पि.   [illegible]

यत् = [illegible]   एतत्त्व = [illegible]   परिहार पूर्वक = [illegible]

तत्त्वमपि = [illegible]

ये तत् तत्त्वमेव = [illegible]   हि = [illegible]

यदस्तत्त्वमथ = [illegible]   त्वम = [illegible]

= [illegible]   = [illegible]

त = [illegible]   = [illegible]

तत्त = [illegible]   = [illegible]   = [illegible]

42

स्व स्तोत्रं गृहाण परमेश्वर विश्वसाक्षिन्
मानावमान ममतोज्झितचित्तवृत्ते।
मत्तस्त्वदङ्घ्रियुग पीठनिलीन मौले-
र्भस्मावगुण्ठिततनो र्नृकपालपाणेः॥
॥५४६॥

स्तोत्रं = [illegible] गृहाण = [illegible] परमेश्वर = [illegible]

विश्वसाक्षिन् = [illegible] मान अवमान = [illegible]

~~ममता:~~ ममता = [illegible]

[illegible] उज्झित = [illegible] चित्तवृत्ते = [illegible]

युग

मत्तः = [illegible] त्वदङ्घ्रियुग = [illegible]

[illegible] पीठ = [illegible] निलीन = [illegible]

मौले = [illegible] भस्म = [illegible]

अवगुण्ठित तनो = [illegible] नृकपाल = [illegible]

पाणे = [illegible]

[illegible]

42/ विश्वस्य साक्षी = وشو کا ساکشی یا विश्वरूपो वा = وشو روپی

अप्रामन्त्रयते = اسی کو سمجھتی ہیں جانا ہے   मानावमानयो = مان اور اپمان →

گرہن → ग्रहण अप्रग्रहणयो = گرہن اور اگرہن   निग्रहपरिग्रहयो = نیرہ اور پریرہ

اور ममतया = ممتا سے   उज्झिता = چھوڑا ہوا۔ ممتا سے رہت

चित्तवृत्तियस्य = جس کی ورتی   यस्य جس پرش کا ورتی دوشاں دور ہوں

वा = یا   चित्तवृत्तियेन = جس کا ورتی   त्यक्ता = چھوڑی ہوئی ہو

اور الیح अपेहः → पापं = پاپ کو   3. हरति इति = ہٹاتا ہے

یا अपहेकुरुदेवं = اسکار ہی   अपिहि = چھپ

तद्युगम् = وہی جوڑی → अपना वरण ज्ञान

(وہ جو جوڑا ہے) — وہ جس میں آدرن کا یا اور تیاگ کی = क्रियारूपं

तस्य पीठे = اس کی پیٹھ پر   परमशिवरूपं = پرم شو روپ سمجھا جاتا ہے

तत्र = اسی جگہ   निलीन भाव = لین ہو رہے

→ प्रशान्त कर ~~अपञ्चक कुञ्चकाने~~ = شانت ہوئے ہیں — 5. ہی کرن [illegible]

काचित = ... चित्तप्रोरवरस्य = ...

तथा = ... भस्मना = ... → कारण पञ्चक

कुञ्चुको = ... उपचय = ...

प्रोक्षण = ... परिशिष्टे = ...

भस्मना ...

→ प्रविलभूतिहेतुना ...

प्रबोध

प्रबोधभूति विभवेन ... प्रवगुण्ठित →

→ प्राच्छादिता ... = प्राच्छादिता

तनवः ... मिततया = ...

स्फुरन्तः ...

सविभावायेन = ... = ... →

पणा = ... पत = ... कपालं = ... →

कं ... → महास्वातन्त्र्य = ...

रूपम्

43/ अनवच्छिन्ने = لامحدود ब्रह्म = [illegible]

पालयति = پرورش کرتا ← गोपायतीति

→ नृकपाल = [illegible] → कर्परे = [illegible]

तत् = وہ पाणौ = [illegible] एकस्मिन् = [illegible]

उद्भूपामरीचि = [illegible] लक्षणे [illegible]

४८ मिततया = [illegible], इयत्तया = [illegible]

तुलिते = [illegible] यस्य = [illegible]

स = وہ तथोक्तः = [illegible]

43

माहृ = [illegible] पाशुपत = [illegible] उद्याने = [illegible] कश्चित = [illegible]

विश्राम्य [illegible] तापस: [illegible] चक्रे = [illegible] चित चक्रनाथ = [illegible]

[illegible] प्रभो = [illegible] भावनुतिं = [illegible]

पराम् = [illegible] — [illegible]

निरस्त: [illegible] शास्त्रार्थ = [illegible] विकल्प जाला = [illegible]

येभ्य: = [illegible] श्मशाने = [illegible] — [illegible] करवीरकाख्ये = [illegible]

इति दृष्टा = [illegible] भस्म प्रद = [illegible]

व्याख्यान वर्णित [illegible]
बा स्वरूपे [illegible]

महापाशुपा उद्याने [illegible] → भैरवणो = [illegible]

पशूनो = [illegible] पति [illegible] → प्रकलित = [illegible]

चित चक्रेश्वरात्मक: = [illegible]

तत उद्याने = [illegible] → तत ऊर्ध्वयान = [illegible]

→ सर्वातिशायिनि = [illegible] विश्रम्य [illegible] =

→ अनन्यतया = [illegible] प्रतिष्ठां प्राप्य [illegible]

अत एव = [illegible] काश्चित = [illegible]

अज्ञायमान = نہ ظاہر   पशुपरिकल्पित = جو تصور   [illegible] नियत

(209)

संज्ञा = نام   प्रवृत्ति = [illegible]

महति तपसि = [illegible] । चित्समावेशमनये =

भवः = اللہ   तापस = [illegible]

चित्चक्रनाथस्य = [illegible]

सर्व संवित् = [illegible]   निर्विभेद = [illegible]

अभिन्न = [illegible]   विश्रामभूमये = [illegible]

[[illegible]] = [illegible]

नमः = [illegible]   प्रमातृ वपुषे = [illegible]

शिवचैतन्य सिन्धवे = [illegible]

इत्यादिना = [illegible]   राजानक = راجانک   उत्पलदेव [illegible]

निर्वर्णित = [illegible]   स्वरूपस्य = [illegible]

[illegible] प्रभोः = [illegible]   श्रेयः प्रभवस्य = [illegible]   भावेन = [illegible] →

सर्वभाव ऐक्य समापत्ति = [illegible]   = [illegible]

समावेशमयेन = [illegible]   वृत्ति परा = [illegible]

चक्रे = [illegible]   इति = [illegible]   चक्रनाथ [illegible]

→ चक्रे शब्द = [illegible] चक्रपाणिनाम = [illegible]

द्योतयति = [illegible]

अदृष्ट = [illegible] विग्रह = [illegible] उद्गाते = [illegible]

मरीचि चक्र विस्तरम् [illegible]

= [illegible] = [illegible] अनुग्रह के कारणे [illegible] =

नमाम्यहं = [illegible] अहं = [illegible] गुरुक्रमम् = [illegible]

End on 20th May 1967